



भारत का राजपत्र The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 17] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 29—मई 5, 2017 (वैशाख 9, 1939)
No. 17] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 29—MAY 5, 2017 (VAISAKHA 9, 1939)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

पृष्ठ सं.	विषय-सूची	पृष्ठ सं.
भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.....	411	छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं..... *
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	355	भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)..... *
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	3	भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश..... *
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	397	भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं..... 953
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.....	*	भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस..... *
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.....	*	भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं..... *
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.....	*	भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं..... 51
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).....	*	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस..... 759
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को		भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूर्ण..... *

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.		Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	411	by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	355	PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence.....	3	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	397	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	953
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	51
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	759
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and		PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I— खण्ड 1**[PART I—SECTION 1]**

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 13 अप्रैल 2017

सं. 46-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. एस श्रीधर राजा
सहायक कमांडेंट
02. यू. लक्ष्मण,
सीनियर कमांडो
03. एम. सूर्या तेजा
जूनियर कमांडो
04. जे. रामबाबू,
जूनियर कमांडो
05. बी. नागा कार्तिक,
उप-निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस अधीक्षक/विशेष कार्य अधिकारी, विशाखापट्टनम ग्रामीण की इस विश्वसनीय सूचना पर कि सीपीआई (माओवादी) के 15-20 सशस्त्र काडर हिंसा करने की योजना से कोय्यूरु मंडल, विशाखापट्टनम जिले के मम्पा पुलिस थाने की सीमा के अंतर्गत इडुलाबंडा, गोरैलागौडी और पालासमुद्रम गांवों के इलाके में घूम रहे हैं, ग्रेहाउंड की तीन हमला इकाइयां (असॉल्ट यूनिट) माओवादियों को खोज निकालने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए तैनात की गई।

जानकारी देने के बाद, ग्रेहाउंड की असॉल्ट यूनिटों (जिसमें उपरोक्त कर्मी और अन्य शामिल थे) को दिनांक 03.05.2016 को जंगलाटोटा गांव की बाहरी सीमा पर छोड़ दिया गया। उन्होंने रात्रि में, बारूदी सुरंगों और सशस्त्र उग्रवादियों से भरे-पड़े घने जंगलों के बीच दुर्गम इलाके में चढ़ाई की। दिनांक 04.05.2016 को 1800 बजे श्री एस. श्रीधर राजा, सहायक कमांडेंट के अधीन यूनिट ने माम्पा पुलिस थाने की सीमा के अधीन पालासमुद्रम गांव के उत्तर-पूर्व में माओवादियों के छिपने की जगह की पहचान की। जब यूनिट के कार्मिक इस बात की पुष्टि के लिए क्षेत्र की निगरानी कर रहे थे, तभी माओवादियों के संतरी ने पुलिस की आवाजाही को भांप लिया तथा पुलिस कर्मियों की हत्या की मंशा से दल पर गोलियां चलाने लगा। श्री एस श्रीधर ने दल के सदस्यों का गोलियों से बचने तथा माओवादी शिविर को नष्ट करने के संबंध में मार्ग-दर्शन किया। माओवादियों ने पुलिस की आत्मसमर्पण करने की पुकार की परवाह नहीं की तथा एके-47, एसएलआर, इन्सास, आदि जैसे स्वचालित हथियारों से पुलिस पार्टी पर गोलियां चलाना जारी रखा। गोलियों और आईईडी का मुकाबला करते हुए उक्त पुलिस कर्मियों ने अनुकरणी प्रतिबद्धता के साथ अपने दल का नेतृत्व किया तथा माओवादियों को गिरफ्तार करने के लिए आगे बढ़े। उक्त कर्मी नीची जमीन से तीव्र चढ़ाई तक घने जंगलों के बीच आगे बढ़ने लगे तथा एक गहरे नाले से होकर माओवादियों का

पीछा किया, जबकि यूनिट दल के दूसरे सदस्य कट-ऑफ दलों में विभाजित हो गए। उपरोक्त पुलिस कार्मिकों द्वारा आत्मरक्षा में चलाई गई गोलियों से 02 पुरुष और 01 महिला दुर्दांत माओवादियों की मृत्यु हो गई और इसके परिणामस्वरूप एके-47 राइफल-01, एसएलआर हथियार-02, पिस्तौल-01, मैगजीन-04, विभिन्न गोलाबारूदों के 186 राउंड, लक्षित आईईडी, डे बॉइनाक्यूलर-01 आदि बरामद किए गए। मृतकों की पहचान 1) आजाद उर्फ गोपाल एसीएम (एड हॉक डीसीएम), 2) आनंद एसीएम और 3) कमला एसीएम के रूप में हुई।

अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में अदम्य साहस और सूझ-बूझ की इस कार्रवाई ने तथा कठिन क्षेत्र में प्रभावी रणनीतियां अमल में लाए जाने के कारण कुख्यात एओबीएस जेडसी माओवादियों को जबरदस्त झटका लगा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री एस. श्रीधर राजा, सहायक कमांडेंट, यू. लक्ष्मण, सीनियर कमांडो, एम. सूर्या तेजा, जूनियर कमांडो, जे. रामबाबू, जूनियर कमांडो और बी. नागा कार्तिक, उप-निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.05.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 47-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. के. आनंद रेड्डी,
उप पुलिस अधीक्षक
2. एम. नवीन कुमार,
जूनियर कमांडो
3. के. उदय कुमार,
जूनियर कमांडो
4. जी. महेश्वर राव,
जूनियर कमांडो

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस अधीक्षक पूर्वी गोदावरी जिला और श्री के. आनंद रेड्डी, उप पुलिस अधीक्षक, एसआईबी को चिटूर पुलिस थाना, पूर्वी गोदावरी जिला के अधीन माल्लमपेटा गांव के निकट जंगलों में अपराध को अंजाम देने के लिए लगभग 20 सबरी एरिया कमेटी माओवादियों के एकत्र होने की विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हुई। श्री जी. राजू, डीएसी और श्री जी. महेश्वर राव, जे.सी. के नेतृत्व वाली ग्रेहाउंड हमला इकाई को दिनांक 27.12.2015 को माओवादियों को खोजने तथा उन्हें पकड़ने के लिए तैनात किया गया। निकटतम एओपी से 19 किमी. की दूरी पर अभियान वाली जगह में यह क्षेत्र घनी कंटीली झाड़ियों से आच्छादित, तीव्र चढ़ाई, गहरी घाटियाँ और नालाओं वाला कठिन क्षेत्र था और यह माओवादियों से सहानुभूति रखने वालों के जबरदस्त समर्थन से माओवादी काडरों के लिए एक मजबूत गढ़ था।

दिनांक 28.12.2015 को 1400 बजे ग्रेहाउंड दल ने अपने ठिकाने से आधा किमी. की दूरी पर घातक हथियारों से लैस ऑलिव-ग्रीन वर्दीधारी लगभग 20 माओवादियों के एक दल को देखा। यूनिट प्रभारी जी. राजू, डीएसी और के. आनंद रेड्डी, उप पुलिस अधीक्षक, एसआईबी उन्हें या तो गिरफ्तार करने या मार गिराने के संकल्प के साथ इकाई को 3 दलों में विभाजित करते हुए योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़े तथा माओवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। माओवादियों ने पुलिस को देख लिया तथा एके-47, इन्सास, एलएमजी आदि जैसे स्वचालित हथियारों के साथ अंधाधुंध गोलियां चलाने लगे।

श्री के. आनंद रेड्डी, उप-पुलिस अधीक्षक मुख्य गोलीबारी दल की अगुवाई कर रहे थे और उनके साथ सर्व/श्री एम. नवीन कुमार, जे.सी., के उदय कुमार, जे.सी. एवं जी. महेश्वर राव, जे.सी. हो लिए। आत्म-रक्षा के अतिरिक्त उन्होंने गोलियों के रूप में प्रभावी प्रत्युत्तर देते हुए अदम्य साहस एवं अनुकरणीय प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया और अपने दल का नेतृत्व किया। लगभग 10 मिनट तक दोनों तरफ से गोलियां चलती रहीं। माओवादी पुलिस दल की जवाबी कार्रवाई का सामना नहीं कर सके और घने जंगलों में भाग खड़े हुए। उपरोक्त पुलिस कार्रवायों की समय पर जवाबी और साहसिक कार्रवाई से दूसरे कमांडो की जानों की रक्षा हुई। गोलीबारी समाप्त होने के बाद, उपरोक्त चारो पुलिस कार्रवायों और उनके दल ने क्षेत्र की तलाशी ली और कमला चुक्का नागेश, सेक्रेट्री, सबरी एरिया कमेटी का शव तथा गोलाबारूद सहित एक पिस्तौल बरामद की। मृतक अत्यन्त कुख्यात था जो कम से कम 15 निर्दोष लोगों की हत्या सहित हिंसा के 30 मामलों में संलिप्त था और उसने अनेक अवसरों पर सुरक्षा कर्मियों पर हमले का प्रयास भी किया था।

उपरोक्त पुलिस कार्रवायों ने प्रारंभ में माओवादियों की एकाएक गोलीबारी से घिरे होने के बावजूद माओवादियों द्वारा की गई गोलियों की बरसात का डटकर मुकाबला किया। इन पुलिस कार्रवायों ने अनुकरणीय रूप से योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़कर और गोलियां चलाते हुए जवाबी कार्रवाई की जिसके परिणामस्वरूप एक (01) दुर्दांत माओवादी को मार गिराया गया और इससे यूनिट के अन्य कमांडो के प्राणों की रक्षा भी हुई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री के. आनंद रेड्डी, उप पुलिस अधीक्षक, एम. नवीन कुमार, जूनियर कमांडो, के. उदय कुमार, जूनियर कमांडो और जी. महेश्वर राव, जूनियर कमांडो ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.12.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 48-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. कोन्द्रथी श्रीनिवास राव,
एआरपीसी
2. थोटापल्ली सूर्य प्रकाश,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री के. श्रीनिवास राव, एआरपीसी और श्री टी. सूर्य प्रकाश, कांस्टेबल गुंटूर जिला पुलिस दल के सदस्य हैं ने सूचना एकत्र करने में अहम भूमिका निभायी। श्री थोटापल्ली सूर्य प्रकाश ने माओवादी दल के ठहरने की जगह तक दल का नेतृत्व किया।

नल्ला माला फॉरेस्ट कमेटी काडर की सूचना प्राप्त होने पर, येर्रागोंडलापालेम पुलिस थाना, प्रकाशम जिले की सीमा के अंतर्गत पेलुटला के जंगलों में तलाशी अभियान की योजना बनाई गई। जब दल दिनांक 19.06.2014 को मुरारी कुरुवा पहुंचा, तब प्रभारी अधिकारी ने ऑलिव-ग्रीन कपड़े पहने कुछ सशस्त्र दलम सदस्यों को देखा। अधिकारी ने तत्काल कार्रवाई के लिए दल को 3 समूहों में विभाजित कर दिया। शत्रु के निकट पहुंचने के क्रम में, शत्रु ने पुलिस दल को देख लिया तथा गोलियां चलाना आरंभ कर दिया। प्रभारी अधिकारी ने उन्हें आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। परन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की तथा स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध गोलियां चलाना जारी रखा। श्री कोन्द्रथी श्रीनिवास राव एवं थोटापल्ली सूर्य प्रकाश ने क्षेत्र संबंधी सभी रणनीतियों का इस्तेमाल करते हुए तथा अपनी जानों की परवाह न करते हुए जवाबी कार्रवाई की। इस घटना में एक पुरुष माओवादी, जो पुलिस दल पर गोलियां चला रहा था, मारा गया। जब अन्य माओवादियों ने पुलिस दल पर गोलियां चलाना आरंभ कर दिया, तब इन दोनों पुलिस कार्रवायों ने अपनी जानों को जोखिम में डालकर बेहद साहसिक तरीके से खुली जगह में प्रवेश कर गए तथा माओवादियों पर गोलियां चलाई। गोलीबारी समाप्त होने के बाद उन्हें उस स्थान पर 3 शव मिले और उन्होंने प्रकाशम जिले के येर्रागोंडलापालेम पुलिस थाने के अपराध सं. 61/2014 में 1-एके-47 राइफल, 1- 7.62 एसएलआर, 1- .303 राइफल, 1- 30 मिमी. कारबाइन भी बरामद की।

उपरोक्त दोनों पुलिस कार्मियों की साहसिक कार्रवाई के कारण इलाके के माओवादी दल को निष्क्रिय कर दिया गया तथा इनके द्वारा जोखिम लेने तथा सफलतापूर्वक साहसिक अभियान चलाने से माओवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी से पुलिस दल की रक्षा हुई।

इस मुठभेड़ में सर्वश्री कोन्द्रथी श्रीनिवास राव, एआरपीसी और थोटापल्ली सूर्य प्रकाश, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.06.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 49-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री पी.एस.जी. पवन कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 17.06.2015 को सुरक्षा बलों और महत्वपूर्ण सरकारी प्रतिष्ठानों को निशाना बनाए जाने के लिए गोबरपाड़ा वन क्षेत्र में सीपीआई माओवादियों द्वारा बैठक किए जाने की योजना बनाए जाने के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। माओवादियों का मुकाबला करने के लिए जिला विशेष दलों को शामिल करते हुए माओवादी-रोधी/तलाशी अभियान की योजना बनाई गई। उसी दिन 1300 बजे यूनिटों को आकस्मिक योजना के अतिरिक्त अभियान के लक्ष्य और उद्देश्य की जानकारी दी गई। तत्पश्चात् टुकड़ियां कठिन क्षेत्र और भारी वर्षा का सफलतापूर्वक सामना करती हुई लक्षित ठिकाने पर जा पहुंची जो जंगल के काफी अन्दर स्थित था। अभियान दलों ने जंगलों में तीन रातें गुजार दीं।

दिनांक 20.06.2015 की सुबह, 24 कमांडो वाला जिला विशेष दल (सीएपी-11), जिसका नेतृत्व पीसी 409- पीएसजी पवन कुमार कर रहे थे, भारी वर्षा और कम दृश्यता के बीच लक्षित क्षेत्र के निकट पहुंच गया। लगभग 0800 बजे पुलिस दलों पर अचानक गोलियां चलने लगीं जिसके कारण तत्काल बचाव की कार्रवाई आवश्यक हो गई। गोलियां अंधाधुंध और बिना रुके चल रही थी जिससे पुलिस दलों को भारी क्षति की आशंका होने लगी। इस मौके पर, पीसी 409 पीएसजी पवन कुमार ने अनुकरणीय साहस और निःस्वार्थ भावना का परिचय देते हुए और रेंगते हुए घातक क्षेत्र से हट गए और माओवादियों पर जवाबी गोलियां चलाईं। उनके बहादुरी भरे इस कार्य से अन्य लोग भी ऐसा करने के लिए प्रेरित हुए और इससे माओवादियों की पकड़ भी सफलतापूर्वक ढीली हो गई। दल के अन्य सदस्यों ने उनका बखूबी साथ दिया और वे बीस मिनट से अधिक समय तक चली लंबी गोलीबारी के दौरान शत्रु के हमले को विफल करने में सफल रहे। पुलिस दलों की जबरदस्त जवाबी कार्रवाई को झेल सकने में असमर्थ होता देख माओवादी गोलीबारी के स्थल से भाग खड़े हुए। पीसी 409- पीएसजी पवन कुमार और दल की निर्भीक कार्रवाई के कारण बिना किसी क्षति के, जो हमले के समय आसन्न दिखा रही थी, शत्रु के खतरे को सफलतापूर्वक विफल कर दिया गया।

घटना के पश्चात् हुई तलाशी के दौरान एक .303 हथियार और ग्रेनेड के साथ वर्दीधारी एक अज्ञात माओवादी का शव (जिसकी पहचान बाद में सूर्यम, गुम्मा एरिया कमेटी, एमकेबी डिवीजन, एओबी एसजेडसी के रूप में हुई) बरामद किया गया। क्षेत्र की और तलाशी से 10 किट बैग, 4 हैंड ग्रेनेड, 2 मोटरोला वॉकी-टॉकी मिली। हथियारों और गोलाबारूद के अतिरिक्त, भारी मात्रा में दवाइयां, पानी की कैन, वर्दी, मैगजीन पाउच आदि भी बरामद किए गए। इन बरामदगियों से गुम्मा एरिया कमेटी, एमवीकेबी डिवीजन, एओबी एसजेडसी के माओवादी नेताओं की उपस्थिति सिद्ध हो गई। तत्पश्चात् दलों को छोटे-छोटे समूहों में बाहर निकलने के निदेश दिए गए ताकि वापसी के दौरान होने वाले किसी भी हमले से बचा जा सके।

अन्य जवानों के साथ-साथ श्री पी.एस.जी. पवन कुमार, कांस्टेबल ने माओवादियों की लगातार गोलीबारी का मुकाबला करने में प्रतिबद्धता और बहादुरी के उच्च स्तर का परिचय दिया। उसने खतरनाक परिस्थितियों में तीक्ष्ण रणनीतिक कौशल और अनुकरणीय टीम भावना का प्रदर्शन किया। उनकी कार्रवाई से शत्रु का हमला झेलने के लिए न केवल दल ही प्रेरित हुआ बल्कि इससे प्रतिकूल परिस्थितियां भी बिना किसी क्षति के गौरव के क्षण में परिवर्तित हो गईं।

इस मुठभेड़ में श्री पी.एस.जी. पवन कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.06.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 50-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रातुल नुनीसा,
कांस्टेबल

(मरणोपरान्त)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05.06.2014 को सशस्त्र उग्रवादियों की आवाजाही के बारे में गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए श्री नित्यानंद गोस्वामी, एपीएस, तत्कालीन पुलिस अधीक्षक, हमरेन ने 18 अन्य कार्मिकों के साथ रूमफुम क्षेत्र नामक एक पहाड़ी और जंगल वाले गांव में छापा और तलाशी अभियान चलाने की योजना बनाई। पुलिस दल को तीन समूहों में विभाजित किया गया- पहले दो समूहों ने तलाशी और छापा अभियान चलाया जबकि अंतिम समूह, जिसमें नामिती सहित श्री नित्यानंद गोस्वामी स्वयं तथा 5 (पांच) कार्मिकों वाली उनकी सुरक्षा टीम थी, ने खुद को उतरने वाली जगह पर तैनात किया। भारी हथियारों से लैस उग्रवादियों और तलाशी दलों, जो श्री गोस्वामी वाले दल से लगभग तीन किलोमीटर दूर थे, के बीच मुठभेड़ आरंभ हो गई और यह मुठभेड़ लगभग दो घंटे तक जारी रही। इसके पश्चात् उग्रवादियों और श्री गोस्वामी के नेतृत्व वाले दल के बीच एक दूसरी मुठभेड़ हुई। इसके कुछ समय बाद श्री गोस्वामी और उनका दल वापस होने लगा। अपनी उम्र (59 वर्ष) के कारण श्री गोस्वामी की चपलता मंद होने के चलते उनके लिए योजनाबद्ध तरीके से तेजी से इधर-उधर घूमना और वापस होना भी कठिन था। दल के अन्य सदस्यों ने इस तथ्य पर गौर नहीं किया और अपने रक्षक की उम्र और सामर्थ्य पर ध्यान दिए बिना तेजी से वापस होने लगे। श्री रातुल नुनीसा, कांस्टेबल भी औरों की तरह ऐसा कर सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। पीछे की तरफ से उग्रवादियों द्वारा की जा रही निरंतर गोलीबारी से होने वाले गंभीर खतरे के बावजूद, रातुल नुनीसा कांस्टेबल अपने आपको उग्रवादियों और अपने रक्षक के बीच ले आए। जब उग्रवादियों द्वारा श्री गोस्वामी पर ताबड़तोड़ गोलीबारी की जाने लगी, तब वे केवल रातुल नुनीसा कांस्टेबल ही थे, जिन्होंने अपने रक्षक की कम चपलता के कारण अपनी जान को होने वाले गंभीर खतरे को नजरअंदाज करते हुए उग्रवादियों का बहादुरी से मुकाबला किया और श्री गोस्वामी को बचाने का प्रयास किया। वे इसके बाद होने वाली भीषण गोलीबारी की समूची अवधि के दौरान अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए धैर्य और अदम्य साहस का परिचय देते हुए अडिग रहे। उन्होंने अकेले लगभग आधे घंटे तक उग्रवादियों के पूरे दल को श्री गोस्वामी की तरफ बढ़ने से रोके रखा। श्री गोस्वामी की रक्षा के लिए लगभग आधे घंटे अकेले ही लगातार गोलियां चलाने के बाद उनका गोलाबारूद समाप्त हो गया और उनकी राइफल उग्रवादियों की गोलियां लगने के कारण बेकार हो गई। उनके पास यह विकल्प था कि वे अपने रक्षक के प्राणों की रक्षा को बिल्कुल दरकिनार करते हुए उस स्थान से सुरक्षित निकल जाएं। लेकिन वे उग्रवादियों की ताबड़तोड़ गोलियों के बीच अपने रक्षक को छोड़कर वापस नहीं हुए। श्री गोस्वामी को बचाने के लिए कोई विकल्प नहीं बचा देख वे श्री गोस्वामी उनकी रक्षा के लिए कवच की भांति शरीर को ढाल बनाकर गोलियों से उनकी रक्षा करने लगे। उग्रवादियों की गोलियों से श्री गोस्वामी की रक्षा करने के अपने साहसिक प्रयास में उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी। श्री गोस्वामी के साथ वाले अन्य सभी पांच कार्मिकों में से केवल वे ही एक ऐसे कार्मिक थे, जिन्होंने अनुकरणीय साहस और वफादारी का परिचय दिया और अंतिम गोली एवं सांस तक अपने रक्षक को बचाने का प्रयास किया।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री रातुल नुनीसा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.06.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 51-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सुनील कुमार, आईपीएस,
पुलिस अधीक्षक
2. बीरधन दलै,
उप निरीक्षक
3. पिंगु दास,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 27.09.2014 को श्री सुनील कुमार, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, कोकराझार को काचुगांव पुलिस थाना के अंतर्गत रिपू आरक्षित वन क्षेत्र में एसएससी-इन-सी बी. बिदई की कमान में भारी मात्रा में हथियारों से लैस 30-40 एनडीएफबी काडरों की आवाजाही के बारे में गुप्त सूचना प्राप्त हुई। इन काडरों का मुख्य उद्देश्य सुरक्षा बलों पर हमला करना तथा लोगों के बीच आतंक उत्पन्न करना था। श्री सुनील कुमार आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, कोकराझार ने इस सूचना की आगे छानबीन की और पता लगाया कि एनडीएफबी काडर पुलिस/सुरक्षा बलों पर हमला करने की मंशा के साथ गोसाईंगांव क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए हेल नदी को पार करेंगे। इस पर, श्री सुनील कुमार, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, कोकराझार की समय कमान में पुलिस और सेना ने संयुक्त अभियान छेड़ा और कठिन क्षेत्र एवं प्रतिकूल मौसम में हेल नदी के साथ-साथ उबड़-खाबड़ रास्तों पर रात भर चलते रहे। दिनांक 28.09.2014 को लगभग सुबह 8 बजे श्री सुनील कुमार, एबीएसआई बीरधन दलै और पीएसओ एबीसी पिंगु दास ने भारी मात्रा में हथियारों से लैस एनडीएफबी काडरों के एक समूह को देखा। पुलिस दिखाई देने पर एनडीएफबी आतंकवादियों ने पुलिस अधीक्षक श्री सुनील कुमार और अन्य सुरक्षा कर्मियों को मारने के इरादे से पुलिस की ओर अपने स्वचालित परिष्कृत हथियारों से अंधाधुंध गोलियां चलानी आरंभ कर दी। श्री सुनील कुमार ने तत्काल पोजीशन ली और आतंकवादियों की गोलियों का जोखिम उठाते हुए अपने को अनावृत कर गोलियां दागनी आरंभ कर दी। उनकी निर्भीक और तीव्र कार्यवाही से अन्य पुलिस एवं सेना कार्मिक प्रेरित हुए और वे भी आतंकवादियों पर गोलियां चलाने लगे। श्री सुनील कुमार और एबीएसआई बीरधन दलै के साथ-साथ एबीसी पिंगु दास ने उत्कृष्ट साहस का परिचय देते हुए तथा अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह किए बिना भारी गोलीबारी के बीच अपनी-अपनी पोजीशनों में तुरंत पुनः तालमेल बैठाया और उग्रवादियों को घेर लिया तथा उन्हें भागने से रोक दिया। इसके कारण भीषण मुठभेड़ हुई जो लगभग एक घंटे तक चली। कुछ उग्रवादियों ने हरियाली की आड़ लेकर भागने की कोशिश की लेकिन श्री सुनील कुमार और उनके दल ने भाग रहे उग्रवादियों का पीछा किया। आतंकवादियों की तरफ से गोलीबारी रुकने के बाद पूरे इलाके की अच्छी तरह तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान एक ए के-56 राइफल, दो 7.65 मिमी. पिस्तौल, एक 9 मिमी. पिस्तौल, तीन हेंड ग्रेनेड, गोलाबारूद के 26 जिंदा राउंड, 04 मोबाइल सेट और अनेक आपत्तिजनक दस्तावेजों सहित एनडीएफबी (एस) के 4 आतंकवादियों के गोलियों से छलनी शव बरामद हुए। बाद में एनडीएफबी (एस) के इन आतंकवादियों की पहचान (1) नायसांग गोयारी उर्फ बिक्खांग (22 वर्ष) पुत्र छबीराम गोयारी, गांव-थाइसोगुरी, पुलिस थाना कोचुगांव, जिला कोकराझार (2) महान बासुमतारी (20 वर्ष), पुत्र कबिराम बासुमतारी, गांव-पदमाबिल, पुलिस थाना- सरफनगुड़ी, जिला- कोकराझार, (3) दांसांग बासुमतारी (20 वर्ष), पुत्र रानित बासुमतारी, गांव- पदमाबिल, पुलिस थाना- सरफनगुड़ी, जिला कोकराझार और (4) लोहारु ब्रह्मा (20 वर्ष), पुत्र दंडेश्वर ब्रह्मा, गांव- कापूरगांव, पुलिस थाना- सरफनगुड़ी, जिला- कोकराझार के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुनील कुमार, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, बीरधन दलै, उप निरीक्षक और पिंगु दास, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.09.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 52-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. ओमप्रकाश सेन,
प्लाटून कमांडर
2. सीताराम कुंजम, (मरणोपरान्त)
कांस्टेबल
3. पायकू पोयामी (मरणोपरान्त)
कांस्टेबल
4. मोतीराम तेलम, (मरणोपरान्त)
सहायक कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

महानिरीक्षक एसआईबी, पुलिस मुख्यालय, रायपुर और महानिरीक्षक बस्तर रेंज जगदलपुर कार्यालय से पुलिस थाना मिरटूर, जिला बीजापुर के अंतर्गत जप्पेमारका गांव में कुछ महत्वपूर्ण नक्सली नेताओं चंद्रन्ना, कमलू और हेमला मासा सहित भारी संख्या में नक्सली काडरों की उपस्थिति के बारे में प्राप्त विशेष खुफिया जानकारी के आधार पर, दिनांक 16.05.2015 को लगभग 03.35 बजे श्री के.एल. ध्रुव, पुलिस अधीक्षक, बीजापुर की समग्र कमान में एक संयुक्त दल श्री ओमप्रकाश सेन, प्लाटून कमांडर के नेतृत्व वाले 42 सदस्यीय एसटीएफ टीएफ-16, हेड कांस्टेबल संतोष बाघेल के नेतृत्व में 47 जवानों वाला टीएफ-13, उप निरीक्षक श्री संतोष गावड़े और प्रदीप बिसेन के नेतृत्व में डीईएफ के 60 जवान-कुल 149 कार्मिक) सुरक्षित केन्द्र बीजापुर से रवाना हुआ।

योजना के अनुसार, जेवराम, बारदेला, तुगली पोटनार और हालुरगांव के इलाकों में खोजबीन करते हुए रात्रि में उन्होंने गांव हालुर और पामरा में विश्राम किया। अभियान दल दिनांक 17.05.2015 की सुबह लगभग 08.00 बजे अपने विश्राम स्थल से रवाना हुआ। जब पुलिस दल गांव जप्पेमारका के पहाड़ी क्षेत्र के निकट क्रासिंग की तरफ बढ़ रहा था, तब सीपीआई (माओवादी) काडरों ने पुलिस दल पर हमला बोल दिया। नक्सलियों ने पुलिस कर्मियों को मार देने तथा उनके हथियारों को लूट लेने के इरादे के साथ दल पर अंधाधुंध गोलियां दागनी आरंभ कर दी। यद्यपि नक्सलियों ने पुलिस दल पर अचानक हमला बोला था, लेकिन इसके प्रत्युत्तर में श्री ओमप्रकाश सेन, पी.सी., कांस्टेबल सीताराम कुंजम, कांस्टेबल पायकू पोयामी और मोतीराम तेलम ने अपने दल के साथ आत्मरक्षा हेतु गोलियां चलानी आरंभ कर दी और नक्सलियों से कहा गया कि वे आत्मसमर्पण कर दें लेकिन वे पुलिस दलों पर लगातार गोलियां चलाते रहे। इस गोलीबारी के दौरान कांस्टेबल सीताराम कुंजम, कांस्टेबल पायकू पोयामी और कांस्टेबल मोतीराम तेलम को गोलियां लग गईं। घायल होने के बावजूद सभी तीनों कांस्टेबलों ने पी.सी. ओमप्रकाश सेन तथा अन्य पुलिस कार्मिकों के साथ बहादुरी के साथ नक्सलियों से लोहा लिया तथा उन्हें वापस जाने के लिए मजबूर कर दिया। नक्सली घने जंगलों और ऊबड़-खाबड़ जमीन का लाभ उठाकर जंगल में भाग गए। गोलीबारी के पश्चात् घटना-स्थल की अच्छी प्रकार से तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान, एके-47 की 2 मैगजीन (एक क्षतिग्रस्त), 27 जिंदा कारतूस, 04 खाली राउंड, 01 बेनट, पाउच सहित 09 यूबीजीएल ग्रेनेड, 2 मोबाइल, एक 12 बोर गन तथा 31 जिंदा राउंड सहित एक 12 बोर गन, एक लक्षित बम, एक रेडियो, एक कैलकुलेटर, एक पाउच, नकद 1,69,000/- रु., नक्सली साहित्य तथा अन्य नक्सल संबंधी वस्तुओं सहित अज्ञात पुरुष नक्सलियों के दो शव बरामद हुए।

इस कार्रवाई में, संकट की घड़ी में प्लाटून कमांडर श्री ओमप्रकाश सेन ने अपनी टुकड़ियों का अनुकरणीय नेतृत्व किया। जब नक्सलियों ने उनके दल पर हमला कर दिया था, तब उन्होंने जबरदस्त सूझ-बूझ और उत्कृष्ट रणनीतिक कौशल का परिचय दिया। पी.सी. श्री ओमप्रकाश सेन के अपनी जान की परवाह किए बिना मुकाबला किया। उन्होंने अपने कुशल मार्गदर्शन एवं अगुवाई में अपने जवानों को एक दूसरे की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया और पुलिस कार्मिक इस बात को भली-भांति जानते हुए कि उनका प्रत्येक कदम जानलेवा सिद्ध हो सकता है, नक्सलियों के हमलों का मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ते रहे। राष्ट्र की सेवा में अपनी जानों की चिंता किए बिना पी.सी. श्री ओमप्रकाश सेन, स्वर्गीय कांस्टेबल सीताराम कुंजम, स्वर्गीय सहायक कांस्टेबल पायकू पोयामी और सहायक कांस्टेबल मोतीराम तेलम ने अनुकरणीय साहस, जांबाज प्रयास और साहसिक कार्रवाई से छत्तीसगढ़ पुलिस का सिर ऊंचा कर दिया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री ओमप्रकाश सेन, प्लाटून कमांडर, स्व. सीताराम कुंजम, कांस्टेबल, स्व. पायकू पोयामी, कांस्टेबल और स्व. मोतीराम तेलम, सहायक कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.05.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 53-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- | | |
|--------------------|--------------|
| 01. पंकज सूर्यवंशी | (मरणोपरान्त) |
| कांस्टेबल | |
| 02. रमेश कुमार नाग | |
| कांस्टेबल | |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30 मई, 2014 को नारायणपुर जिले के पुलिस अधीक्षक के मार्ग-दर्शन में छोटे थोंडेबेडा आदेर वन क्षेत्र में नक्सल-रोधी अभियान चलाया गया। अभियान दल का गठन डी.ई.एफ. और सी.ए.एफ. कार्मिकों, दोनों को सम्मिलित करते हुए किया गया था और इसका नेतृत्व उप निरीक्षक प्रशांत नाग कर रहे थे। लगभग 40 से 45 वर्दीधारी सशस्त्र नक्सलियों, जो पुलिस दल के लिए पूर्व-नियोजित घात लगाकर बैठे हुए थे, ने पुलिस कार्मिकों पर जवानों को मारने तथा उनके हथियारों को लूटने के इरादे से अंधाधुंध गोलियां चलानी आरंभ कर दी।

पुलिस कार्मिकों ने अपनी पहचान का खुलासा किया और नक्सलियों को अपने-आप आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। बार-बार दी गई चेतावनी के बावजूद, नक्सलियों ने पुलिस कर्मियों पर अंधाधुंध गोलियां चलाना जारी रखा। पुलिस दल के कमांडर ने नक्सलियों की घेराबंदी करने तथा आत्म-रक्षा में गोलियां भी चलाने के बारे में योजनाबद्ध तरीके से काम करने के संबंध में अपने जवानों को अनुदेश दिए। पुलिस दल ने नक्सलियों का बहादुरीपूर्वक मुकाबला किया और उन्हें वापस होने पर विवश कर दिया। इस गोलीबारी के दौरान कांस्टेबल पंकज सूर्यवंशी और रमेश कुमार नाग को गोलियां लग गईं। परन्तु दोनों कांस्टेबलों ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और हथियारों से लैस नक्सलियों से मुकाबला किया, अपने दल के जवानों की रक्षा की और नक्सलियों को वापस जाने पर मजबूर कर दिया। लगभग 45 मिनट के बाद, नक्सली घनी झाड़ियों और दुर्गम भू-भाग का लाभ उठाकर पास के जंगलों में भाग गए। घायल कांस्टेबल को उपचार हेतु नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। गोलीबारी के पश्चात घटना-स्थल की तलाशी ली गई और वहां से नक्सलियों द्वारा चलाए गए 7.62 एसएलआर राउंड के 05 खाली खोखे बरामद हुए। घटना स्थल से यह स्पष्ट था कि नक्सलियों को अपने साथ अपने दल के घायल सदस्यों को लेकर वहां से भाग जाने के लिए मजबूर किया गया था। बाद में, कांस्टेबल पंकज सूर्यवंशी की मृत्यु हो गई और राष्ट्र की सेवा में उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

सामान्य रूप से पुलिस कार्मिकों तथा स्वर्गीय कांस्टेबल पंकज सूर्यवंशी और घायल कांस्टेबल रमेश कुमार नाग द्वारा प्रदर्शित प्रतिबद्धता और असाधारण साहस राष्ट्र की सेवा में पुलिस बल के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

स्वर्गीय पंकज सूर्यवंशी और कांस्टेबल रमेश कुमार नाग द्वारा प्रदर्शित उत्कृष्ट शौर्यपूर्ण कार्रवाई और बहादुरी से न केवल इस अभियान में शामिल कई अन्य पुलिस कार्मिकों के प्राणों की रक्षा हुई, बल्कि इससे उस क्षेत्र में राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों में संलिप्त नक्सलियों को भी करारा झटका लगा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री स्वर्गीय पंकज सूर्यवंशी, कांस्टेबल और रमेश कुमार नाग, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.05.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 54-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री चाणक्य नाग,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

नक्सलियों द्वारा मनाए गए पी.एल.जी.ए. सप्ताह तथा सवनार, कुरचोली, मुंगा आदि सहित पुलिस थाना गंगलूर के आम इलाकों में बढ़ती नक्सली गतिविधियों के मद्देनजर डी.ई.एफ., बीजापुर के निरीक्षक चाणक्य नाग की कमान में डी.ई.एफ. और एस.टी.एफ. के एक संयुक्त दल को दिनांक 07.12.2014 को गश्त और तलाशी हेतु भेजा गया।

दिनांक 08.12.2014 को, जब लगभग 17.00 बजे दल कुरचोली से मुंगा जा रहा था, तब पहले से योजना बनाकर घात लगाकर बैठे नक्सलियों ने बल पर अंधाधुंध भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। पुलिस कार्मिकों ने तत्काल पोजीशन ली और नक्सलियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने मारने और हथियारों को लूटने के लिए गोलियां चलानी और तेज कर दी। अपने जवानों को गंभीर खतरे को भांपते हुए निरीक्षक चाणक्य नाग ने जबरदस्त जवाबी कार्रवाई करने का एक निर्भीक और साहसिक निर्णय लिया। अपनी जान को खतरे में डालते हुए, वे नक्सली पोजीशन पर गोलीबारी करते हुए आगे बढ़े। गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाते हुए, उन्होंने नक्सलियों की भारी गोलीबारी को दरकिनार करते हुए अपनी टुकड़ी का बहादुरी से नेतृत्व किया। उनके साथ कुछ जवान भी आगे बढ़े और उन्होंने अगल-बगल से नक्सलियों पर जवाबी हमला किया। टुकड़ियों के योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ने तथा उनकी शौर्यपूर्ण कार्रवाई से भौंचक होकर, नक्सली अपने दो दुर्दांत साथियों का शव, दो हथियार और अन्य चीजें पीछे छोड़कर भाग खड़े हुए। निरीक्षक चाणक्य नाग के नेतृत्व, रणनीतिक सूझ-बूझ, साहसिक शौर्यपूर्ण कार्रवाई से न केवल उनके जवानों के प्राणों की रक्षा हुई बल्कि इससे उल्लेखनीय उपलब्धि भी हासिल हुए।

एसएलआर राइफल सं. 01, बारमार राइफल सं. 01, मैगजीन सं. 02, एसएलआर जिंदा राउंड सं. 33, प्रेशर आईईडी सं. 01, हैंड ग्रेनेड सं. 01, डेटोनेटर सं. 08, एके-47 खाली केस सं. 06, एसएलआर खाली केस सं. 34, पीटू सं. 02, डीवीडी प्लेयर सं. 01, कोरडेक्स वायर, नक्सल लिटरेचर आदि का रिकॉर्ड किया गया था।

इस मुठभेड़ में श्री चाणक्य नाग, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.12.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 55-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. शिव कुमार,
निरीक्षक
02. चंदर वीर सिंह
सहायक उप निरीक्षक
03. रवि दत्त
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19 अगस्त, 2014 को विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई कि फिरोज उर्फ फौजी पुत्र इरशाद निवासी डाबर का तलाब, बंगाली पीर, लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश जोकि दिल्ली पुलिस के पुलिस कांस्टेबल शिवराज तोमर की सनसनीखेज हत्या में वांछित था, सुबह के समय सोनिया विहार पुस्ते पर अपने साथी से मिलने आएगा। तदनुसार उसे पकड़ने के लिए महत्वपूर्ण स्थलों पर जाल बिछाया गया। सुबह लगभग 5 बजे फिरोज उर्फ फौजी अपनी यूपी-16-ए-0730 पंजीकरण संख्या वाली यामहा आरएक्स 100 मोटरसाइकिल पर पुस्ता रोड पर दिखाई पड़ा। पुलिस दल ने उसे रोकने का प्रयास किया तथा पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। अपने को पुलिस दल से घिरा पाकर फिरोज उर्फ फौजी ने तेजी से पिस्तौल निकाल ली और पुलिस दल पर दो बार गोलियां चलाईं। एक गोली निरीक्षक शिव कुमार की बुलेट प्रूफ जैकट पर जा लगी जबकि दूसरी गोली जिप्सी पर लगी। पुलिस दल ने भी आत्म-रक्षा में जवाबी कार्रवाई की और अपराधी का प्रतिरोध किया। अभियुक्त को गोलियां लगीं और उसे जीटीबी अस्पताल ले जाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। घटना-स्थल से दो जिंदा कारतूसों के साथ एक .32 पिस्तौल बरामद हुई। पांच और जिंदा कारतूस डॉक्टर ने उसकी पॉकेट से तब बरामद किया जब उसे अस्पताल ले जाया गया था। इस अभियान से ऐसे अपराधी की आपराधिक गतिविधियों का अंत हो गया जो उत्तर प्रदेश और दिल्ली में हत्या, हत्या के प्रयास, फिरोती के लिए अपहरण, संधमारी, जबरन वसूली आदि के अनेक मामलों में संलिप्त था। इस संबंध में भारतीय दंड संहिता की धारा 186/353/307 तथा आयुध अधिनियम की धारा 25/27 के तहत पुलिस थाना सोनिया विहार, दिल्ली में एक मामला एफआईआर सं. 381 दिनांक 19.08.2014 के तहत दर्ज किया गया था।

इस मुठभेड़ में सर्वश्री शिव कुमार, निरीक्षक, चंदर वीर सिंह, सहायक उप निरीक्षक और रवि दत्त, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 56-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री नाजिर अहमद कुचे

उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 27.01.2015 को जलालुद्दीन निवासी हंडूरा ताल के मकान में आबिद हुसैन खान उर्फ हामजा, एचएम के अभियान प्रमुख, दक्षिण कश्मीर के अपने नजदीकी साथी के साथ मौजूद होने की विशिष्ट सूचना जुटायी गई/प्राप्त हुई। अभियान की योजना बनाई गई और पुलिस अधीक्षक अवंतीपुरा और कर्नल 42 आरआर के पर्यवेक्षण में पुलिस, 42, आर.आर. और 185 बटालियन, सीआरपीएफ के संयुक्त दलों द्वारा उक्त मकान के चारों ओर घेरा डाल दिया गया। जब संयुक्त दल आत्मसमर्पण करने के लिए उग्रवादियों को प्रेरित करने हेतु वहां के निवासियों से चर्चा कर रहा था, तभी एक उग्रवादी मकान से बाहर निकाला और दल पर अंधाधुंध गोलियां चलाने लगा जिसके कारण कर्नल एम.एन. राय पर आरआर, सिपाही रावत निलेश और कांस्टेबल विनेश कुमार को गोलियां लग गईं। इस अवस्था में पूरे दल और निवासियों को गंभीर क्षति होने के साथ-साथ उग्रवादी भाग भी सकते थे क्योंकि पूरा दल उग्रवादियों द्वारा किए गए अचानक हमले से सन्न था, फिर भी कर्नल 42 आरआर, पुलिस अधीक्षक, अवंतीपुरा, उप निरीक्षक नाजिर अहमद, एचसी इरशाद अहमद ने साहस जुटाया और आमने-सामने की गोलीबारी में उग्रवादी का मुकाबला किया जिसमें उग्रवादी मारा गया। उग्रवादी को मार गिराने के बाद पुलिस अधीक्षक और उप निरीक्षक नजीर अहमद ने बचे हुए उग्रवादी को गोलीबारी में उलझा दिया, जबकि चार जवान घायल कर्नल 42 आरआर को कंधे का सहारा देकर सुरक्षित स्थान पर ले गए जहां से उन्हें पास के अस्पताल में ले जाया गया। मकान परिसर में अन्य दो घायल जवानों के शरीर से काफी रक्त बह रहा था और संयुक्त दल की पहली प्राथमिकता यह थी कि उन्हें सुरक्षित बाहर निकाला जाए ताकि काफी मात्रा में रक्त बहने के कारण उनकी मृत्यु न होने पाए। पुलिस अधीक्षक की कमान में उक्त उप निरीक्षक सहित 17 कर्मियों वाले एक छोटे दल ने घायल जवानों को बाहर निकालने के लिए मकान के अंदर प्रवेश करने का निर्णय लिया। दल ने बचे अन्य उग्रवादियों पर गोली चलाते हुए मकान में प्रवेश किया। छह जवान घायल जवानों को सहारा देने लगे जबकि अन्य जवान उनके सिर के ऊपर से

उग्रवादियों पर गोलियां चलाने लगे। घायल जवानों को बाहर निकालते हुए देख उग्रवादी एक फिदायीन की तरह मकान से अचानक निकल पड़ा और घायल जवानों को बाहर निकाल रहे पुलिस दल पर गोलियां चलाने लगा। इस पूरे दल को उस समय भारी क्षति हो सकती थी। तथापि, एचसी संजीव सिंह, जो बचाव दल का हिस्सा थे, ने अत्यधिक बहादुरी का परिचय दिया और एक तरफ से पुलिस दल को कवच प्रदान किया और दूसरी ओर अपनी जान की परवाह किए बिना बहादुरी के साथ उग्रवादी से भिड़ गए। उग्रवादी ने पुलिस दल की तरफ एक ग्रेनेड फेंका, फिर भी एचसी संजीवन सिंह ने तत्क्षण अपने पैरों से ग्रेनेड को पुलिस दल से दूर कर दिया जो कुछ गज की दूरी पर तत्काल फट गया। इस स्थिति में उग्रवादी और एचसी संजीवन सिंह एक दूसरे से कुछ ही गज की दूरी पर आमने-सामने गोलियां चला रहे थे और इस दौरान उग्रवादी मारा गया जबकि एचसी संजीवन सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद में घायल 42 आरआर के कर्नल एम.एन. राय और एचसी संजीवन सिंह की सेना अस्पताल में मृत्यु हो गई। मारे गए उग्रवादियों की पहचान आबिद हुसैन खान उर्फ हमजा पुत्र रत्नालुद्दीन खान निवासी हुंडूरा ताल और शिराज अहमद डार पुत्र जीएच. हसन डार निवासी ओवरीगुंड ताल के रूप में हुई और ये दोनों एचएम संगठन से जुड़े हुए थे।

बराहदगी :—

1. एके 47 राइफल-2
2. एके मैगजीन-4
3. ग्रेनेड-1
4. एके राउंड-60(जिंदा)
5. पाउच-2

इस मुठभेड़ में श्री नाजिर अहमद कुचे, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 57-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जावेद इकबाल,
पुलिस अधीक्षक
02. मंजूर अहमद,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 01.09.2014 को 1700 बजे उप महानिरीक्षक अनंतनाग को गांव हंजन बाला में जेईएम संगठन के तीन उग्रवादियों के मौजूद होने की विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई, जो आतंकी कार्रवाई को अंजाम देने की योजना बना रहे थे। तदनुसार यह सूचना पुलिस अधीक्षक पुलवामा/44 आरआर, 182/183 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ साझा की गई और संयुक्त घेराबंदी की गई। पुलिस अधीक्षक पुलवामा, सहा. पुलिस अधीक्षक पुलवामा/उप पुलिस अधीक्षक ओजीएस पुलवामा के सहयोग से उप महानिरीक्षक अनंतनाग की कमान में पुलिस दल ने बिना कोई समय गंवाए उक्त गांव के लक्षित क्षेत्र की घेराबंदी की। घेराबंदी करने के बाद, उग्रवादियों की तलाशी आरंभ की गई। इसी बीच, उग्रवादियों ने घेराबंदी तोड़कर बच निकलने के इरादे से वाल मोहम्मद नेंगुरु पुत्र अली मोहम्मद नेंगुरु के मकान से तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलियां चलानी आरंभ कर दी। उप महानिरीक्षक अनंतनाग और एसपी पुलवामा ने बड़ी बहादुरी से

इस गोलीबारी का जवाब दिया और उग्रवादियों को बचकर भागने का कोई अवसर नहीं दिया। एक चुनौतीपूर्ण कार्य यह था कि एक महिला सहित तीन आम नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाला जाए जो लक्षित मकान के पहले तल पर फंसे हुए थे। इस विकट स्थिति में बिना अपने प्राणों की परवाह किए उप महानिरीक्षक अनंतनाग के समग्र पर्यवेक्षण में एसपी पुलवामा और अन्य जवानों द्वारा इन आम नागरिकों को बाहर निकालने का काम सराहनीय था। चूंकि अंधेरा घिर रहा था, इसलिए घटना स्थल से उग्रवादियों के बचकर भागने के प्रत्येक प्रयास को विफल करने के लिए लक्षित मकान के चारों ओर प्रभुत्व कायम करने हेतु रोशनी करने/कंसर्टीना तार बिछाने सहित अन्य उपाय किए गए। उप महानिरीक्षक एस के आर ने कई बार घेराबंदी की जांच की और पूरी रात लगातार अनुदेश देते रहे। इसके अतिरिक्त, पीए (सार्वजनिक उद्घोषणा) प्रणाली के माध्यम से उग्रवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। इसकी बजाय उन्होंने आगे बढ़ रहे दलों पर अंधाधुंध गोलियां चलाना आरंभ कर दिया और रात्रि के दौरान सुरक्षा बलों को पास आने का मौका नहीं दिया। एसपी पुलवामा और उप-निरीक्षक मंजूर अहमद और अन्य जवानों सहित उप महानिरीक्षक अनंतनाग पूरी रात चौकस रहे।

अगली सुबह उग्रवादियों से पुनः आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने इसे नजर अंदाज कर दिया और जवानों को मारने तथा घेराबंदी तोड़ने की मंशा से टुकड़ियों पर अंधाधुंध गोलियां चलाने लगे। अंततोगत्वा भीषण गोलीबारी में, जो लगभग पांच घंटे तक चली, लक्षित मकान की लॉन में उग्रवादियों का सफाया कर दिया गया जिनकी पहचान बाद में मोहम्मद अल्लाफ राथेर उर्फ कामरान पुत्र मो. अब्दुल्ला राथेर निवासी चक बट्टीनाथ पुलवामा, फारुक अहमद लावे पुत्र गुलाम अहमद लावे निवासी हरदो डलवान बडगाम और शौकत अहमद डार उर्फ मिर्ची सेठ पुत्र गुलाम कादिर डार निवासी अगलार कंडी पुलवामा के रूप में हुई। मुठभेड़-स्थल से हथियारों/गोलाबारुद का बड़ा जखीरा बरामद हुआ। इस संबंध में पुलिस थाना राजपुरा में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एक मामला एफआईआर सं. 67/2014 दर्ज है। मृतक उग्रवादी जेईएम संगठन के दक्षिण कश्मीर का डिवीजन कमांडर मोहम्मद अल्लाफ राथेर उर्फ कामरान पिछले 4 वर्षों से सक्रिय था और अनेक आपराधिक मामलों में संलिप्त था। उसने घाटी विशेषकर दक्षिण कश्मीर में सुरक्षा बलों/नागरिकों/सरकारी संस्थापनाओं पर अनेक सनसनीखेज हमले किए थे। इसके अलावा, उक्त उग्रवादी युवाओं को उग्रवादी बनने के लिए प्रेरित करने के कार्य में भी शामिल था। पंचायत के सदस्यों को उनके पदों से त्यागपत्र देने की धमकियों में भी उसका हाथ रहा था। दूसरा मृतक उग्रवादी फारुक अहमद लावे पुत्र जीएच. अहमद लावे निवासी डलवान बडगाम भी पाखेरपुरा में श्राइन गार्ड से एक कांस्टेबल को जख्मी करके गोलाबारुद सहित 03 एसएलआर राइफलें छीनने में भी संलिप्त था। इस बारे में पुलिस थाना चरार-ए-शरीफ में आरपीसी की धारा 307, 392, आई ए अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एक मामला एफआईआर सं. 24/2014 दर्ज है। इन सभी तीन उग्रवादियों का खात्मा विशेषकर दक्षिण कश्मीर में जेईएम संगठन उग्रवादी काडरों के लिए जबरदस्त झटका था और इससे कश्मीर प्रांत विशेषकर दक्षिण कश्मीर रेंज के सुरक्षा बलों/नागरिकों को बड़ी राहत महसूस हुई।

बरामदगी :—

1. राइफल एके-47	-	01
2. मैगजीन एके	-	01
3. हैंड ग्रेनेड चीन निर्मित	-	01
4. मैगजीन चीन निर्मित पिस्तौल	-	01
5. राउंड पिस्तौल	-	03
6. राइफल एसएलआर	-	01
7. मैगजीन एसएलआर	-	01
8. चीन निर्मित पिस्तौल	-	01
9. यूबीजीएल ग्रेनेड	-	01 (क्षतिग्रस्त)
10. राउंड एसएलआर	-	50 (2 क्षतिग्रस्त सहित)

इस मुठभेड़ में सर्वश्री जावेद इकबाल, पुलिस अधीक्षक और मंजूर अहमद, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01.09.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 58-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- | | |
|---|---------------------------------------|
| 1. तनवीर अहमद जीलानी,
उप पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 2. राम लाल,
हेड कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 3. मंजूर अहमद मलिक,
एसजीसीटी | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13/11/2014 को कुलगाम पुलिस को गांव चानपुरा चिनिगाम कुलगाम में एलईटी आतंकवादियों के मौजूद होने के संबंध में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, पुलिस अधीक्षक कुलगाम के पर्यवेक्षण में पुलिस दल और सहायक पुलिस अधीक्षक कुलगाम श्री शबीर नवाब- केपीएस/उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) हातिपुरा श्री तनवीर अहमद जीलानी की अध्यक्षता में एसओजी दल ने तुरंत गांव की घेराबंदी की। जब घेराबंदी की जा रही थी, तब सशस्त्र आतंकवादी गांव से बच निकलने और सुरक्षा बलों को हताहत करने के उद्देश्य से अपनी ओर आ रहे दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए मोहल्ला चानपुरा चिनिगाम की ओर भागे। सहायक पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) कुलगाम, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) हातिपुरा, हेड कांस्टेबल रामलाल सं. 21/आईआर 11 और एसजीसीटी मंजूर अहमद मौत से बाल-बाल बचे और उग्रवादियों को बचकर भागने से रोकने के लिए वीरतापूर्वक जवाबी गोलीबारी की और उन्हें घनी आबादी वाले मोहल्ला चानपुरा में शरण लेने के लिए विवश कर दिया। पहली कार्रवाई में लक्षित क्षेत्र से फंसे हुए सिविलियनों को बाहर निकाला गया। इसी बीच, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) कुलगाम, श्री जहीर अब्बास और उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) मंजूर अहमद, श्री नवाब अहमद के नेतृत्व में अन्य एसओपी दल प्रथम आरआर के साथ घटना स्थल पर पहुंचे, सीआरपीएफ की 18वीं/90वीं बटालियन भी इसमें शामिल हो गई और अभियान का नेतृत्व उप महानिरीक्षक एसकेआर अनंतनाग और पुलिस अधीक्षक कुलगाम की कमांड/पर्यवेक्षण में किया गया। छिपे हुए आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। जिसे उन्होंने भारी गोलीबारी करके इंकार कर दिया और एक बचाव मार्ग बनाने का प्रयास किया। दिनांक 14.11.2014 की सुबह तक नियमित अंतरालों पर दोनों ओर से गोलीबारी जारी रही। भीषण गोलीबारी के कारण दो खुंखार आतंकवादी मारे गए जिनकी पहचान मोहम्मद अब्बास मल्ल उर्फ अबू खताब निवासी नौपुरा फ़िसाल और मंजूर अहमद मलिक उर्फ मूसा, पेंटर, निवासी चिनिगाम फ़िसाल के रूप में हुई और मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद हुआ। इस संबंध में पीआरसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 106/2014 पुलिस स्टेशन यारीपुरा में दर्ज है। मारा गया आतंकवादी मोहम्मद अब्बास मल्ल उर्फ अबू खताब दिनांक 06.08.2013 से दक्षिण कश्मीर में सक्रिय था। उसने दक्षिण कश्मीर में एलईटी को दोबारा खड़ा करने में सक्रिय भूमिका निभाई और स्थानीय ओजीडब्लू की मदद से युवाओं को आतंकवाद में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। मारा गया अन्य आतंकवादी नामतः मंजूर अहमद मलिक उर्फ मूसा पिछले 6 माह से सक्रिय था और सभी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में मोहम्मद अब्बास की मदद की थी। उन्होंने हताहत करने और दक्षिण कश्मीर में चुनाव की प्रक्रिया को बाधित करने के लिए सुरक्षा बलों, प्रवासी पंडित कालोनी काजीगुंड और चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों पर हमले की योजना बनाई थी। इसके अतिरिक्त, मृत आतंकवादियों ने हसनपुरा बाग कैमोह में पुलिस कांस्टेबल/फालोअर की हत्या, महिला एसपीओ पर हमला और नौपुरा फ़िसाल में पुलिस दल पर हमला सहित अनेक विनाशकारी कार्रवाईयां की थीं। इन आतंकवादियों के मारे जाने के परिणामस्वरूप एलईटी संगठन और विधान सभा चुनाव- 2014 को बाधित करने के साथ पंचायत सदस्यों/राजनेताओं/सुरक्षाबलों/पुलिस कर्मियों/कश्मीरी पंडितों/चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों पर हमले करने की उनकी योजनाओं को बड़ा झटका लगा। उनके मारे जाने से काफी हद तक खतरा दूर हो गया था।

बरामदगी:-

- | | | |
|------------------|---|----|
| 1. इन्सास राइफल | - | 01 |
| 2. एके-56 राइफल | - | 02 |
| 3. मैगजीन एके-56 | - | 02 |
| 4. मैगजीन इन्सास | - | 02 |

- | | | | |
|----|--------------------------|---|----|
| 5. | जिंदा राउंड एके-56 | - | 11 |
| 6. | क्षतिग्रस्त राउंड एके-56 | - | 09 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री तनवीर अहमद जीलानी, उप पुलिस अधीक्षक, राम लाल, हेड कांस्टेबल और मंजूर अहमद मलिक, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार /पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.11.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 59-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- | | | |
|-----|---------------------------------------|---------------------------------------|
| 01. | सजाद हुसैन,
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 02. | मुमताज अली,
उप पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 25 अप्रैल, 2014 को काजी पथरी, खान मोहल्ला गांव करेवा मानलू में तीन हथियारबंद उग्रवादियों की उपस्थिति के संबंध में एक विशिष्ट सूचना के आधार पर, उग्रवादियों को पकड़ने/मार गिराने के लिए उचित रणनीतिक योजना के तहत पुलिस/44 आर.आर. और सीआरपीएफ की 14वीं बटालियन ने क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। उस मकान की पहचान करने, जिसमें आतंकवादी छिपे हुए थे और सभी ओर से क्षेत्र को अपने अधिकार में करने के लिए, पुलिस अधीक्षक शोपियां, उप पुलिस अधीक्षक आपरेशन इमाम साहब शोपियां और एसएचओ शोपियां की कमान में चार हमला समूहों का गठन किया गया। पुलिस अधीक्षक शोपियां के नेतृत्व वाले एक समूह ने घेराबंदी किए गए क्षेत्र की एक ओर पोजीशन ले ली, श्री सजाद हुसैन, एसपी ने अपने कर्मियों के साथ दूसरी ओर से पोजीशन ले ली, श्री मुमताज अली, उप पुलिस अधीक्षक आपरेशन इमाम साहब ने लक्षित मकान के सामने पोजीशन संभाल ली और निरीक्षक जावीद अहमद, एसएचओ शोपियां ने घने बागानों की ओर पोजीशन ले ली। मकान की पहचान करने के बाद, उग्रवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिन्होंने इससे इंकार कर दिया और तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की। तथापि, पुलिस दल ने आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की, जिससे वहां से गोलीबारी शुरू हो गई। जारी अभियान 20 घंटे से अधिक समय तक चला। इस लंबी गोलीबारी के दौरान, उग्रवादियों ने सुरक्षा बलों की ओर अनेक ग्रेनेड फेंके और अंधाधुंध गोलीबारी की जिसमें 44 आर आर के दो सेनाकर्मियों नामतः 'मेजर मुकुंद वर्दराजन' और सिपाही 'विक्रम' मुठभेड़ स्थल पर प्रवेश करने का प्रयास करते समय शहीद हो गए। तथापि, उप पुलिस अधीक्षक मुमताज अली ने अपनी जान की परवाह किए बिना आगे बढ़कर अपने समूह का नेतृत्व करते समय उग्रवादियों को भागने से रोकने के लिए जवाबी कार्रवाई जारी रखी। दिनांक 25 और 26 अप्रैल की मध्य रात्रि के दौरान दोनों ओर से गोलीबारी होती रही और ग्रेनेड फेंककर और अंधाधुंध गोलीबारी करके उग्रवादियों ने अंधेरे का फायदा उठाकर घटनास्थल से भागने का हर संभव तरीका अपनाया। तथापि, सजाद हुसैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं मुमताज अली, उप-पुलिस अधीक्षक ने अपनी सूझबूझ और साहस से उग्रवादियों को भागने नहीं दिया। इस लंबी गोलीबारी के दौरान, तीन उग्रवादी मारे गए। सजाद हुसैन, अपर पुलिस अधीक्षक शोपियां, मुमताज अली, उप पुलिस अधीक्षक आपरेशन इमाम साहब, जावीद अहमद, एसएचओ शोपियां और एसजीसीटी पृथ्वीराज ने अनुकरणीय साहस और धैर्य का प्रदर्शन किया। मारे गए उग्रवादियों की पहचान बाद में एचएम संगठन के आसिफ अहमद वानी उर्फ मुजामिल पुत्र अब्दुल रजाक, निवासी दुर्बगाम पुलवामा (2) अब्दुल हक मलिक पुत्र जीएच. हसन मलिक, निवासी अरवानी बिजबेहरा और (3) शबीर अहमद गोर्सी पुत्र फारूक गोर्सी, निवासी रिंगवार्ड केल्लार, शोपियां के रूप में हुई। घटनास्थल से बड़ी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद हुआ।

इस संबंध में पुलिस स्टेशन शोपियां में आरबीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 307, 7/27 के तहत एक मामला एफआईआर सं. 82/2014 दर्ज है और जांच जारी है। मृत उग्रवादी आसिफ अहमद वानी गत 4 वर्षों से अधिक समय से जिला पुलवामा/शोपियां में सक्रिय था और पुलवामा के जिला कमांडर के रूप में कार्य कर रहा था। वह अनेक आतंकवादी गतिविधियों में शामिल

था और पुलिस स्टेशन राजपुरा में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 06/2010 (दिनांक 12.01.2010 को मुठभेड़), पुलिस स्टेशन राजपुरा में आरपीसी धारा 302, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 14/2010 (दिनांक 24.01.2010 कलामपुरा में सरपंच के पुत्र की हत्या), पुलिस स्टेशन राजपुरा में आरपीसी की धारा 121, यूएलए अधिनियम की धारा 20 के तहत एफआईआर सं. 63/2010 (कस्बायार में आग की घटना) और पुलिस स्टेशन पुलवामा में आरपीसी की धारा 302, 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 210/2012 में शामिल था। अब्दुल हक मलिक जिला शोपियां में अक्टूबर, 2013 से सक्रिय था और आसिफ अहमद वानी का निकट सहयोगी था। जिला शोपियां के चुने हुए पंचायत सदस्यों को राजनीति से दूर रहने के लिए धमकाने में उक्त उग्रवादी की भूमिका अहम थी। वह लीवर पहलगाम निवासी सैयद सलाउद्दीन और आमीर खान के निकट सम्पर्क में था जो इस समय पाकिस्तान से हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम) का पर्यवेक्षण कर रहे हैं। वह अनेक आतंकी गतिविधियों (आयुध अधिनियम की धारा 7/25 और यूएलए अधिनियम की धारा 13/2 के तहत एफआईआर 185/2010, पुलिस स्टेशन बिजबेहरा और यूएलए अधिनियम की धारा 13/1, 16, 18, 20, 40 के तहत एफआईआर सं. 57/2013) में शामिल था। शबीर अहमद गोर्सी पुत्र फारूख अहमद गोर्सी निवासी रिंगवार्ड केल्लार जुलाई, 2013 से सक्रिय था। वह एक हत्या के मामले में भी शामिल था और उसे उम्र कैद की सजा मिली थी तथा उग्रवादी रैंकों में शामिल होने के लिए शोपियां अदालत में सामान्य सुनवाई के दौरान अदालत से भाग गया था। वह हाल ही में सम्पन्न संसदीय चुनावों के दौरान मतदान करने से दूर रहने के लिए शोपियां जिले के स्थानीय लोगों तथा पंचों/सरपंचों को घमकाने में भी शामिल था और शोपियां पुलिस में आरपीसी की धारा 223, 224 आयुध अधिनियम की धारा 30 के तहत एफआईआर सं. 102/2013 के मामले में भी शामिल था। इसके अतिरिक्त, मारे गए तीनों उग्रवादी 20 अप्रैल को नागबल शोपियां में मतदान पार्टी पर हमले में भी शामिल थे जिसमें एक मतदान अधिकारी की मौत हो गई थी और दो सीआरपीएफ कर्मियों सहित पांच अन्य व्यक्ति घायल हो गए थे। इस संबंध में, आरपीसी की धारा 302, 307, 120ख, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 25/2014 पुलिस स्टेशन जैनापुरा में दर्ज है। उनके मारे जाने से आम जनता ने काफी राहत महसूस की है और उग्रवादी कैडरों को बड़ा झटका लगा है।

बरामदगी:

1. एके-47	-	01
2. इन्सास	-	01
3. एके मैगजीन	-	03
4. इन्सास मैगजीन	-	03
5. एके राउंड	-	40
6. पिस्तौल	-	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सजाद हुसैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और मुमताज अली, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/ पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.04.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 60-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. इम्तियाज अहमद,
उप पुलिस अधीक्षक

2. तारिक अहमद वानी,
उप पुलिस अधीक्षक
3. प्रणव महाजन,
उप पुलिस अधीक्षक
4. फिरोज अहमद इट्टू,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 15.01.2015 को, गेड्डर केल्लर शोपियां के जंगल क्षेत्र में स्थित ढोक में पांच हथियारबंद उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में पुलिस को एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई/जुटाई गई। तदनुसार, 44 आरआर और सीआरपीएफ की 14वीं बटालियन की मदद से पुलिस श्रीनगर/शोपियां ने उचित रणनीतिक योजना के तहत समूचे क्षेत्र की घेराबंदी की और दो हमला समूह बनाए गए, पहला एसपी शोपियां के नेतृत्व में जिसमें श्री तारिक अहमद, उप पुलिस अधीक्षक और निरीक्षक फिरोज अहमद शामिल थे, और पुलिस अधीक्षक, पी.सी. केन्द्र श्रीनगर के नेतृत्व में दूसरा समूह जिसमें श्री इम्तियाज अहमद, उप पुलिस अधीक्षक, श्री प्रणव महाजन, उप पुलिस अधीक्षक शामिल थे। दोनों समूहों ने दो अलग-अलग दिशाओं से घने जंगल क्षेत्र में तलाशी अभियान आरंभ किया और 44 आरआर/सीआरपीएफ की 14वीं बटालियन के सैन्य दलों ने बचकर भागने के सभी संभावित मार्गों को सील/बंद कर दिया। इसी दौरान बड़ी चट्टानों और झाड़ियों तथा पेड़ों से ढके “ढोक” का पता लगाया गया जहां उग्रवादी छिपे हुए थे। छिपे हुए उग्रवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन इसके बजाय उन्होंने तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की। तथापि, एसपी शोपियां के नेतृत्व में तलाशी दल ने असाधारण साहस और अभियान संबंधी कौशल के साथ प्रभावी रूप से जवाबी गोलीबारी करके उग्रवादियों को उलझाए रखा। गोलीबारी के दौरान उग्रवादियों ने ग्रेनेड फेंककर और अंधाधुंध गोलीबारी करके घटना स्थल से भागने और घेरा तोड़ने का भरसक प्रयास किया लेकिन उक्त दल ने प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया और उग्रवादियों को हावी होने का कोई अवसर नहीं दिया। उग्रवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी अभियान दलों को उनके कर्तव्य से विचलित नहीं कर सकी और उत्कृष्ट साहस तथा समर्पण के द्वारा उपरोक्त पुलिस कर्मी लगातार/प्रभावी रूप से तब तक जवाबी गोलीबारी करते रहे जब तक कि पांचों आतंकवादी मारे नहीं गए, बाद में जिनकी पहचान अबु तोयब निवासी पाकिस्तान, शकील अहमद वानी उर्फ मास्टर पुत्र गुलाम मोहम्मद वानी, निवासी पक्करपुरा, चेरियर-। शरीफ बडगाम, ताहिर अहमद शाह पुत्र अब्दुल वानी शाह, निवासी अगलर कांडी पुलवामा (तीनों जेईएम संगठन के), हिजबुल मुजाहिदीन संगठन के परवेज अहमद बागे पुत्र गुलाम मोहम्मद बागे निवासी बटमारान, केल्लर शोपियां, इशफाक अहमद मलिक उर्फ डग्गा पुत्र गुलजार अहमद मलिक, निवासी ईदगाह मोहल्ला अरवानी के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद बरामद किया गया और इस संबंध में पुलिस स्टेशन केल्लर में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 05/2015 दर्ज है।

इन आतंकवादियों का खात्मा उपरोक्त चारों पुलिस अधिकारियों के अनुकरणीय साहस के साथ-साथ उनकी नेतृत्व की क्षमता और उत्कृष्ट अभियान संबंधी कमांड के कारण ही संभव हुआ।

बरामदगी :

1. एके-47	-	03
2. एसएलआर	-	01
3. एके मैगजीन	-	03
4. एसएलआर मैगजीन	-	01
5. एके राउंड	-	30
6. एसएलआर राउंड	-	10
7. पिस्तौल	-	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री इम्तियाज अहमद, उप पुलिस अधीक्षक, तारिक अहमद वानी, उप पुलिस अधीक्षक, प्रणव महाजन, उप पुलिस अधीक्षक और फिरोज अहमद इट्टू, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 61-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जहीर अब्बास,
उप पुलिस अधीक्षक
02. शैलेन्द्र सिंह,
हेड कांस्टेबल
03. मनोज कुमार,
एसजीसीटी

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 25.05.2015 को उग्रवादी की उपस्थिति के संबंध में एक विशिष्ट सूचना पर, प्रथम आरआर/सीआरपीएफ की 18वीं बटालियन के सैन्य दलों के साथ एसएसपी कुलगाम के पर्यवेक्षण में कुलगाम पुलिस ने यारीपुरा कुलगाम के गांव कांजीकुल्लाह की घेराबंदी की। घने उद्यानों से आच्छादित लक्षित क्षेत्र छिपे हुए आतंकवादी को अनुकूल आड़ उपलब्ध करा रहा था। इसी बीच, सैन्य दलों की आवाजाही को देखकर छिपे हुए आतंकवादी ने घेराबंदी किए गए क्षेत्र से बच निकलने के लिए उन पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। छिपे हुए आतंकवादी के इस आरंभिक/अचानक हमले में एक सैन्य कर्मी गंभीर रूप से घायल हो गया। तेजी से कार्रवाई करते हुए, अपर पुलिस अधीक्षक, कुलगाम और श्री जहीर अब्बास उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) कुलगाम ने हेड कांस्टेबल शैलेन्द्र सिंह और एसजीसीटी मनोज कुमार के साथ असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और पूर्ण प्रबलता के साथ आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की। हमला दल ने घने उद्यान के काफी अंदर आतंकवादी गतिविधि को देखा। उक्त पुलिस कर्मियों ने रणनीतिक योजना के तहत लक्ष्य की ओर बढ़ना आरंभ किया। अपनी गरदन के चारों ओर फंदे को भांप कर आतंकवादी ने समर्पण करने के बजाय ग्रेनेड फेंकते हुए अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। तथापि, उक्त पुलिस कर्मियों ने अपनी असाधारण सतर्कता के कारण उसे और अधिक क्षति पहुंचाने अथवा घेरे को तोड़ने का कोई अवसर नहीं दिया। ये पुलिस कर्मी लक्ष्य को भेदने में सफल हुए और आतंकवादी को नजदीकी गोलीबारी में उलझा दिया जो काफी लम्बे समय तक चली और अंततः आतंकवादी के मारे जाने पर बंद हुई। बाद में उसकी पहचान अयातुल्लाह भट उर्फ खुमानी उर्फ अबु माज उर्फ युसुफ पुत्र हफीजुल्लाह भट, निवासी चिनीगाम फ़िसाल, एलईटी संगठन के जिला कमांडर के रूप में की गई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद बरामद किया गया और पुलिस स्टेशन यारीपुरा में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 43/2015 दर्ज की गई।

इस पुलिस पार्टी की वीरतापूर्ण कार्रवाई ने इस गौरवपूर्ण संगठन का नाम और अधिक रोशन किया है और आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए और प्रयास करने और सम्पूर्ण क्षेत्र के साथ जिले को आतंकवाद मुक्त करने के लिए भी कुलगाम पुलिस के समस्त कर्मियों के बीच प्रेरणा का मुख्य कारण साबित हो रहा है। उनकी असाधारण वीरतापूर्ण कार्रवाई के परिणामस्वरूप आतंकवादियों का काफी देर तक पीछा करने के पश्चात् मिशन पूर्ण हुआ। इस अभियान की अन्य विशेष विशिष्टता यह थी कि कुलगाम पुलिस ने अपनी स्वयं की आसूचना पर ही इस मिशन को पूर्ण किया।

बरामदगी :

- | | | |
|--------------------------------------|---|----|
| 1. एके-47 राइफल | - | 01 |
| 2. एके-47 राइफल की मैगजीन | - | 03 |
| 3. एके-47 के राउंड | - | 20 |
| 4. चीन में निर्मित पिस्तौल | - | 01 |
| 5. चीन में निर्मित पिस्तौल की मैगजीन | - | 01 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री जहीर अब्बास, उप पुलिस अधीक्षक, शैलेन्द्र सिंह, हेड कांस्टेबल और मनोज कुमार, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.05.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 62-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/ वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

- | | |
|-----------------------------------|---------------------------------------|
| 01. श्री दिलराज सिंह,
निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 02. मंजूर अहमद,
हेड कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 03. खुशीद अहमद खान,
कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22.06.2014 को लगभग 1530 बजे सोपोर पुलिस को मोहल्ला बाबा-रजा कैकशिवान कालोनी सोपोर में आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। आसूचना पर कार्रवाई करते हुए, सोपोर पुलिस ने 22-आरआर, 52 आरआर और सीआरपीएफ की 179वीं बटालियन के सैन्य दलों के सहयोग से लगभग 1545 बजे समूचे क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। क्षेत्र सामान्यतः समतल और बड़ी तथा संकरी गलियों के नेटवर्क के कारण वाहनों की आवाजाही को बाधित करता है और पर्याप्त कवर उपलब्ध कराता है। इसलिए, पुलिस दल और 22-आरआर के सैन्य दलों ने सभी गलियों, उप-गलियों को सील करते हुए तुरंत आंतरिक घेराबंदी की और उसी समय 52-आरआर के सैन्य दल ने उग्रवादियों को भागने से रोकने के लिए बाहरी घेराबंदी की। सुरक्षा बलों के लिए पहला कार्य घेराबंदी में फंसे सिविलियनों को सुरक्षित बाहर निकालना था। लगभग 1610 बजे सोपोर पुलिस ने हर मकान की तलाशी आरंभ की और लक्ष्य को निशाना बनाने के लिए 22-आरआर के सैन्य दल ने तलाशी लिए मकानों को तुरंत अपने कब्जे में ले लिया। इस प्रकार घेराबंदी किए गए मकानों में फंसे सभी सिविलियनों को सुरक्षित रूप से बाहर निकाला गया। मोहम्मद शाबान पंचू अब्दुल अजीज निवासी बाबा-रजा, कैकशिवान कालोनी सोपोर पट्टी आरा (बैंड सॉ) के निकट पहुंचने पर, उग्रवादियों ने तलाशी दल पर गोलीबारी की जिसका पूर्ण प्रबलता के साथ जवाब दिया गया। गोलीबारी उक्त पट्टी आरा के अहाते में स्थित तीन कमरों वाले एक मंजिला मकान से आ रही थी। लक्ष्य वाले स्थान के आस-पास लगभग सात से आठ आरा मिले थे और लक्षित मकान की बनावट का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि लक्षित स्थान के अहाते में टनों सूखी लकड़ी, बुरादा और लकड़ी की छीलन भरी हुई थी और किसी भी गैर-इरादतन आग से अत्यधिक क्षति हो सकती है। खतरनाक स्थिति की गंभीरता को भांपकर गोलीबारी में शामिल सैन्य दल को धैर्य रखने और स्थिति से निपटने में अत्यधिक सावधानी बरतने के लिए कहा गया। फंसे हुए उग्रवादी बीच-बीच में सैन्य दल पर गोलीबारी कर रहे थे और अंधेरा होने का इंतजार कर रहे थे। लगभग 1930 बजे अग्रिम दल, जिसमें निरीक्षक दिलराज सिंह, हेड कांस्टेबल मंजूर अहमद, कांस्टेबल खुशीद अहमद और 22-आरआर के सैन्य दल शामिल थे, ने उग्रवादियों को भागने से रोकने के लिए कंसर्टीना तार से लक्षित क्षेत्र को सील किया और हेलोजन लाइटें जलाईं। लगभग 1340 बजे, घेरे को सख्त किया गया और चारों ओर से लक्ष्य पर हमला करने का निर्णय लिया गया। जब अग्रिम दल पट्टी आरा मिल के दोनों ओर स्थित दो तंग गलियों को सील करते हुए पट्टी आरा के मुख्य प्रवेश द्वार तेजी से आगे बढ़ रहा था, तो फंसे हुए उग्रवादियों ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी की और चौहद्दी दीवार के पीछे से कूद गए तथा क्षेत्र से भागने के लिए बांयी वाली तंग गली से भाग गए।

उपरोक्त पुलिस कर्मियों ने उत्कृष्ट साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए एक उग्रवादी का पीछा किया और मुख्य सड़क पर जाने वाली गली के दूसरे किनारे पर उसे घेर लिया। उक्त उग्रवादी हताहत करने के लिए अंधाधुंध गोलीबारी करता रहा, लेकिन बिना किसी कवर के दल द्वारा वहीं पर ढेर कर दिया गया। गली से उसके पीछे आते हुए दूसरे उग्रवादी ने अपना हैंड ग्रेनेड नीचे रख दिया और आत्मसमर्पण कर दिया। उपर्युक्त अधिकारियों/पदाधिकारी ने उसे तुरन्त हिरासत में ले लिया। तात्कालिक अभियान में मारे गए उग्रवादी

की पहचान एलईटी संगठन के मुहम्मद भाई निवासी पाकिस्तान के रूप में की गई। पकड़े गए उगवादी की पहचान हिजबुल मुजाहिदीन के मोहम्मद वसीम भट उर्फ शबीर बेग पुत्र गुलाम मोहम्मद भट निवासी तारजू सोपोर के रूप में की गई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद किया गया। इस संबंध में तारजू पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 86/2014 दर्ज है। संपूर्ण अभियान में उपरोक्त पुलिस कर्मियों ने असाधारण वीरता और अतुलनीय सूझबूझ का प्रदर्शन किया जिससे अभियान सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

एलईटी संगठन का मृत आतंकवादी मोहम्मद लम्बे समय से सोपोर के आस-पास के क्षेत्र में कार्य कर रहा था और युवाओं को संगठन के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा था। वह सोपोर में एलईटी संगठन के प्रभाव और नेटवर्क को दोबारा बनाने का प्रयास कर रहा था। हाल ही में एक एलईटी मॉडयूल का फांडाफोड़ हुआ था और कम से कम छह व्यक्ति गिरफ्तार किए गए थे। पूछताछ के दौरान यह पता चला कि मॉडयूल के इन सदस्यों को उक्त मोहम्मद भाई द्वारा हथियार और पैसा भेजने, सुरक्षा प्रतिष्ठानों के साथ-साथ लक्ष्यों की पहचान करने, संचार उपकरणों की व्यवस्था करने और आतंकवादियों के लिए परिवहन सुविधाएं उपलब्ध कराने सहित अनेक कार्य सौंपे गए थे। इससे यह भी पता चला कि वे सोपोर में कानून और व्यवस्था की स्थिति को बिगाड़ने और लोगों के बीच भय पैदा करने का प्रयास कर रहे थे ताकि वर्ष 2014 के विधान सभा चुनावों में बाधा उत्पन्न की जा सके और उसका बहिष्कार कराया जा सके। उसका मारा जाना एक बड़ी उपलब्धि है और इसका पूरी घाटी में तथा विशेष रूप से सोपोर की समग्र सुरक्षा परिदृश्य पर दीर्घावधिक प्रभाव पड़ेगा। हिजबुल मुजाहिदीन संगठन का पकड़ा गया आतंकवादी नामतः मोहम्मद वसीम भट उर्फ शबीर बेग पुत्र गुलाम मोहम्मद भट निवासी तारजू सोपोर स्थानीय होने के नाते सुरक्षा बल की टुकड़ियों पर ग्रेनेड फेंकने, पंचों/सरपंचों पर हमला करने, सिपाहियों की हत्या करने आदि सहित उग्रवाद से संबंधित हिंसा में भी सक्रिय रूप से शामिल था। वह तारजू, अम्बरपुरा, चांखन, क्रैंकशिवान कालोनी, वागु और हाड़गाम के क्षेत्रों में सक्रिय था। उसकी गिरफ्तारी पुलिस के लिए भी बड़ी उपलब्धि है जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर कश्मीर में और विशेष रूप से सोपोर में शांतिपूर्ण वातावरण कायम हुआ।

बरामदगी:

- | | | |
|-----------------|---|----|
| 1. एके-47 राइफल | - | 01 |
| 2. एके मैगजीन | - | 02 |
| 3. एके राउंड | - | 20 |
| 4. हैंड ग्रेनेड | - | 01 |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री दिलराज सिंह, निरीक्षक, मंजूर अहमद, हेड कांस्टेबल और खुर्शीद अहमद खान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/ पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22.06.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 63-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों के उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. शकील अहमद मीर,
एसजीसीटी
02. फारूक अहमद भट,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.01.2015 को लगभग 2300 बजे सोपोर पुलिस को मोहल्ला सोफी हमाम सोपोर में एक अज्ञात पाकिस्तानी एलईटी आतंकवादी की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। इस आसूचना पर कार्रवाई करते हुए 52/आर आर और सीआरपीएफ की

177वीं बटालियन के सहयोग से सोपोर पुलिस ने तुरंत लगभग 2300 बजे समूचे लक्षित क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। क्षेत्र सामान्यतः भीड़-भाड़ वाला और संकरी गलियों का घना नेटवर्क होने के कारण छिपे हुए आतंकवादियों को स्वाभाविक कवर उपलब्ध करा रहा था। क्षेत्र की स्थलाकृति और घनी अंधेरी दशाओं को देखते हुए, एसएसपी सोपोर, सीआरपीएफ के अधिकारियों से विचार-विमर्श करने के बाद, उप महानिरीक्षक उत्तरी कश्मीर रेंज बारामुल्ला ने अगली सुबह पाँच बजे तक अभियान को स्थगित करने का निर्णय लिया क्योंकि अनुपयुक्त समय पर अभियान को जारी रखने से बल कर्मियों को परिहार्य क्षति हो सकती थी। इसलिए घेरे को और सुदृढ़ किया गया। यह योजना बनाई गई कि अगली सुबह अग्रिम पुलिस दल और 52 बटालियन आरआर के सैन्य दल लक्ष्य की ओर सावधानीपूर्वक आगे बढ़ेंगे। आंतरिक घेराबंदी करने और सभी गलियों और उप-गलियों को सील करने के लिए अलग-अलग दल बनाए गए। मजबूत और ठोस अवरोध उपलब्ध कराने और उग्रवादियों को बचकर भागने से रोकने के लिए बाहरी घेराबंदी करने के लिए सीआरपीएफ की 177वीं बटालियन के सैन्य दल को तैनात किया गया। अगले दिन सुबह भोर में (14.01.2015 को) पुलिस और सीआरपीएफ द्वारा घर-घर की तलाशी करने का अभियान आरंभ किया गया और लक्ष्य को अलग-थलग करने के लिए सोपोर पुलिस तथा 52-आरआर द्वारा तलाशी लिए मकानों को तुरंत अपने कब्जे में ले लिया गया। चूंकि क्षेत्र काफी भीड़-भाड़ वाला था, इसलिए उप महानिरीक्षक-एनकेआर-बारामूला तलाशी लिए जा रहे मकानों से सिविलियनों की सुरक्षित निकासी में व्यक्तिगत रूप से शामिल थे क्योंकि यह कार्य काफी संवेदनशील था और इसमें काफी सावधानी और सतर्कता की आवश्यकता थी। सुरक्षित निकासी की प्रक्रिया में लगभग तीन घंटे का समय लगा और बिना किसी रूकावट के पूरा कर लिया गया। इस प्रक्रिया के दौरान उस मकान की पहचान कर ली गई, जहां आतंकवादी छिपा हुआ था और पहले लाउड स्पीकर का उपयोग करके आतंकवादी से समर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। जब तलाशी दल ने लक्षित मकान की ओर बढ़ने का प्रयास किया, तो उस पर छिपे हुए आतंकवादी की ओर से भारी गोलीबारी की गई। दलों ने सहनशीलता/धैर्य दिखाया और जवाबी गोलीबारी नहीं की क्योंकि यदि उस समय गोलीबारी की जाती तो सिविलियनों के मारे जाने की आशंका थी, क्योंकि घर का मालिक और उसका परिवार घर के अंदर था। लक्षित मकान से सिविलियनों को बाहर निकालने के लिए उप महानिरीक्षक एनकेआर ने अपने व्यक्तिगत पर्यवेक्षण में सुनियोजित रणनीति के तहत सुरक्षित (परिवार के सभी सदस्यों की) निकासी की।

इस समय आतंकवादी को निष्क्रिय करने के मुख्य कार्य को हाथ में लिया गया। 52 बटालियन-आरआर के दल के साथ एसजीसीटी शकील अहमद तथा कांस्टेबल फारूक अहमद को शामिल करके एक अग्रिम दल का गठन किया गया जिन्होंने मकान को सील कर दिया। उप महानिरीक्षक एनकेआर-बारामूला आतंकवादी की सही-सही स्थिति का पता लगाने और अग्रिम दल को कवर फायर देने के लिए स्वयं पास वाले मकान में गए। अधिकारी ने अपने 02 एस्कार्ट कर्मियों, के साथ अग्रिम दल को कवरिंग फायर उपलब्ध कराया जो आतंकवादी का पता लगाने और उसे निष्क्रिय करने में लगा हुआ था। अग्रिम दल के सदस्यों ने उस समय तक आतंकवादी को उलझाए रखा जब तक एसजीसीटी शकील अहमद तथा कांस्टेबल फारूक अहमद लक्षित मकान में प्रवेश नहीं कर गए। इसके अतिरिक्त, आतंकवादी को निष्क्रिय करने के लिए उप महानिरीक्षक एनकेआर-बारामूला लक्षित मकान के मुख्य द्वार तक पहुंच गए। इस समय आतंकवादी ने एक ग्रेनेड फेंका जो नहीं फटा। उसने यूबीजीएल के द्वारा दूसरा ग्रेनेड फेंकने का प्रयास किया लेकिन उप महानिरीक्षक उत्तर कश्मीर रेंज बारामूला ने उसे तब तक उलझाए रखा जब तक कि एसजीसीटी शकील अहमद और कांस्टेबल फारूक अहमद लक्षित मकान में प्रवेश नहीं कर गए और उसे गोलीबारी करने अथवा ग्रेनेड फेंकने का और मौका नहीं दिया जिससे पुलिस दल को गंभीर क्षति हो सकती थी। अग्रिम दल के उपर्युक्त अधिकारियों/पदाधिकारियों ने उप महानिरीक्षक एनकेआर-बारामूला के प्रभावी और सफल नेतृत्व में असाधारण साहस और सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया और इसके परिणामस्वरूप सुरक्षा बलों अथवा किसी व्यक्ति और सम्पत्ति की किसी क्षति के बिना मकान के अंदर अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में आतंकवादी को ढेर कर दिया गया। मारे गए आतंकवादी की पहचान पाकिस्तान से सम्बद्ध एलईटी संगठन के खूफिया उर्फ अरफद रिओ के रूप में की गई। उसके पास से 3 मैगजीन के साथ एके-47 राइफल, 8 राउंड, 01 यूबीजीएल, 02 यूबीजीएल ग्रेनेड और 01 उच्च विस्फोटक, 36 ग्रेनेड बरामद किए गए। इस संबंध में पुलिस स्टेशन तारजू, सोपोर में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 12/2015 दर्ज है।

इस मुठभेड़ में सर्वश्री शकील अहमद मीर, एसजीसीटी और फारूक अहमद भट, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 64-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री नज़ीर अहमद कुचे,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 06.05.2014 को, एसडीपीओ अवंतीपुरा, एसएचओ पुलिस स्टेशन अवंतीपुरा और उप निरीक्षक नज़ीर अहमद के साथ दादसारा क्षेत्र में रात्रि गश्त पर थे और उन्हें लगभग 2200 बजे दादसारा गांव के बाहर उग्रवादियों की गतिविधि के संबंध में एसपीओ से सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, 03 आरआर, 130 बटालियन, सीआरपीएफ और एसओजी एवं अन्य कार्मिकों की सहायता से क्षेत्र में घात लगाई गई। घात दल ने संदिग्ध व्यक्तियों की गतिविधि देखी जिन्हें अपनी पहचान बताने के लिए कहा गया इसके बजाय उन्होंने दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की जिसका प्रभावी रूप से जवाब दिया गया। दोनों ओर से आधा घंटे तक गोलीबारी हुई। चूंकि पूर्ण अंधेरे को देखते हुए इससे क्षति होने की संभावना थी, इस जोखिम को टालने के लिए सभी संभव सावधानियां बरती गईं। यह सुनिश्चित करना मुश्किल था कि उग्रवादी जिंदा हैं, मारे गए हैं अथवा अंधेरे से बचकर भाग गए हैं। पुलिस दल के साथ उप निरीक्षक नज़ीर अहमद आगे बढ़ने के लिए स्वयं आगे आए और अपनी जान को जोखिम में डालकर उस क्षेत्र की ओर रेंगकर गए जहां से उग्रवादियों ने गोलीबारी की थी। पुलिस को अपनी ओर आता देखकर उग्रवादियों ने अचानक गोलीबारी की और पुलिस दल ने आमने सामने की लड़ाई में जवाबी कार्रवाई की और एक उग्रवादी घायल हो गया। पुलिस दल ने पूरी रात उग्रवादियों का पता लगाने के अनवरत प्रयास किए, तथापि, उनका पता नहीं लगा सके। प्रातः भोर में मुठभेड़ स्थल पर खून के धब्बे देखे गए और खून की मात्रा दर्शा रही थी कि एक या दो उग्रवादी गंभीर रूप से घायल हुए होंगे और बाद में खून बहने के कारण मर गए होंगे। घटना स्थल से गोलाबारूद के साथ एक एके 47 राइफल बरामद की गई। सभी पुलिस प्रतिष्ठानों और सुरक्षा बल की यूनिटों को मारे गए उग्रवादियों के शवों का पता लगाने का प्रयास करने के लिए सतर्क किया गया। पुलिस दल को उग्रवादी का शव गांव पंजू में होने के संबंध में सूचना मिली, बाद में जिसकी पहचान सैयद माविया निवासी पाकिस्तान के रूप में की गई। इस संबंध में पुलिस स्टेशन अवंतीपुरा में आरपीसी की धारा 307 तथा आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 51/2014 दर्ज है।

मारा गया उग्रवादी दिनांक 21.04.2014 को मोहम्मद अनवर शेख पुत्र सादिक शेख, निवासी अमलार नाल (लम्बरदार) की हत्या सहित क्षेत्र में अनेक विध्वंसक गतिविधियों में शामिल था जिसके लिए पुलिस स्टेशन अवंतीपुरा में आरपीसी की धारा 302 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 39/2014 दर्ज है। क्षेत्र में उसकी उपस्थिति पंचों/सरपंचों के लिए बड़ा खतरा थी।

इस मुठभेड़ में श्री नज़ीर अहमद कुचे, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.05.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 65-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार /वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- | | |
|---|---------------------------------------|
| 1. इरशाद हुसैन राथेर,
उप पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |
| 2. इरशाद अहमद रेशी,
निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26 अक्टूबर, 2013 को शोपियां पुलिस को गांव हुशंगपुरा में उग्रवादियों की उपस्थिति के संबंध में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, 62 बटालियन आरआर और सीआरपीएफ की चतुर्थ बटालियन की सहायता से श्री इरशाद हुसैन राथेर, उप पुलिस अधीक्षक, इमामसाहिब के नेतृत्व में पुलिस दल ने क्षेत्र की घेराबंदी की और घर-घर तलाशी आरंभ की। तलाशी के दौरान उग्रवादियों ने तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की। अभियान को सफल बनाने के लिए श्री इरशाद हुसैन राथेर उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) इमामसाहिब और निरीक्षक इरशाद अहमद रेशी (एसएचओ पुलिस आपरेशन शोपियां) की कमान में दो दल बनाए गए। उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) इमामसाहिब के नेतृत्व वाले पहले दल ने घेराबंदी किए गए क्षेत्र के एक ओर मोर्चा संभाला और निरीक्षक इरशाद अहमद ने अपने समूह के साथ घने बागान की ओर से पोजीशन ली। घेरे को सुदृढ़ करने के बाद उग्रवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। जिन्होंने आदेश को अस्वीकार करते हुए अभियान दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की और बचकर भागने का प्रयास किया। उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन), इमामसाहिब और निरीक्षक इरशाद अहमद रेशी आतंकवादियों की गोलीबारी में आने पर बाल-बाल बच गए। इस समय उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन), इमामसाहिब और निरीक्षक इरशाद अहमद रेशी ने अपनी जान की परवाह किए बिना आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की और जारी गोलीबारी के दौरान एक खूंखार उग्रवादी मारा गया, बाद में जिसकी पहचान मोहम्मद अब्बास रेशी उर्फ आबिद पुत्र बसीर अहमद रेशी, निवासी अलीशाहपुर के रूप में हुई। इस संबंध में पुलिस स्टेशन जैनापुरा में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एफआईआर सं. 78/2013 के द्वारा एक मामला दर्ज किया गया था।

उपरोक्त पुलिस अधिकारियों ने न केवल सैन्य दलों/पुलिस दलों का प्रभावी रूप से और समझदारी के साथ पर्यवेक्षण और नेतृत्व किया बल्कि उपर्युक्त एलईटी कमांडर का सफाया करने की भी पहल की। इन अधिकारियों ने सूझबूझ और अच्छी पुलिस व्यवस्था के साथ अभियान के दौरान सिविलियनों को हताहत होने से रोकने के लिए साहस का प्रदर्शन किया। आतंकवादियों ने बलों को हानि पहुंचाने के अपने सभी प्रयास किए। तथापि, सैन्य दल अपनी एकाग्रता भंग किए बिना और दिमाग का अच्छा इस्तेमाल करके वीरतापूर्वक लड़ा और उनकी घृणित योजनाओं को विफल किया। दोनों अधिकारियों ने एलईटी संगठन के उपर्युक्त खूंखार कमांडर का सफाया करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

की गई बरामदगी:

1. राइफल एके-47	-	01
2. मैगजीन एके-47	-	03
3. राउंड एके-47	-	40
4. हैंड ग्रेनेड	-	01
5. पिस्तौल	-	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री इरशाद हुसैन राथेर, उप पुलिस अधीक्षक और इरशाद अहमद रेशी, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार /पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.10.2013 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 66-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- स्टैंजिन ओस्टल,
उप निरीक्षक
- फयाज अहमद,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 16/01/2015 को लगभग 0730 बजे सोपोर पुलिस को सरपंच फारूक अहमद भट पुत्र अब्दुल जब्बार भट के घर में चूरा सोपोर में एक पाकिस्तानी एलईटी आतंकवादी की उपस्थिति के बारे में विश्वासनीय आसूचना प्राप्त हुई। आतंकवादी क्षेत्र में, विशेष रूप से सोपोर नगर में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने की योजना बना रहा था। इस विशिष्ट आसूचना जानकारी के आधार पर कार्रवाई करते हुए 52 आर आर एवं 177 बटालियन सीआरपीएफ के साथ सोपोर पुलिस तुरंत हरकत में आई और बच निकलने के सभी संभावित मार्गों को बंद करके सम्पूर्ण क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। अग्रिम दल का नेतृत्व एसएसपी पुलिस जिला सोपोर के समग्र पर्यवेक्षण में हेड कांस्टेबल फयाज अहमद और अन्य अधिकारियों/पदाधिकारियों तथा एसपीओ सहित उपनिरीक्षक स्टैंजिन ओस्टल ने किया तथा अभियान के निष्पादन हेतु सैन्य दलों को दो भागों में विभाजित कर दिया गया। सैन्य दलों का पहला कार्य आसपास के घरों से सिविलियनों को सुरक्षित निकालना था और उसके लिए एसएसपी पीडी सोपोर के पर्यवेक्षण में एक सुनियोजित रणनीति बनाई गई। सामान्य रूप से अभियान संबंधी घटक और विशेष रूप से उपरोक्त पुलिस कार्मियों ने प्रतिकूल स्थिति में असाधारण कर्तव्य भावना का प्रदर्शन किया और अपनी जानों की परवाह किए बिना लक्षित क्षेत्र से सिविलियनों, विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं की सुरक्षित निकासी को प्राथमिकता दी। यह सूचना पक्की थी कि आतंकवादी दक्षिण में आवासीय मकानों वाले घने सेबों के पेड़ों से घिरे फलोद्यानों के क्षेत्र में स्थित सरपंच के घर में छिपा हुआ है। लक्षित घर के पास से एक संकरा पानी का नाला बह रहा था और इस बात की संभावना थी कि आतंकवादी अपने बचकर निकलने के लिए नाले का उपयोग कर सकता है। इस संभाव्यता में, अंधेरे में उसे पकड़ना असंभव होता, क्योंकि वह कुछ दूरी पर स्थित घने बसे गांव में शरण ले सकता था और रात के समय में सैन्य दलों द्वारा उसका पता लगाना मुश्किल हो सकता था। संभावनाओं को दिमाग में रखते हुए एक योजना बनाई गई और कुछ कार्मिकों को पानी के नाले में तैनात किया गया तथा उपनिरीक्षक स्टैंजिन ओस्टल तथा हेड कांस्टेबल फयाज अहमद के नेतृत्व वाले दल को तब तक कवर-अप करने का निदेश दिया गया जब तक बचकर भागने के सभी संभावित मार्गों को समुचित रूप से सील कर दिया जाता। योजना के अनुसार, उपरोक्त पुलिस कार्मियों सहित अग्रिम दल ने अहाते में प्रवेश किया और मुख्य द्वार को सील कर दिया तथा अंतिम हमले के लिए अवरोध को सुदृढ़ किया। दल लक्षित घर के निकट सेब के पेड़ों पर चढ़ गया, स्लैब पर पहुंच कर छत पर कब्जा कर लिया। अग्रिम दल ने आतंकवादियों को तब तक पता नहीं चलने दिया जब तक उपरोक्त पुलिस कार्मियों ने आतंकवादी को हक्का बक्का करते हुए तीव्रता से उस कमरे में प्रवेश नहीं कर लिया जहां आतंकवादी छिपा हुआ था। पुलिस दल ने उग्रवादी को दबोच लिया। यद्यपि उसने अपनी एके-47 राइफल को थामने और पुलिस दल पर गोली चलाने का हरसंभव प्रयास किया लेकिन उपरोक्त पुलिस कर्मियों ने अपना धैर्य नहीं खोया और उसे हानि पहुंचाने का एक भी अवसर नहीं दिया और अंततः दल हथियार/गोलाबारूद को अपने कब्जे में लेने में सफल हुआ और किसी क्षति के बिना उसे हथकड़ी लगा दी। उक्त एलईटी आतंकवादी की पहुंच आधुनिक हथियारों और पर्याप्त गोलाबारूद तक थी और यदि उसे अपने अवैध हथियार चलाने का एक भी अवसर मिल जाता तो पुलिस दल को गंभीर क्षति पहुंच सकती थी और यहां यह उल्लेखनीय है कि तात्कालिक अभियान सर्जिकल था और सभी तरह से सुनियोजित था। चूंकि आतंकवादी भूतल में छिपा हुआ था और उसके पास भागने अथवा सैन्य दल को गोलीबारी में उलझाने का उपयुक्त अवसर था, लेकिन उपरोक्त पुलिस टीम ने अपनी विशिष्ट तैयारियों का उपयोग किया और उसे गिरफ्तार करने में सफल रहे। गिरफ्तार आतंकवादी ने अपनी पहचान एलईटी संगठन के शीर्ष कमांडर जुबैर अहमद मुगल पुत्र अब्दुल राशिद मुगल निवासी गुलशन इकबाल कराची, पाकिस्तान के रूप में बताई। इस संबंध में पुलिस स्टेशन तारजू में आयुध अधिनियम की धारा 7/25, एफ, अधिनियम की धारा 14 और यूएल अधिनियम की धारा 13, 19, 20 के तहत एफआईआर सं. 14/2015 के द्वारा एक मामला दर्ज किया गया था।

बरामदगी:

1. एके-47 राइफल	-	01
2. एके मैगजीन	-	03
3. एके राउंड	-	90
4. थैली	-	01

इस मुठभेड़ में सर्वश्री स्टैंजिन ओस्टल, उप निरीक्षक और फयाज अहमद, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 67-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सैयद सजाद हुसैन,
उप पुलिस अधीक्षक
02. शमसुद्दीन लोन,
एसजीसीटी

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 17.01.2015 को लगभग 2125 बजे, सैदपुरा, सोपोर में आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट आसूचना के आधार पर, 22-आरआर/177 बटालियन सीआरपीएफ के साथ सोपोर/श्रीनगर पुलिस के संयुक्त घटक हरकत में आए और पूरे क्षेत्र को घेर लिया। परिस्थितियों के मद्देनजर, अभियान को अगले दिन सुबह तक रोक दिया गया और घेराबंदी को और मजबूत कर दिया गया। 22 आरआर के सैन्य दलों और पुलिस दलों का भीतरी घेराबंदी में रखा गया, जबकि 177 बटालियन सीआरपीएफ को बाहरी घेराबंदी करने और उस विशिष्ट स्थान की ओर आने वाले सभी प्रवेश/प्रस्थान स्थानों को सील करने का कार्य सौंपा गया। अगले दिन, भोर के समय, सोपोर/श्रीनगर पुलिस द्वारा हर घर की तलाशी की गई और तलाशी किए गए घरों पर 22 आरआर के सैन्य दलों और पुलिस द्वारा कब्जा कर लिया गया। हर घर की तलाशी लगभग 0730 बजे शुरू हुई और सभी अधिकारियों/कर्मिकों को निदेश दिया गया कि नागरिकों, विशेषकर बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों को किसी भी हालत में क्षति न पहुंचने पाए। अग्रिम दल को दो हिस्सों में बांटा गया, एक दल लक्ष्य के मुख्य प्रवेश द्वार की ओर चला गया और दूसरा दल लक्षित घर के पीछे की ओर बढ़ रहा था। लक्षित घर, जिसका मालिक अब्दुल गफ्फार डार पुत्र मोहम्मद बशीर डार निवासी डार मोहल्ला था, के बिल्कुल नजदीक पहुंचने पर अग्रिम दल पर आतंकवादियों द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी गई। जैसे ही आतंकवादियों ने गोलीबारी शुरू की, नजदीक के घरों से शोरगुल सुनाई दिया। शुरुआत में कादरी एसपी (पीसी) श्रीनगर, सजाद हुसैन उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) श्रीनगर और एसजीसीटी शमसुद्दीन और कुछ अन्य पुलिस कर्मिकों/एसपीओ के नेतृत्व वाले अग्रिम दल को नजदीक के घरों से नागरिकों को सुरक्षित रूप से बाहर निकाले जाने तक गोलीबारी रोकने का निर्देश दिया गया। पुलिस और 22 आरआर वाले बैकअप दल को भी बैकअप/अतिरिक्त सहायता प्रदान करने के लिए अग्रिम दल के पीछे बाई लेन के नजदीक कुछ दूरी पर रखा गया। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए, लक्षित घर के आस-पास घेराबंदी और मजबूत कर दी गई। चूंकि, स्थिति प्रतिकूल और आक्रामक थी, इसलिए अग्रिम घटक दल के उपर्युक्त पुलिस कर्मियों द्वारा ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में प्रदर्शित उच्चकोटि का प्रयास और दक्षता, जिसके फलस्वरूप नजदीक के घरों से लगभग 60 लोगों को बाहर निकाला गया, विश्वास से परे थी। आतंकवादी लोगों को अपने घरों से निकलने नहीं दे रहे थे, वस्तुतः उन्होंने लोगों को बाहर निकलने से रोकने के लिए घरों पर गोलीबारी की। इस परिस्थिति में, अधिकारियों/कर्मिकों द्वारा आतंकवादियों को एक ओर उलझाए रखते हुए एक सुनियोजित रणनीति बनाई गई और दूसरी ओर उपर्युक्त अधिकारियों/कर्मिकों के नेतृत्व वाला अग्रिम दल फंसे नागरिकों को बाहर निकालने के लिए रक्षक वाहनों में नजदीक के घरों की ओर चला गया। ऐसे छह प्रयासों में, नजदीक के घरों से सभी नागरिकों को जिनमें 17 महिलाएं और 13 बच्चे शामिल थे। सुरक्षित रूप से बाहर निकालने के पश्चात, अंतिम हमले के लिए योजना तैयार की गई और घर के पीछे की ओर तैनात अग्रिम दल के एक घटक को आगे की ओर जाने का आदेश दिया गया और पीछे के हिस्से को रणनीतिक ढंग से खुला छोड़ दिया गया तथा बच कर भागने वाले आतंकवादी को सैन्य दलों द्वारा कुछ दूरी पर पकड़ लिया जाए। आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए निदेश दिया गया, जिस पर उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। इसलिए आतंकवादियों को घर से बाहर आने के लिए मजबूर करने के लिए उपर्युक्त अधिकारियों/कर्मिकों वाला एक दल आड़ में लक्षित घर की ओर आगे बढ़ा और लक्षित घर पर गोलीबारी करने लगा। अत्यधिक संकटकालीन परिस्थितियों में, उपर्युक्त अधिकारी/कर्मिक खुले में बाहर आ गए और घिरे हुए आतंकवादियों को चुनौती देते हुए बगल की खिड़की की ओर दौड़ पड़े। गोलीबारी की मात्रा और तीव्रता को भांपते हुए एक आतंकवादी ने पीछे की तरफ से भागने की कोशिश की जबकि दूसरे आतंकवादी ने सैन्य दलों को गोलीबारी में उलझाए रखा। यह देखे हुए, उपर्युक्त अधिकारियों/कर्मिकों ने आतंकवादियों को लक्षित घर के मुख्य अहाते में अचम्भे में डाल दिया और जवाबी गोलीबारी में एक आतंकवादी को मौके पर ही मार गिराया। दूसरा आतंकवादी अभी भी मकान के अंदर था और अग्रिम दल को चुनौती दे रहा था। इस समय संस्तुत अधिकारियों ने विलक्षण बुद्धिमानी का प्रदर्शन किया, और खुद को एक अखरोट के पेड़ के पीछे छिपा लिया और अंतिम हमले की प्रतीक्षा की। यह देखते हुए घिरा हुआ आतंकवादी घर से बाहर आ गया और मारने के इरादे से अग्रिम दल पर दो ग्रेनेड फेंके और गोलियों की बौछार करने लगा। अग्रिम दल अपनी जान की परवाह किए बिना बाहर आ गया और आत्मरक्षा में आतंकवादी पर गोलीबारी करने लगा और उसे मौके पर ही मार

गिराया। सामान्य रूप से अभियान दल और विशेष रूप से उपर्युक्त अधिकारियों/कार्मिकों द्वारा प्रदर्शित कार्य के प्रति निस्वार्थ समर्पण और अतुलनीय साहस से जेईएम संगठन के दो कुख्यात आतंकवादियों को बिना किसी आनुषंगिक क्षति के मार गिराया गया। मुठभेड़ स्थल से हथियारों/गोलाबारूद का एक बड़ा जखीरा बरामद किया गया। इस संबंध में आरपीसी की धारा 307 और भारतीय आयुध की धारा 7/27 के तहत तदनुसार एफआईआर सं. 7/2015 के द्वारा पुलिस स्टेशन सोपोर में एक मामला दर्ज किया गया था।

बरामदगी:-

1. एके 47 राइफल	-	02
2. एके मैगजीन	-	06
3. रेडियो सेट	-	02
4. एके राउण्ड	-	140
5. यूबीजीएल ग्रेनेड	-	02
6. कम्पास	-	01
7. मैट्रिक्स शीट	-	06

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सैयद सजाद हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक और शमसुद्दीन लोन, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 68-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. इफ्तखार अहमद,
उप पुलिस अधीक्षक
2. सुरेश सिंह,
एसजीसीटी
3. गुरजीत सिंह,
एसजीसीटी

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 25 मई, 2014 को, कुलगाम पुलिस को नवपुरा- फ़िसाल गांव में आतंकवादियों के एक गुट की मौजूदगी के बारे में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई जो उस क्षेत्र में कुछ विनाशकारी कार्रवाई करने की योजना बना रहे थे। तत्काल एक संयुक्त रणनीति तैयार की गई और 1 आरआर, 18/90 बटालियन सीआरपीएफ की सहायता से पुलिस एस के आर अनंतनाग के उप महानिरीक्षक की कमान में और अपर पुलिस अधीक्षक/उप पुलिस अधीक्षक (अभियान) कुलगाम के पर्यवेक्षण में एक अभियान शुरू किया गया। तत्काल पूरे गांव के आस-पास घेराबंदी कर दी गई और छिपे हुए आतंकवादियों को बाहर आने और अपने हथियार/गोलाबारूद डालने को कहा गया। तथापि, आतंकवादियों के हठी गुट ने अभियान दलों को हताहत करने के लिए अपने अवैध स्वचालित हथियारों से तेज गोलीबारी की और अपने लिए बचकर निकलने का मार्ग बनाने का प्रयास किया। गोलीबारी नियमित अन्तरालों पर पूरे दिन चली। यह गोलीबारी लगभग 5 से 6 घंटों तक चली और दो खूंखार आतंकवादियों को मार गिराए जाने के पश्चात समाप्त हुई, जिनकी पहचान एलईटी गुट के (1) जुबैर भट

पुत्र नंत अहमद भट निवासी नवपुरा और (2) इशफाक भट पुत्र गाजी मोहिदीन भट निवासी चाकू शोपियां के रूप में की गई और मुठभेड़ स्थल से हथियार/गोलाबारूद का बड़ा जखीरा बरामद हुआ। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन यारीपुरा में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत प्राथमिकी सं. 40/2014 के द्वारा एक मामला दर्ज किया गया है।

उपर्युक्त पुलिस कर्मियों की शौर्यपूर्ण कार्रवाई ने इस प्रतिष्ठित संगठन के सम्मान में और अधिक वृद्धि की है और आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए आगे और प्रयास करने के लिए पुलिस के सभी वर्गों को प्रेरित करने में बड़ी कारगर सिद्ध हुई है। इन आतंकवादियों के मारे जाने से, सामान्य लोगों ने भी राहत की सांस ली है।

उपर्युक्त पुलिस पार्टी द्वारा प्रदर्शित दक्षता और विलक्षण साहस अद्भुत था। ऐसी परिस्थितियों में एक प्रभावकारी अभियान चलाने में उनका कमान/नियंत्रण और अभियान संबंधी कौशल सराहनीय था जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों का लंबे समय तक पीछा करने के पश्चात मिशन पूरा हुआ। इस अभियान की एक अन्य विशिष्टता यह थी कि पुलिस ने अपनी स्वयं की आसूचना के आधार पर अनन्य रूप से इस मिशन को पूरा किया। एक अत्यधिक अननुमेय और जोखिमपूर्ण वातावरण में किसी प्रकार की सम्पाश्विक क्षति के बिना इस सफल अभियान को अंजाम देना इसकी एक बड़ी उपलब्धि रही।

बरामदगी:

- | | | |
|------------------------|---|------------------|
| 1. एके 56 राइफल | - | 01 |
| 2. एके 47 राइफल | - | 01 (क्षतिग्रस्त) |
| 3. मैगजीन एके 47 | - | 04 |
| 4. जिंदा राउंड एके-47 | - | 67 |
| 5. पिस्तौल चीन निर्मित | - | 02 (क्षतिग्रस्त) |

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री इफतखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक, सुरेश सिंह, एसजीसीटी और गुरजीत सिंह, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.05.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 69-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- | | |
|------------------------------------|---------------------------------------|
| 01. रियाज अहमद गनी,
उप निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 02. गु.अहमद मलिक
हेड कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 27.02.2015 को श्री शबीर अहमद, उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) को एक विशिष्ट जानकारी प्राप्त हुई कि ग्राम राठसुना ताल में उग्रवादियों का एक गुट छिपा हुआ है। जानकारी को कार्रवाई योग्य बनाने के लिए आगे और अधिक जानकारी जुटाई गई और तदनुसार उपर्युक्त घनी आबादी वाले क्षेत्र में अभियान शुरू करने के लिए 03 दल, एक उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) ताल के पर्यवेक्षण/नियंत्रण में, दूसरा उप निरीक्षक एसएचओ पुलिस स्टेशन ताल के नेतृत्व में और तीसरा उप-निरीक्षक रियाज अहमद एवं एक अन्य उप-निरीक्षक की कमान और नियंत्रण में गठित किए गए। लगभग सायं 7 बजे 05 घरों के समूह वाले लक्षित क्षेत्र को चारों ओर से

घेर लिया गया। प्रारम्भिक घेराबंदी करने के पश्चात, 42 आरआर, 185 बटालियन सीआरपीएफ और पीसी संगम से भी सहायता मांगी गई। इसी बीच, एसएसपी अवंतीपुरा भी अपने क्यूआरटी के साथ अभियान में शामिल हो गए। सभी शामिल बलों की सहायता से चारों ओर से घेराबंदी मजबूत कर दी गई और अगली सुबह की पौ फटने तक अभियान को रोकने का निर्णय लिया गया। इसी बीच, उस क्षेत्र में सुरक्षा बलों की मौजूदगी को देखकर उग्रवादी अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए घर से बाहर आ गए। उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) त्राल ने पुलिस दल के साथ गोलीबारी का जबाव दिया जिससे उग्रवादी पीछे हटने के लिए विवश हो गए और घेराबंदी को तोड़ने और उस स्थान से बच निकलने का उनका प्रयास विफल हो गया। शीघ्र ही उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) त्राल ने उप निरीक्षक रियाज़ अहमद और हेड कांस्टेबल गु. अजमद के साथ अपनी जान की परवाह किए बिना विलक्षण साहस और बहादुरी के साथ रणनीतिक ढंग से कुशलतापूर्वक लक्षित क्षेत्र से फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालने का प्रबंध किया। इसी दौरान, यह पता चला कि एक रूग्ण बुजुर्ग व्यक्ति लक्षित मकान के भूतल में फंस गया है। तत्पश्चात, यह निर्णय लिया गया कि उप पुलिस अधीक्षक पीसी त्राल के नेतृत्व वाला दल उस घर में प्रवेश करेगा जबकि एक उप निरीक्षक के नेतृत्व वाला दल उग्रवादियों को गोलीबारी में उलझाए रखेगा। उप पुलिस अधीक्षक पीसी त्राल ने अभियान संबंधी अत्यधिक क्षमता और साहस का प्रदर्शन करते हुए उप निरीक्षक और उनके दल द्वारा प्रदान किए गए कवर फायर के अंतर्गत एक छोटे दल के साथ रणनीतिक ढंग से घर में प्रवेश किया। पुलिस दल ने बिस्तर पर रूग्ण व्यक्ति को सहारा दिया और ऊपर स्थित उग्रवादियों को गोलीबारी में उलझाने के बाद घर के परिसर के मुख्य द्वार की ओर दौड़ पड़े। इसी बीच, पब्लिक एड्रेस सिस्टम का प्रबंधन किया गया और उग्रवादियों को आत्मसमर्पण के लिए कहा गया, जिसकी उन्होंने अवहेलना की और वे चारों ओर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए खुले में आ गए। इस स्थिति में पुलिस पार्टी ने अत्यधिक साहस का प्रदर्शन किया और अपने जीवन की परवाह किए बगैर नजदीक से प्रभावकारी जवाबी गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप एक उग्रवादी मारा गया। दूसरे उग्रवादी ने अभियान बलों को अधिक से अधिक हताहत करने के इरादे से एक दीवार के पीछे पोजीशन ले ली, परन्तु हेड कांस्टेबल गुलाम अहमद एवं अन्य पुलिस कर्मी बड़ी कुशलता और रणनीतिक ढंग से छिपे हुए उग्रवादी के नजदीक चले गए, जो भयभीत हो गया और खुले में आ गया तथा अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा, परन्तु पुलिस दल की सतर्कता और व्यावसायिक कौशल के कारण उक्त उग्रवादी भी मौके पर मारा गया। मारे गए उग्रवादियों की पहचान शबीर अहमद मीर उर्फ सुहैल पुत्र अब्दुल रहमान मीर निवासी दादसारा और इदरीस हुसैन शाहा पुत्र शरीफ-उद-दीन शाह निवासी नौपोरा के रूप में की गई। मुठभेड़ स्थल से हथियार/गोलाबारुद का एक बड़ा जखीरा बरामद किया गया और इस संबंध में पुलिस स्टेशन त्राल में आयुध अधिनियम की धारा 7/27 तथा आरपीसी की धारा 307 के तहत प्राथमिकी संख्या 27/2015 के रूप में एक मामला दर्ज है।

बरामदगी:

1. राइफल एके 47	-	02
2. मैगजीन एके 47	-	06
3. राउंड	-	80

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रियाज अहमद गनी, उप निरीक्षक और गु. अहमद मलिक, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.02.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 70-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, झारखण्ड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बचन देव कुजूर,
उप पुलिस अधीक्षक

02. दुखिया मुरमू,
कांस्टेबल

(मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 18 जून, 2015 को लगभग 1400 बजे अपर पुलिस अधीक्षक (आपरेशन), पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर को अपने स्त्रोतों से एक जानकारी प्राप्त हुई कि 5-6 नक्सलवादियों (एलडब्ल्यूई) के मुसाबनी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत बागजता यूरेनियम माइन्स के पीछे बिक्रमपुर में टुस्सू मेला देखने के लिए आने की संभावना है और वे कोई बड़ी विनाशकारी कार्रवाई करने की योजना बना रहे हैं। सूचना प्राप्त होने के पश्चात, अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन और उप पुलिस अधीक्षक मुसाबनी बचनदेव कुजूर ने तत्काल सादी पोशाक में 15 कार्मिकों की छोटी यूनिट गठित की जिसमें अंगरक्षक और 193 बटालियन सी.आर.पी.एफ. की क्यूएटी यूनिट मुसाबनी शामिल थी और वे तुरंत उस स्थल की ओर निकल पड़े।

लगभग 17:45 बजे अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन और उप पुलिस अधीक्षक, बचनदेव कुजूर के नेतृत्व में पुलिस दल शीघ्र लक्षित क्षेत्र पहुंच गया। अपर पुलिस अधीक्षक, अभियान के नेतृत्व वाला पुलिस दल अपने हथियार और पहचान छिपाता हुआ टुस्सू मेले की ओर रणनीतिक ढंग से आगे बढ़ा। अपर पुलिस अधीक्षक, आपरेशन के मुखबिरों ने हथियारों से तैस माओवादियों की ओर इशारा किया जो जानकारी की तुलना में संख्या में दुगुने थे। नक्सलवादियों की संख्या अधिक होने के बावजूद, अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन ने उत्कृष्ट और सावधानीपूर्ण कार्रवाई करते हुए सैन्य बलों को रणनीतिक स्थानों पर तैनात कर दिया। अचानक नक्सलवादियों ने पुलिस बलों को मारने के लिए अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य बलों ने रक्षात्मक पोजीशन ले ली और जवाबी कार्रवाई की और नक्सलवादियों पर आत्मसमर्पण के लिए दबाव डालना भी शुरू कर दिया। परस्पर गोलीबारी में, एक नक्सलवादी बहुत नजदीक से गोलीबारी कर रहा था, और अपर पुलिस अधीक्षक, आपरेशन ने कांस्टेबल दुखिया मुरमू (अपर पुलिस अधीक्षक, आपरेशन के अंगरक्षक) और 193 बटालियन सीआरपीएफ के कांस्टेबल/जीडी राजेश कुमार विश्वकर्मा को उक्त नक्सलवादी को झपटकर पकड़ने का निदेश दिया। वामपंथी उग्रवादी लगातार पुलिस दल की ओर गोलीबारी करते रहे, जिसके परिणामस्वरूप कांस्टेबल दुखिया मुरमू के सिर में एक गोली लग गई और अपर पुलिस अधीक्षक, आपरेशन के भी जांघ के नजदीक चोट लग गई। उप पुलिस अधीक्षक, बचनदेव कुजूर तुरंत घायल कांस्टेबल दुखिया मुरमू को मुसाबनी में निकटतम पीएचसी अस्पताल में ले गए।

अपर पुलिस अधीक्षक, आपरेशन ने कांस्टेबल/जीडी राजेश कुमार विश्वकर्मा के साथ जान को खतरे की परवाह किए बिना नक्सलवादियों का पीछा किया जो पुलिस बलों को लक्ष्य बनाकर गोलीबारी कर रहे थे। अपर पुलिस अधीक्षक, आपरेशन और कांस्टेबल/जीडी राजेश कुमार विश्वकर्मा ने लगातार नियंत्रित गोलीबारी की और साथ-साथ रेंगते हुए नक्सलवादियों के निकट पहुंच गए जो भारी भीड़ और अंधेरे की आड़ में छिपकर गोलीबारी कर रहे थे। हजारों की संख्या में ग्रामीणों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पुलिस की ओर से भी जवाबी गोलीबारी होती रही। तलाशी के दौरान एक नक्सलवादी मिला जिसका बहुत ज्यादा खून बह रहा था और घायल नक्सलवादी के अलावा एक स्वदेश निर्मित .315 एमएम की पिस्तौल और 05 जिंदा कारतूस (.315एमएम) भी बरामद हुए। घायल नक्सलवादी को तुरंत पीएचसी, मुसाबनी लाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत लाया गया घोषित कर दिया। मृत नक्सलवादी की बाद में कुंवर मुरमू उर्फ झोरू, ग्राम-डलमाकोचा, पुलिस स्टेशन मुसाबनी, जिला जमशेदपुर, पूर्वी सिंहभूमि के रूप में पहचान की गई। कुंवर मुरमू उर्फ झारू गुराबंघा एलडब्ल्यूई मुसाबनी पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा 147/148/149/302, आयुध अधिनियम की धारा 27 और सीएलए अधिनियम की धारा 17 के तहत दिनांक 16-10-10 के मामला सं. 83/10 और भारतीय दंड संहिता की धारा 147/148/149/302 आयुध अधिनियम की धारा 27 और सीएलए अधिनियम की धारा 17(i)(ii) के तहत दिनांक 18.01.2014 के मुसाबनी पुलिस स्टेशन के मामला संख्या 05/14 में वांछित था।

कांस्टेबल दुखिया मुरमू को बेहतर उपचार के लिए पीएचसी, मुसाबनी द्वारा टीएमएच अस्पताल, टाटा नगर जमशेदपुर में भेज दिया गया था। 04 दिनों के गहन उपचार के पश्चात उसकी मृत्यु हो गई।

इस संबंध में भारतीय दंड संहिता की धारा 147/148/149/323/324/326/353/307, आयुध अधिनियम की धारा 25(1-ख) क/26/27 और सीएलए अधिनियम की धारा 17(i)(ii) के तहत दिनांक 18.01.2015 के मुसाबनी पुलिस स्टेशन में मामला सं. 04/15 के रूप में एक मामला दर्ज किया गया।

इस मुठभेड़ में सर्वश्री बचन देव कुजूर, उप पुलिस अधीक्षक और स्व. दुखिया मुरमू, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 71-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, झारखण्ड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सुबोध लकड़ा
उप निरीक्षक
02. राजा राम सिंह,
हवलदार
03. शेम टोप्पनो,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कवाजोर के वन क्षेत्र में बिक्रम गोपे उर्फ बारूद गोपे (बानो और कोलिबेरा क्षेत्र के पीएलएफआई एरिया कमांडर) की अपने दस्ते के 8-10 सदस्यों के साथ मौजूदगी के बारे में दिनांक 31/08/2014 आसूचना प्राप्त होने के पश्चात, पुलिस अधीक्षक सिमडेगा और कमांडेंट 94 बटालियन सीआरपीएफ द्वारा एक संयुक्त अभियान की योजना तैयार की गई। योजना के अनुसार, सहायक कमांडेंट सुनील कुमार शर्मा के नेतृत्व में झारखंड पुलिस के 12 कार्मिकों में शामिल राजाराम, हेड कांस्टेबल, कांस्टेबल शेम टोप्पनो एवं उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा (ऑफिसर इन कमान बानो पुलिस स्टेशन) सहित ए/94 बटालियन सीआरपीएफ के 18 कार्मिकों का एक दल 1000 बजे मोटरसाइकिलों पर अपने संबंधित स्थानों से निकल पड़ा और 1200 बजे ग्राम बिरता में मिला। उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा (ऑफिसर इन कमान बानो पुलिस स्टेशन) सहायक कमांडेंट सुनील कुमार शर्मा और सहायक कमांडेंट रणजीत मंडल ने योजना पर पुनः विचार-विमर्श किया और आगे लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ गए। लक्षित क्षेत्र के नजदीक पहुंचने पर, कमांडरों ने सभी मोटरसाइकिलें कावाजोर वन क्षेत्र के बाहर छोड़ने और शेष दूरी कच्चे रास्ते से पैदल तय करने का निर्णय लिया। दल ने उस क्षेत्र के पूर्वी भाग से घेराबंदी करके कावाजोर वन क्षेत्र के पश्चिमी भाग को कवर करने का प्रयास किया। लगभग 1425 बजे, स्काउट ने जंगल में तिरपाल का बना हुआ एक टेंट (छिपने का ठिकाना) देखा और अपने निकटतम कमांडर उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा और सहायक कमांडेंट रणजीत मंडल को सूचित किया। उक्त सूचना सभी कमांडरों के साथ साझा की गई और बाकी सैन्य दलों को सतर्क कर दिया गया। उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा, सहायक कमांडेंट सुनील कुमार शर्मा और सहायक कमांडेंट रणजीत मंडल ने छिपने के ठिकाने को 'यू' पैटर्न में घेरने की आवश्यकता महसूस की ताकि बच कर निकलने के सभी मार्गों को अवरुद्ध किया जा सके। छिपने के ठिकाने की ओर बढ़ते समय, सुरक्षा बलों को पीएलएफआई काडरों ने देख लिया, जिन्होंने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। उस अकस्मात घातक गोलीबारी में, उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा, सहायक कमांडेंट सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट रणजीत मंडल और कांस्टेबल/जीडी गुलाब सिंह गोलियों से बाल-बाल बचे क्योंकि वे अग्रिम दल के सामने वाले हिस्से में थे। विधिवत चेतावनी देने के पश्चात कमांडरों ने अपने सैन्य दलों पर प्रभावकारी नियंत्रण कायम रखते हुए आत्मरक्षा और सरकारी संपत्तियों की सुरक्षा में जवाबी गोलीबारी की। उच्चकोटि के रण कौशल का उपयोग करते हुए उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा सहायक कमांडेंट सुनील कुमार शर्मा और सहायक कमांडेंट रणजीत मंडल ने अपने संबंधित दलों का नेतृत्व किया तथा क्रमशः बाएं और दाएं छोर से छिपने के ठिकाने के नजदीक पहुंच कर घेराबंदी को मजबूत किया। पीएलएफआई काडरों ने दोनों दलों को अपने नजदीक आते हुए देखा और दिखाई दे रहे सुरक्षा बल कार्मिकों को लक्ष्य बनाकर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। चूंकि, उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा, सहायक कमांडेंट रणजीत मंडल और कांस्टेबल/जीडी गुलाब सिंह छिपने के ठिकाने की ओर आगे बढ़ रहे दल के दाएं हिस्से में सबसे आगे थे, इसलिए वे पीएलएफआई काडरों की तेज गोलीबारी की चपेट में आ गए। फिर भी उन्होंने आगे बढ़ना नहीं छोड़ा और अपने कीमती जीवनों की परवाह किए बगैर आगे बढ़ते रहे और पीएलएफआई काडरों पर प्रभावकारी गोलीबारी शुरू कर दी। उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा, सहायक कमांडेंट सुनील कुमार शर्मा और सहायक कमांडेंट रणजीत मंडल और कांस्टेबल/जीडी गुलाब सिंह के साथ भी स्थिति ज्यों की त्यों थी और उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा और जानों की परवाह नहीं की और आगे बढ़ते रहे तथा पीएलएफआई काडरों का पीछा किया। इसके परिणामस्वरूप तीन काडरों को उनके हथियार और गोलाबारूद के साथ जिंदा गिरफ्तार कर लिया गया। उप निरीक्षक सुबोध लकड़ा, राजा राम, हेड कांस्टेबल, शेम टोप्पनो, कांस्टेबल सभी झारखण्ड पुलिस की दूसरे छोर से सहायता की गई। मुठभेड़ के अंत में एक तलाशी शुरू की गई, जिसमें एक पीएलएफआई काडर मृत पाया गया जिसकी पंचू बदाइक के रूप में पहचान की गई और एक अन्य काडर गंभीर रूप से घायल मिला जिसकी भरत सिंह उर्फ थारथारी के रूप में पहचान की गई। उसको प्राथमिक उपचार देने के पश्चात तुरंत बानो अस्पताल ले जाया गया। तथापि, भरत सिंह उर्फ थारथारी की दिनांक 01/09/2014 को आरआईएमएस रांची में मृत्यु होने की सूचना प्राप्त

हुई। गिरफ्तार किए गए तीन पीएलएफआई काडरों की संजय सुरिन, भुवनेश्वर यादव और जीवन मसीहा टोपनों के रूप में पहचान की गई। छिपने के ठिकाने को ध्वस्त कर दिया गया और मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित हथियार और गोलाबारूद बरामद किए गए:-

क्र. सं.	हथियार/गोलाबारूद का नाम	मात्रा
1.	मैगजीन के साथ .303 बोल्ट एक्शन स्वदेश निर्मित राइफल	07
2.	9 एमएम पिस्तौल	01
3.	रिवाल्वर (सिक्सर)	01
4.	देशी कट्टा 7.62 एमएम	01
5.	.303 और .315 जिंदा राउंड	38
6.	9 एमएम जिंदा राउंड	06
7.	7.62 जिंदा राउंड	14
8.	.303 खाली खोखे	01
9.	7.62 खाली खोखे	03

संपूर्ण अभियान में पीएलएफआई काडरों की भारी गोलीबारी के बावजूद, पीएलएफआई काडरों से जूझते हुए और अपनी जान के खतरे की अत्यधिक संभावना होते हुए भी उपर्युक्त कर्मियों ने कमान/नियंत्रण और आदेशों का पालन करने से संबंधित अपनी सेवाओं का निर्वाह करने में अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया। जान के खतरे वाली परिस्थितियों में उनके द्वारा प्रदर्शित धैर्य न केवल अनुकरणीय है, बल्कि उच्च कोटि के साहस, शौर्य, समर्पण और सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुबोध लकड़ा, उप निरीक्षक, राजा राम सिंह, हवलदार, शेम टोप्पनो कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.08.2014 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 72-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, झारखण्ड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- | | |
|--|---|
| 01. रूमल सवैया,
कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) (मरणोपरांत) |
| 02. हर्षपाल सिंह,
अपर पुलिस अधीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार) |
| 03. रामाशंकर राम,
कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 04. शाह फैज़ल,
कांस्टेबल | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यह सूचना मिलने पर कि कुंडन पाहन के सीपीआई (माओवादी) का जोनल कमांडर कलिका मुंडा उर्फ चंदन दिनांक 18.08.2015 को पुलिस स्टेशन खूटी के अंतर्गत ग्राम लाथुप और दुल्मी के वन क्षेत्र के निकट उगाही की राशि एकत्र करने के लिए एक स्थानीय ठेकेदार से मिलेगा, एसएसपी रांची ने माओवादियों की घृणित गतिविधियों को रोकने के लिए, श्री हर्षपाल सिंह अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) रांची और तीन अन्य कार्मिकों, जिनमें कांस्टेबल शाह फैजल, कांस्टेबल रामाशंकर राम और चालक कांस्टेबल रूमूल सवैया शामिल थे, के साथ एक पांच सदस्यीय हमला दल गठित किया गया। आकस्मिकता के दौरान हमला दल को सहायता प्रदान करने के लिए एक बारह सदस्यीय सहायक दल भी गठित किया गया।

जानकारी की प्रामाणिकता की जांच करने, वाहनों के चयन, ड्रेस कोड, हमले और सहायता दल के कार्मिकों के चयन, संचार अभ्यासों आदि के संबंध में त्रुटिहीन योजना के पश्चात दिनांक 18.08.2015 को 1330 बजे हमला दल उच्च अधिकारियों को पूर्व सूचना देकर मूल क्षेत्र के लिए निकला। इसके अतिरिक्त, आगे बढ़ने के दौरान दोनों अधिकारियों एसएसपी रांची और अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) द्वारा खतरे का आकलन, जानकारी की पुनः पुष्टि के साथ-साथ उगाही संबंधी लेन-देन के स्थान का लगातार पता लगाया जा रहा था। लगभग 1500 बजे इस अभियान संबंधी जानकारी को पुलिस अधीक्षक खूटी के साथ भी साझा किया गया क्योंकि संभावित क्षेत्र खूटी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आता था।

खूटी शहर से लगभग 25 किमी. की दूरी तय करने के पश्चात लगभग 1615 बजे जैसे ही हमला दल ग्राम लाथुप के नजदीक संभावित स्थान पर पहुंचा, चालक कांस्टेबल रूमूल सवैया की सतर्क नजर ने सामान्य वेशभूषा में 7-8 हथियारबंद माओवादियों को देखा और परिणामस्वरूप उन्होंने तत्काल हमला दल को सचेत कर दिया। प्रतिक्रिया करने में बहुत कम समय और हमला तथा सहायता दल के बीच अधिक दूरी होने के कारण कमांडर एसएसपी रांची और अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) ने रणनीतिक ढंग से आगे बढ़ने का निर्णय लिया।

तत्काल रणनीति के अनुसार, हमला दल ने शीघ्रता से वाहन छोड़ दिया और लक्ष्य की ओर सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना शुरू कर दिया। हमला दल ने जब मुश्किल से पैदल 40-50 गज की दूरी तय की थी तभी माओवादियों ने उन पर अंधाधुंध गोलियां शुरू कर दी। माओवादियों की शुरुआती गोलियों की बौछार बहादुर चालक कांस्टेबल रूमूल सवैया के लिए घातक सिद्ध हुई, जिसके सिर में चोट लग गई।

परस्पर गोलीबारी के महत्वपूर्ण अवसर पर बहुमूल्य क्षति अडिग और साहसी कमांडर, एसएसपी रांची और श्री हर्षपाल सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) तथा उनके बहादुर सैन्य कर्मियों कांस्टेबल शाह फैजल, कांस्टेबल रामाशंकर राम के लड़ने के जज्बे को नहीं रोक पाई और वे उपयुक्त ढंग से निडरतापूर्वक लगातार जवाबी गोलीबारी करते रहे।

यह स्थिति उस समय विकट हो गई, जब एसएसपी रांची की छाती में गोली लग गई और परस्पर गोलीबारी के दौरान कांस्टेबल शाह फैजल भी गोली लगने से घायल हो गए। एक कार्मिक के शहीद होने के बावजूद, एसएसपी रांची, श्री हर्षपाल सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान), कांस्टेबल शाह फैजल, कांस्टेबल रामाशंकर राम की सहयोग की भावना, अदम्य साहस, इयूटी के प्रति अत्यधिक समर्पण, क्षमता में आत्मविश्वास और बहादुरी ने किस्मत को बदल दिया और हमला दल की अत्यधिक आक्रमक गोलीबारी ने माओवादियों को पूरी तरह से हतोत्साहित कर दिया और उन्होंने भागना शुरू कर दिया। हमला दल के इस लगातार आक्रमण में कुछ माओवादी बुरी तरह से घायल हो गए और इस तथ्य की बाद में तकनीकी जानकारी से भी पुष्टि की गई।

एसएसपी रांची के साहसिक और प्रेरणादायक नेतृत्व में 25-30 मिनट की भारी गोलीबारी के पश्चात सराहनीय बचाव का कार्य शुरू हुआ जो उनके द्वारा हमला दल के शेष दो सदस्यों श्री हर्षपाल सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) और कांस्टेबल रामाशंकर राम के साथ आश्चर्यपूर्ण ढंग से किया गया था। चोटिल और थके हुए तीनों व्यक्तियों ने जीवन के लिए चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में न केवल घायल कांस्टेबल शाह फैजल एवं शहीद चालक कांस्टेबल रूमूल सवैया को वाहन में छोड़ा, बल्कि मारे गए नक्सली का शव उसकी एके-47 भी अपने साथ ले गए। चूंकि, चालक कांस्टेबल रूमूल सवैया शहीद हो गया था, इसलिए श्री हर्षपाल सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) ने स्वयं वाहन चलाया और मार्ग में के बारे में पुलिस अधीक्षक खूटी को सूचना दी।

बाद में यह पता चला कि मारा गया अपराधी कुंडन पाहन गुट का जोनल कमांडर सीपीआई (माओवादी) “कलिका मुंडा उर्फ चंदन” था जो झारखंड के कम से कम चार जिलों अर्थात् रांची, खूटी, सरायकेला, पश्चिम सिंहभूम में लाल आतंक फैलाने वाला एक प्रसिद्ध चेहरा; गंभीर प्रकृति के अनेक मामलों में वांछित; सुरक्षा कार्मिकों को मारने के लिए जिम्मेवार; आईईडी विस्फोटों और मारक घात में कुशल था।

उपर्युक्त अभियान में, हमला दल के सदस्य ने मानसिक रूप से मजबूत, निडर और अडिग होने के अतिरिक्त विशिष्ट आसूचना संबंधी कार्य/योजना, तार्किक निर्णय लेने, अतुलनीय संकट प्रबंधन कौशल और अनुकरणीय सैन्य बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन भी किया। यह

वास्तव में सराहनीय है कि यह शौर्यपूर्ण कार्रवाई एक प्रतिकूल क्षेत्र में घटित हुई क्योंकि माओवादियों को उनके गढ़ में चुनौती दी गई थी और उनके पास छोटे हमला दल को उड़ाने के लिए पर्याप्त हथियार और गोला बारूद था।

की गई बरामदगी:-

1.	01 मैगजीन के साथ एके-47(मैगजीन में 10 राउण्ड और चैम्बर में एक जिंदा राउण्ड)	-	01
2.	एके-47 मैगजीन	-	06
3.	एके-47 राउण्ड	-	135
4.	9 एमएम पिस्तौल	-	01
5.	9 एमएम राउण्ड	-	07
6.	मोटरोला वॉकी-टॉकी सेट	-	01
7.	315 बोर की पिस्तौल (स्वदेश निर्मित)	-	01
8.	सिम के साथ मोबाइल फोन	-	06

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री स्व. रूमल सवैया, कांस्टेबल, हर्षपाल सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक, रामाशंकर राम, कांस्टेबल और शाह फैज़ल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का द्वितीय बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.08.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 73-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का 7वां बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1.	पी. संजोय सिंह, निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का 7वां बार)
2.	एल.विक्रमजीत सिंह, जमादार	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
3.	एम. रोबिन्द्रो सिंह, उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
4.	ए. शांति सिंह, हवलदार	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 06.01.2015 को सुबह लगभग 9 बजे, निरीक्षक पी. संजोय सिंह, कमांडों इम्फाल पश्चिमी जिला के प्रभारी अधिकारी, जो न केवल इम्फाल पश्चिमी जिले के बहादुर अधिकारियों में से एक हैं, बल्कि एक आदर्शवादी अधिकारी भी हैं, को रुहिनी उर्फ बिरेन एस/एस गृह सचिव, यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट (यूआरएफ) और टिकेन उर्फ लम्बा यूआरएफ का केंद्रीय वित्त सहायक जो यूआरएफ के कुख्यात कार्यकर्ता हैं और एम.जी.एवेन्यू, इम्फाल बाजार और खोयाथोंग, थांगमेईबंद में हुए बम विस्फोट, जिसमें पांच गैर-मणिपुरी मारे गए थे और अन्य घायल हो गए थे, जिससे पूरे राज्य के लोग सदमे में थे, के लिए जिम्मेवार थे, की मौजूदगी के बारे में एक विशिष्ट जानकारी प्राप्त हुई। उक्त जानकारी से बिशनपुर जिले के क्वाक्ता खुमन मायाई लेइकई में एक घर के भीतर यूनाइटेड रिवोल्यूशनरी फ्रंट (लालहैबा गुट) जो केसीपी का एक संगठित गुट था, के कुछ हथियारबंद काडरों की मौजूदगी के बारे में भी पता चला।

सूचना प्राप्त होने पर, निरीक्षक पी. संजोय सिंह ने बिशनपुर जिले के कमांडों के नजदीकी समन्वय के साथ इम्फाल पश्चिमी जिले के अपने कमांडों दल को संगठित किया। उपयुक्त जानकारी के पश्चात, सैन्य बल क्वाक्ता खुमन मायाई लेइकेई की ओर चल पड़ा।

उस स्थान पर पहुंचने पर, झाड़ियों और सड़क क्रॉसिंग सहित उपयुक्त स्थानों को कवर करते हुए सैन्य बल को युक्तिपूर्वक तैनात किया गया। घेराबंदी के अभियान के दौरान, क्वाक्ता खुमन मायाई लेइकेई के किसी मोहम्मद मजीबुर रहमान (33) पुत्र स्व. मोहम्मद इबो के एक विशिष्ट घर की घेराबंदी की गई और निरीक्षक पी. संजोय सिंह के साथ हवलदार ए. शांति सिंह चुपचाप रणनीतिक ढंग से घर की पश्चिम दिशा की ओर चले गए और घर की तलाशी शुरू कर दी।

अत्यधिक सावधानी से घर की तलाशी करते समय, एक व्यक्ति ने पुलिस दल को मारने के इरादे से शौचालय के दरवाजे को अधखुला रख कर शौचालय के भीतर से सैन्य दल की ओर गोलीबारी शुरू कर दी और अपना बचाव किया। पी. संजोय सिंह और हवलदार ए. शांति सिंह आतंकी की गोली से बाल-बाल बचे और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को नजरअंदाज करते हुए और आक्रमक रुख और अत्यधिक जिम्मेवारी के साथ तुरंत पोজিশन ले ली और शौचालय की ओर इतनी तेजी से जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी कि आतंकवादी को भागने का कोई मौका नहीं मिला। निरीक्षक पी. संजोय और हवलदार ए. शांति सिंह की गोलियां आतंकवादी को लगीं और चोट लगने से उसकी मौत हो गई तथा उसके पास से एक पिस्तौल बरामद की गई।

घर के भीतर अन्य आतंकवादियों की मौजूदगी की संभावना को देखते हुए, जमादार एल. बिक्रमजीत सिंह के साथ निरीक्षक पी. संजोय सिंह आतंकवादियों के साथ निरीक्षक पी. संजोय सिंह, आतंकवादियों, यदि घर में हों, को पकड़ने के लिए साहस और प्रबल दृढ़निश्चय के साथ रणनीतिक ढंग से घर की पूर्वी दिशा की ओर चले गए। परन्तु अचानक, एक आतंकवादी ने घर की पूर्वी दिशा की ओर जमादार एल. बिक्रमजीत सिंह और उप निरीक्षक एम. रोबिन्द्रो सिंह ने अपने निजी जीवन की परवाह किए बिना अत्यधिक जिम्मेवारी के साथ आतंकवादी की ओर जवाबी गोलीबारी की ओर इस प्रकार एक छोटी मुठभेड़ हुई। आतंकवादी को गोली लग गई और चोट लगने के कारण उसकी मौत हो गई। शव के पास से एक पिस्तौल बरामद हुई।

इस मामले का उल्लेख धारा 307/341 भादं.सं., 20यूए (पी) अधिनियम, और 25 (1-सी) आयुध अधिनियम के तहत एम आर जी पुलिस स्टेशन की प्राथमिकी सं. 3 (I) 2015 में किया गया है।

मारे गए आतंकवादियों की निम्नलिखित के रूप में पहचान की गई:

- (क) खुराई चिंगबम लेइकेई, इम्फाल पूर्वी जिले का पूयाम मोंगयांबा उर्फ बिरेन उर्फ सुनील उर्फ रुहिनी सिंह (50) पुत्र (एल) पी. इंदु सिंह।
- (ख) नाओरेमथोंग खुल्लेम लेइकेई, इम्फाल पश्चिमी जिले का केईथेल्लकपम टिकेन सिंह उर्फ लंखोम्बा (44) पुत्र के. अनगंधल सिंह।

निम्नलिखित हथियार और गोला-बारूद बरामद किए गए और जांच की औपचारिकताएं पूरी होने के पश्चात, शवों को मारे गए लोगों के संबंधियों को सौंप दिया गया।

- (क) 1 (एक) हथगोला।
- (ख) मैगजीन और 4 (चार) जिंदा राउण्ड के साथ "बीओ 6731" अंकित 1 (एक) पिस्तौल।
- (ग) मैगजीन और 5 (पांच) जिंदा राउण्ड के साथ "सीजेड 75 बीसीएएल 9 एलयूजीईआर" अंकित 1 (एक) पिस्तौल।
- (घ) 14 (चौदह) खाली कारतूस।
- (ङ) 2 (दो) मोबाइल हैंडसेट।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री पी. संजोय सिंह, निरीक्षक, एल. बिक्रमजीत सिंह, जमादार, एम. रोबिन्द्रो सिंह, उप निरीक्षक और ए. शांति सिंह, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक का 7वां बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.01.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 74-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. प्रेम वीर राणा,
निरीक्षक
02. संजय कुमार पांडेय,
उप निरीक्षक
03. मनीष बिष्ट,
उप निरीक्षक
04. ज़र्रार हुसैन,
हेड कांस्टेबल
05. प्रवेश कुमार,
हेड कांस्टेबल
06. प्रभात कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री संजय पांडेय, उप निरीक्षक प्रभारी स्वैट, अपराध शाखा, सहारनपुर को दिनांक 05.06.2015 को लगभग 1305 बजे एसएसपी से 04 अपराधियों के किसी जघन्य आपराधिक गतिविधि को अंजाम देने के लिए आई-20 कार में सहारनपुर की ओर जाने के बारे में सूचना प्राप्त हुई। इस पर, वे तुरंत हरकत में आ गए और अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए अपने दल के साथ शीघ्र रणनीति पर विचार किया और तेजी से सरकारी वाहन में महिपाल रोड़, पर बडगांव की ओर निकल पड़े।

श्री संजय पांडेय स्वैट दल के साथ जब अम्बेहटा चांद के नजदीक पहुंचे, तो एक तेजी से आती हुई आई-20 कार सामने से आती हुई दिखाई दी और ज्योंही वह कार नजदीक पहुंची तो उन्होंने कार को रूकने के लिए इशारा किया, इसकी बजाय कार के चालक ने इसे तेजी से सहारनपुर की ओर दौड़ा दिया परन्तु सतर्क, श्री संजय पांडेय ने तुरंत एसएसपी को सूचित करते हुए तेजी से आई-20 कार का पीछा किया, जो तेजी से ग्राम हलगोया की ओर चली गई परन्तु तेज गति के कारण संकरी गली में एक घर से टकरा गई और 04 चालाक अपराधी अपने हाथों में स्वचालित हथियार और बैग लेकर उतरे और गली के पार जंगल की ओर भाग गए। श्री संजय दल के साथ वस्तुतः सरकारी वाहन से कूद गए और भाग रहे अपराधियों को आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी, परन्तु चालाक अपराधियों ने निडरता से पुलिस दल को मारने के लिए अचानक लगातार गोलीबारी शुरू कर दी, तथापि, अडिग श्री संजय पांडेय और उनका दल अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर, निडरता से नियंत्रित जवाबी गोलीबारी के साथ उनका पीछा करते रहे और जब अपराधी आगे की ओर भाग रहे थे, तो एसएसपी के निर्देश पर श्री प्रेम वीर सिंह राणा, एसएचओ, रामपुर मनिहारन आगे से अचानक पुलिस दल के साथ पहुंच गए और बदमाशों ने स्वयं को घिरा हुआ पाकर अपने स्वचालित हथियारों से क्रोधावेश में तेज गोलीबारी की। एसएचओ ने रणनीतिक ढंग से रेंगते हुए अपराधियों को आत्मसमर्पण करने के लिए चुनौती दी और अपने दल के साथ श्री संजय अपराधियों को जिंदा पकड़ने के लिए अदम्य साहस और नियंत्रित जवाबी गोलीबारी करते हुए निडरता से आगे बढ़े, परन्तु स्वचालित हथियारों द्वारा अपराधियों की गोलीबारी में स्वैट दल को आघात पहुंचा और श्री संजय, श्री मनीष बिष्ट उप निरीक्षक और हेड कांस्टेबल प्रवेश को बुलेट प्रूफ जैकेटों के कारण चोट नहीं लगी और वे बच गए, जबकि हेड कांस्टेबल (पी) ज़र्रार हुसैन और कांस्टेबल प्रभात कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए। एसएचओ और श्री संजय ने स्वयं आमने-सामने की लड़ाई और 'करो या मरो' के हालात में उप निरीक्षक मनीष बिष्ट, हेड कांस्टेबल प्रवेश कुमार घायल हेड कांस्टेबल ज़र्रार हुसैन और कांस्टेबल प्रभात कुमार के साथ अपनी जान की परवाह किए बिना और उत्कृष्ट शौर्य, साहस और कर्तव्य के प्रति समर्पण का प्रदर्शन करते हुए निडरता से हमले का नेतृत्व किया और अपराधियों को जीवित पकड़ने के लिए रणनीतिक रण कौशल के साथ निडरतापूर्वक उनकी गोलीबारी की रेंज में आगे बढ़े और आत्मरक्षा में गोलीबारी करते हुए लड़ने लगे, जिसके परिणामस्वरूप लगभग 1530 बजे 02 अपराधी घायल हो गए, जबकि भाग रहे 02 अन्य अपराधियों का पीछा किया गया और उन्हें उसी दिन गिरफ्तार कर लिया गया।

दोनों अपराधियों को बाद में मृत घोषित कर दिया गया और उनकी पहचान खुंखार, जबरन वसूली करने वाले, लुटरे और हत्यारे, भगौड़े अपराधी गैंग लीडर राहुल खट्टा, जिस पर उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और दिल्ली के पुलिस महानिदेशक द्वारा 7,500/-रु. का इनाम घोषित किया गया था और शार्प-शूटर धर्मेन्द्र उर्फ बिन्टे के रूप में की गई। भारी मात्रा में अत्याधुनिक अवैध आग्नेयास्त्र - एसएलआर, कारबाइन्स और जिंदा तथा प्रयुक्त गोलाबारूद की बरामदगी की गई।

बरामदगी:-

1. मैगजीन के साथ एक एसएलआर, 7.62 बोर का 01 जिंदा और 08 खाली कारतूस।
2. मैगजीन के साथ एक पिस्तौल, .30 बोर के 18 जिंदा और 06 खाली कारतूस।
3. मैगजीन के साथ कारबाइन, 9 एमएम बोर के 08 जिंदा और 08 खाली कारतूस।
4. मैगजीन के साथ यूएसए में निर्मित एक पिस्तौल, .32 बोर के 02 जिंदा और 08 खाली कारतूस।
5. एक पिस्तौल, .455 बोर के 06 जिंदा कारतूस।
6. स्वदेश निर्मित एक कारबाइन।
7. .315 बोर के 107 जिंदा कारतूसों के साथ गोलियों की चार बेल्ट।
8. मैगजीन के साथ एक स्वदेश निर्मित कारबाइन, .32 बोर के 38 जिंदा कारतूस।
9. दो राइफल, .315 बोर के 02 खाली कारतूस।
10. 04 जिंदा कारतूसों से भरी .32 बोर की एक मैगजीन।
11. एक तेज धार वाला चाकू।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री प्रेम वीर राणा, निरीक्षक, संजय कुमार पांडेय, उप निरीक्षक, मनीष बिष्ट, उप निरीक्षक, ज़रार हुसैन, हेड कांस्टेबल, प्रवेश कुमार, हेड कांस्टेबल, प्रभात कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.06.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 75-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मनीश कुमार मिश्रा,
उप पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 20.01.2010 को लखनऊ शहर के अलीगंज क्षेत्र से दिन के समय गौरव मिश्रा नामक 11 वर्ष के एक लड़के का अपहरण कर लिया गया। वह लड़का लखनऊ शहर के सीएमएस स्कूल से वापस लौट रहा था। उसके लिए 1.50 करोड़ रु. की फिरोती की मांग से राजधानी में खलबली मच गई। पुलिस महानिदेशक, उत्तर प्रदेश ने अपहृत लड़के को रिहा कराने का कार्य उप महानिरीक्षक/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, लखनऊ और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ को सौंपा, जिन्होंने उपयुक्त योजना एवं आपसी विचार-विमर्श के बाद संबंधित रिहाई दलों का नेतृत्व किया। उपलब्ध आसूचना एवं मोबाइल फोनों के डाटा के विश्लेषण से अपहरणकर्ताओं के लखनऊ-हरदोई सीमा के आस-पास होने का पता चला। दोनों अधिकारी तत्काल हरकत में आए और सीमा की ओर कूच किया और उन्होंने वहां रणनीति के तहत पोजीशन ले ली, ताकि वे उस इंडिका कार को पकड़ सकें, जिसका प्रयोग अपहरण के लिए किया गया था।

दिनांक 21.01.2010 को प्रातः लगभग 8 बजे वह इंडिका कार हरदोई सीमा के निकट देखी गई और उप महानिरीक्षक और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अपने सहयोगी कार्मिकों को सावधान करते हुए बहादुरीपूर्वक उस कार को रोकने का प्रयास किया। उस कार के भीतर बैठे अपराधियों ने गोलीबारी शुरू कर दी और एक गोली पुलिस अधिकारी की अम्बेसडर कार की दाहिनी खिड़की को क्षतिग्रस्त करती हुई उसकी पिछली सीट में घुस गई। अपनी तत्परता के कारण इस घटना में दोनों अधिकारी बाल-बाल बचे। तथापि, उन्होंने उस कार का पीछा किया और अपर पुलिस अधीक्षक एवं उप पुलिस अधीक्षक, मनीष मिश्रा की अगुवाई वाले दूसरे दल को अपराधियों को घेरने का निर्देश दिया। इंडिका कार के चालक ने यह अहसास करते हुए कि वह फंस गया है, अपनी गाड़ी कच्ची सड़क पर दाहिनी तरफ मोड़ दी। अधिकारियों ने अपना वाहन वहीं छोड़ दिया और उन्होंने असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हुए उन अपराधियों का पीछा किया, जो अपनी कार से लगातार उनके ऊपर गोलीबारी कर रहे थे। तथापि, उप महानिरीक्षक की गोली से उनकी कार के पिछले पहिए का टायर फट गया। उसके बाद अपहरणकर्ताओं ने कार वहीं छोड़ दी और वे पेड़ एवं झाड़ियों के पीछे पोजीशन लेकर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। उप महानिरीक्षक/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अपर पुलिस अधीक्षक और श्री मनीष कुमार मिश्रा, उप पुलिस अधीक्षक ने अपनी जान की परवाह किए बगैर अपराधियों को आत्मसमर्पण के लिए कहा। पुलिस ने अंतिम विकल्प के रूप में और आत्मरक्षार्थ उनके ऊपर गोलियां चलाईं। एक गोली अपर पुलिस अधीक्षक की बाएं टांग में लगी और वे घायल हो गये जबकि अन्य अधिकारी बाल-बाल बचे। इस अभियान को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए पुलिस दल ने रण कौशल एवं युक्ति का प्रयोग किया, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे को मुक्त कराया जा सके। दोनों ओर से हुई गोलीबारी के दौरान चारों दोषी अपराधी मारे गए और वहां से निम्नलिखित हथियार/गोलाबारुद बरामद किए गए:-

1. .9 एम.एम. की फैक्ट्री निर्मित 01 पिस्तौल, 02 जिंदा कारतूस और .9 एम.एम. बोर का 01 खाली खोखा।
2. .315 बोर वाली 02 देशी पिस्तौल, 02 जिंदा कारतूस और .315 बोर के 02 खाली खोखे।
3. .12 बोर की 01 देशी पिस्तौल और .12 बोर का 01 खाली खोखा।

इस मुठभेड़ में श्री मनीष कुमार मिश्रा, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.01.2010 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 76-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अभिजीत कुमार सिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीएसएफ की 50वीं बटालियन की तैनाती अमृतसर (पंजाब) के तस्करी-संभावित क्षेत्र में की गई है। दिनांक 28/29 मार्च, 2015 के बीच की रात में लगभग 0050 बजे कांस्टेबल अभिजीत कुमार सिंह ने, जो सीमा चौकी रत्नखुर्द की जिम्मेवारी वाले क्षेत्र में सीमा पर लगी बाड़ के पास एचएचटीआई ड्यूटी पर थे, सीमा पर पिलर सं. 100/3 और 100/4 एस के बीच के क्षेत्र में सीमा के बाड़ की दिशा में पाकिस्तान की ओर से एचएचटीआई पर सावधानीपूर्वक चलते हुए चार सशस्त्र व्यक्तियों की संदिग्ध गतिविधि देखी। उन्होंने तत्काल इसकी सूचना एचसी (जी) प्रेमचंद को दी और उन्होंने भी तस्करों की संदिग्ध गतिविधि की पुष्टि की।

चूंकि उस समय किसी असन्न्य कार्मिक को वहां बुलाने का समय नहीं था, इसलिए अकेला होने के बावजूद कांस्टेबल अभिजीत कुमार सिंह बगैर कोई समय गंवाए हरकत में आ गए और एचएचटीआई टावर से उतर कर नीचे आ गए। उन्होंने जमीनी स्थिति को समझा और रण-कौशल एवं युक्तिसंगत सूझबूझ का प्रयोग करते हुए अकेले चुनौती का सामना करने का निर्णय लिया। लगभग 150 मीटर तक गोपनीय तरीके से रेंगते हुए आगे बढ़ने के बाद, वे पाक तस्करों के निकट पहुंच गए, जो एके-47 राइफल के साथ लैस थे और सीमा पर लगी बाड़ के भीतर एक पीवीसी पाइप डालने का प्रयास कर रहे थे। यह जानते हुए भी कि पाक तस्कर हथियारों से लैस हैं, कांस्टेबल

अभिजीत कुमार सिंह ने अपनी जान कि परवाह किए बगैर बहादुरीपूर्वक उन्हें रूकने की चुनौती दी। उनके द्वारा मौखिक रूप से ललकारे जाने पर तस्करों ने उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी और एक सशस्त्र तस्कर ने उनकी ओर गोलीबारी करने के लिए अपनी एके-47 राइफल से निशाना साधने की कोशिश की। अपने जीवन पर मंडराते खतरे को भांपते हुए उन्होंने गोलीबारी के साथ बहादुरीपूर्वक जवाब दिया। कांस्टेबल अभिजीत कुमार सिंह द्वारा दिखाई गई फुर्ती एवं की गई तात्कालिक कार्रवाई के कारण उनकी ओर एके-47 राइफल से निशाना साध रहे एक तस्कर को गोली लग गई और दूसरा तस्कर, जो पाइप को बाड़ भीतर डालने की कोशिश कर रहा था, भी उसी स्थान पर मारा गया। अन्य तस्कर गैंग की फसलों तथा अंधेरे की आड़ का फायदा उठाते हुए उस स्थान से भागने में सफल हो गए। भोर की रोशनी में आस-पास के क्षेत्र की सघन तलाशी ली गई, जिसके दौरान घटनास्थल से 1 एके-47 राइफल, 31 जिंदा राउंड के साथ भरी हुई 2 मैगजीन (चेंबर की भरी हुई 1 राउंड के साथ), लपेटे हुए कपड़े से बंधी पीवीसी पाइप से भरी हुई 12 किग्रा. संहिंघ हेरोइन, तीन बैटरी के साथ 1 मोबाइल फोन (नोकिया) और पाकिस्तान की 1 सिम के साथ दो पाक तस्करों के शव बरामद किए गए।

कांस्टेबल अभिजीत कुमार सिंह द्वारा साहसी, बहादुरीपूर्ण एवं त्वरित कार्रवाई के कारण दो तस्करों का सफाया और हथियारों एवं गोलाबारूद के साथ हेरोइन की बरामदगी संभव हो पायी। उनके बहादुरीपूर्ण कृत्य का तस्करों/राष्ट्र-विरोधी तत्वों की गतिविधियों के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ेगा और बल के गौरव में वृद्धि होने के साथ-साथ सैन्य टुकड़ियों का मनोबल भी बढ़ेगा।

इस मुठभेड़ में कांस्टेबल अभिजीत कुमार सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.03.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 77-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

1. श्री रमेश चन्द, (मरणोपरान्त)
हेड कांस्टेबल
2. महावीर सिंह,
हेड कांस्टेबल
3. सज्जन सिंह,
हेड कांस्टेबल
4. राजेन्द्र कुमार,
सहायक उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीएसएफ की 171वीं बटालियन की तैनाती जिला-कांकेर (छत्तीसगढ़) के बेहद संवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र में की गई है। दिनांक 12 अप्रैल, 2015 को लगभग 2245 बजे नवस्थापित सीओबी छोटे बेथिया के निकट 05 कार्मिकों की पैदल टुकड़ी की अगुवाई करते समय हेड कांस्टेबल महावीर सिंह और हेड कांस्टेबल सज्जन सिंह के साथ बीएसएफ की 171वीं बटालियन के हेड कांस्टेबल रमेश चंद गांव छोटा बेथिया के उत्तरी ओर नक्सलियों के द्वारा लगाई गई घात वाले मारक क्षेत्र में चले गए। हेड कांस्टेबल रमेश चंद शुरुआती गोलियों की बौछार का निशाना बन गए और वे वहीं जमीन पर गिर गए। लेकिन किसी की मदद के लिए वहां रुकने और असहाय रूप से जमीन पर गिरे रहने के विकल्प को छोड़कर वे बेहतर रणनीतिक स्थान की तलाश में कुछ मीटर तक रेंगते हुए आगे बढ़े। तब सर्वोच्च स्तर की पेशेवरता और देश के कानून के प्रति सच्चे समर्पण का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने नक्सलियों को गोलीबारी बंद करके आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी, लेकिन नक्सलियों ने उनकी चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया और स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी करते रहे। अपने गंभीर दल के ऊपर तत्काल खतरे को भांपते हुए, घायल होने के बावजूद उन्होंने जवाबी हमला किया और अपने

छोटे दल को युक्तिपूर्वक कार्य सौंपते हुए जवाबी घात का भी संचालन किया। नक्सलियों को वहां की भौगोलिक स्थिति का लाभ हासिल था और वे चुनिंदा स्थानों से गोलीबारी कर रहे थे। हेड कांस्टेबल महावीर सिंह और हेड कांस्टेबल सज्जन सिंह हालांकि तुलनात्मक रूप से खुले मैदान में असुरक्षित स्थिति में थे, फिर भी वे अपने अधिकारी के साथ डटे रहे और जब नक्सलियों ने उन्हें घेरने का प्रयास किया, तो उन्होंने प्रभावी रूप से उनकी चाल को नाकाम कर दिया। मुठभेड़ के दौरान, नक्सलियों ने, जो कि 6 से 8 की संख्या में थे, क्लेमोर वाली बारूदी सुरंगों से धमाके किए और सैन्य दल के ऊपर हथगोले फेंके लेकिन वे अपने स्थानों से हटने के लिए डरा नहीं सके। इस बीच हेड कांस्टेबल रमेश चन्द ने स्वयं को संयम रखते हुए अपने आधार शिविर को घटना के विषय में सूचित किया और उनसे अतिरिक्त बल की मांग की। उनके दल के दो शेष सदस्यों ने भी, जो मारक क्षेत्र से बाहर थे, अपनी पोजीशन ले ली और वे गोलीबारी करते रहे।

सहायक उप निरीक्षक राजेन्द्र कुमार ने, जो पास में ही खड़े एक बुलेट प्रूफ वाहन में तैनात होकर एक पार्टी की कमान संभाल रहे थे, अतिरिक्त सहायता की मांग पर फौरन अमल किया। घटना स्थल पर पहुंचने पर उन्होंने पाया कि हेड कांस्टेबल रमेश चन्द, हेड कांस्टेबल महावीर सिंह और हेड कांस्टेबल सज्जन सिंह नक्सलियों द्वारा लगाई गई घात वाले मारक क्षेत्र में फंसे हुए हैं। उन्होंने तत्काल अपने बुलेट प्रूफ वाहन को नक्सलियों और अपनी पार्टी के बीच खड़ा कर दिया और अपनी पार्टी को नक्सलियों के ऊपर भारी गोलीबारी शुरू करने का आदेश दिया। उसके बाद उन्होंने गोलीबारी के बीच हेड कांस्टेबल रमेश चन्द को वहां से बाहर निकाला और उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालते हुए अपनी बांहों में उठाकर वहां से अपने कॉमरेड को बाहर निकाला और बीएसएफ की परंपराओं को सच्चे अर्थों में निर्वाह किया। हेड कांस्टेबल रमेश चन्द को वहां से निकाल कर पीएचसी बांदे ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

हेड कांस्टेबल रमेश चन्द, हेड कांस्टेबल महावीर सिंह, हेड कांस्टेबल सज्जन सिंह और सहायक उप निरीक्षक राजेन्द्र कुमार ने अदम्य साहस और अत्यधिक उच्च स्तर की युक्ति वाले कौशल का प्रदर्शन किया और नक्सलियों की पहल को बहादुरीपूर्वक उनसे छीन लिया, जिससे वे वहां से अपने पीछे हथियार एवं गोलाबारूद तथा घायल नक्सली कॉमरेड की, जिसकी मृत्यु हो चुकी थी तथा जिसकी पहचान नक्सल कमांडर दसमन सलाम उर्फ जलदेव विकास, चमार सलाम के रूप में की गई थी, को छोड़ कर भागने पर मजबूर हो गए।

हेड कांस्टेबल रमेश चन्द के दुर्लभ एवं अनुकरणीय साहस ने उनके कॉमरेड को राष्ट्र-विरोधी तत्वों को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए प्रेरित किया। आसूचना संबंधी ऐसी सूचनाएं हैं कि जवाबी कार्रवाई में तीन और नक्सली घायल हो गए थे, जिनमें से दो घायल नक्सलियों की मौत हो चुकी है।

की गई बरामदगी:

क्रम सं.	नाम	मात्रा
1.	नक्सली का शव	01
2.	परिष्कृत आरएल (बोर-60 एमएम, लंबाई-31") पाइप बम	01
3.	परिष्कृत एमओआर (बोर-50 एमएम, लंबाई-15") (पाइप बम)	01
4.	बिजली के तार (मेट प्लग के साथ) (31 मीटर और 20 मीटर)	02
5.	बैटरियों के साथ इलेक्ट्रॉनिक फ्लैश	01
6.	7.62x51 एमएम एस.एल.आर के जिंदा राउंड (एसएलआर गोलाबारूद)	28 राउंड
7.	खाली खोखे 7.62x51 एमएम(एसएलआर)	12
8.	7.62x51 एमएम 7.62x39 एमएम(एके गोलाबारूद)	02
9.	खाली खोखे 5.56x45 एमएम	06
10.	गोलाबारूद की थैली	01
11.	एसएलआर की मैगजीन	02
12.	नकद राशि	3,065/-रु.

इस मुठभेड़ में सर्वश्री (स्व.) रमेश चन्द, हेड कांस्टेबल, महावीर सिंह, हेड कांस्टेबल, सज्जन सिंह, हेड कांस्टेबल एवं राजेन्द्र कुमार, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.04.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 78-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री भले राम,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीआरपीएफ की 157वीं बटालियन को पुलिस स्टेशन - अरकी, खूंटी (झारखंड) के अधीन गांव-कुरुमबदा और घाघरा के निकट माओवादियों के जमावड़े के विषय में आसूचना संबंधी एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई और तदनुसार राज्य पुलिस के साथ मिलकर सी/157 और जी/157, प्रत्येक की दो-दो प्लाटूनों द्वारा उस क्षेत्र में अभियान की शुरुआत की गई। सैन्य टुकड़ियां दिनांक 08.01.2016 को लगभग 0800 बजे अपने आधारशिविर, कोरवा से रवाना हुईं और वे घने जंगलों से गोपनीय तरीके से आगे बढ़ते हुए अपने लक्षित क्षेत्र के निकट पहुंच गए।

योजना के अनुसार तलाशी अभियान शुरू करने से पूर्व गांव कुरुमबदा के आस-पास वहां से बचकर निकलने के सभी संभावित मार्गों पर अवरोध (कट-ऑफ) कायम करने के लिए सैन्य टुकड़ियों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित किया गया। लक्षित गांव के पूर्वी ओर जंगल में अवरोध कायम करने का कार्य सी/157 के निरीक्षक भले राम को सौंपा गया। इस उद्देश्य के लिए निरीक्षक भले राम ने अपने साथ 40 सैनिकों को लिया और वे युक्तिपूर्वक आगे बढ़े। दो स्थानों पर 10-10 सैनिकों वाले दो अवरोधक कायम करने के बाद वे पॉइंट नं. 3 की ओर आगे बढ़े। लेकिन जब वे अपनी सैन्य टुकड़ी को लेकर एक युक्तिसंगत लाभदायक स्थान, अर्थात् जंगल में एक ऊंचे स्थान पर ले जा रहे थे, तभी वहां ऊंचे स्थानों पर तैनात माओवादियों ने उनके ऊपर तीव्र गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य टुकड़ी अकस्मात् माओवादियों के शिविर स्थल की ओर पहुंच गई थी। यह जानते हुए कि, माओवादियों की भारी संख्या और रणनीतिक पोजीशन के कारण वहां की स्थितियां सैन्य टुकड़ी के लिए बेहद प्रतिकूल हैं, निरीक्षक/जीडी भले राम ने अपनी हिम्मत कायम रखी और माओवादियों के ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी ओर से की गई इस ठोस और साहसी जवाबी कार्रवाई ने माओवादियों के अचानक एवं घोर आक्रमण का सामना करने के लिए अन्य सैनिकों के भीतर भी हौसला भर दिया और उन्होंने भी माओवादियों के ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। मुठ्ठी भर सैनिकों के साथ बेहद सुरक्षित मोर्चा पर डटे दुश्मन के ऊपर जवाबी हमला करना एक दूर का विचार था, लेकिन ऐसी स्थिति की युक्तिसंगत समझ से आश्वस्त निरीक्षक भले राम ने अपने सैनिकों को हथगोले दागते हुए लगातार धमाके करने के साथ अधिकतम ताकत के साथ प्रचंड गोलीबारी करने का आदेश दिया। जैसी कि संभावना थी, हथगोलों के लगातार धमाके और गोलीबारी से निचले स्तर के माओवादी काडर, डर कर मुठभेड़ स्थल से भाग खड़े हुए। लेकिन वरिष्ठ स्तर के और अन्य दुर्दांत माओवादी, जो कि भारी संख्या में थे और गोलीबारी की दृष्टि से ऊंचे एवं आधिपत्य वाले स्थानों पर डटे हुए थे, अपनी जीत के प्रति आश्वस्त थे। उन्होंने जल्द यह समझ लिया कि सैनिक अधिक संख्या में नहीं हैं, जैसा कि उनकी गोलीबारी की मात्रा से संकेत मिल रहा था, इसलिए उन्होंने सैनिकों को अधिकतम संख्या में हताहत करने के लिए घेरना शुरू कर दिया। उनकी योजना को भांपते हुए निरीक्षक भले राम माओवादियों की इस चाल का मुकाबला करने के लिए अपने सैनिकों के साथ आगे बढ़ने लगे, लेकिन इस कार्य में एक पेड़ के अपर बैठा एक माओवादी लगातार गोलीबारी करते हुए बड़ी बाधा उत्पन्न कर रहा था। आसन्न खतरे की परवाह किए बगैर निरीक्षक भले राम अपनी आड़ से बाहर आ गए और उन्होंने उस माओवादी को निशाना बनाते हुए लगातार गोलियां दागीं। उन गोलियों से वह माओवादी घायल हो गया और उसे पेड़ से गिरते हुए देखा गया।

इससे सैनिकों के लिए आगे बढ़ने का अत्यंत आवश्यक मार्ग खुल गया और उन्होंने आगे बढ़ कर आधिपत्य वाले स्थान हासिल कर माओवादियों के ऊपर भारी गोलीबारी करके उनका पासा पलट दिया। इस चाल से माओवादियों की सैनिकों को घेरने की योजना विफल हो गई। इसके बाद निरीक्षक भले राम ने अन्य अवरोधक दलों को अलग-अलग किनारे से हमला करने का निर्देश दिया जबकि वे स्वयं और उनका दल माओवादियों के ऊपर गोलियां बरसाते रहे और बहुत से माओवादियों को घायल कर दिया। माओवादियों के मनोबल पर अंतिम प्रहार करते हुए अवरोधक सुरक्षा बलों ने भी बायें और दाहिने, दोनों किनारे से हमला कर दिया और विभिन्न दिशाओं से होने वाले

हमलों से माओवादियों के बीच घबराहट फैली गई। सैनिकों के पराक्रम और रणनीति से मात खाकर माओवादी वहां से भागने लगे और वे असमतल स्थलाकृति एवं घनी झाड़ियों का लाभ उठाते हुए भाग कर जंगल में चले गए।

विषम परिस्थितियों में निरीक्षक भले राम द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस, सर्वोच्च कर्तव्यपरायणता, योग्य नेतृत्व और पेशेवर कौशल ने न सिर्फ उनके सहयोगी सैनिकों की बेशकीमती जीवन की रक्षा की, अपितु घायल होने के बाद अतिसुरक्षित ठिकानों में डटे हुए दुश्मनों को अपनी जान बचाने के लिए युद्ध जैसी स्थिति के लिए जमा किए गए अपने हथियारों आदि के भंडार को छोड़कर भागने पर मजबूर कर दिया। बाद में क्षेत्र की तलाशी के दौरान मुठभेड़ स्थल से एक इन्सास राइफल, एक .303 राइफल, .315 बोर वाली 4 राइफल, 519 राउंड गोलाबारूद, 8 मैगजीन, 10 खाली खोखे, गोलाबारूद के 7 पाउच, 3 मोटर साइकिलें, 4 गैस सिलिंडर (14.2 किग्रा. वाली) जिनमें से दो को कोरडेक्स वाली तार लपेटकर आईईडी बनाया गया था, 5 छोटे गैस सिलिंडर, 27 आईईडी, 25 किग्रा. कोरडेक्स के तार, 1 लैपटॉप, 7 मोबाइल फोन, 1 आईईडी रिमोट, 66 वीसीडी और बड़ी मात्रा में माओवादी साहित्य, पोशाक, थैले बर्तन, दैनिक उपभोग वाली सामग्री आदि बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में श्री भले राम, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.01.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 79-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री नीरज कुमार सिंह,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

गांव-इटपारा, पुलिस स्टेशन-सदर, जिला-नगांव (असम) के क्षेत्र में मुलता डकैतों की गतिविधि के संबंध में दिनांक 20.03.2015 को लगभग 0530 बजे सेना की आसूचना शाखा से एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना के प्राप्त होने के बाद, नगर एसआई बद्री प्रसाद बरुवानी की कमान में राज्य पुलिस की क्यूआरटी के साथ निरीक्षक/जीडी नीरज कुमार सिंह की अगुवाई में 34 बटालियन सीआरपीएफ की सैन्य टुकड़ी और सेना के आसूचना कर्मियों ने गांव-इटपारा, पुलिस स्टेशन-सदर, जिला-नगांव (असम) में एक संयुक्त अभियान का संचालन किया।

अभियान के दौरान लगभग 0645 बजे जब सैन्य टुकड़ी इटपारा लालुंगांव आरसीसी पुल के निकट पहुंची, तो उन्होंने तीन मोटर साइकिलों पर सवार 06 संदिग्ध व्यक्तियों को देखा और जांच के लिए उन्हें रुकने का आदेश दिया। रुकने की बजाय मोटरसाइकिलों पर सवार संदिग्ध व्यक्तियों ने सैन्य टुकड़ी के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उन्होंने वाहनों से कूद कर वहां से भागने की कोशिश की। जवाब में सैन्य टुकड़ी ने भी गोलीबारी की और उनका पीछा किया। पीछा करने के दौरान, निरीक्षक नीरज कुमार सिंह और असम पुलिस के एसआई बद्री प्रसाद बरुवाती दो डकैतों के पीछे भागे, जो भागते हुए हथियार लहरा रहे थे और लगातार सैनिकों के ऊपर गोलियां दाग रहे थे। भाग रहे डकैतों को रोकने के लिए निरीक्षक नीरज कुमार सिंह ने अपने ऊपर चलाई जा रही गोलियों की परवाह किए बगैर एक डकैत के ऊपर गोली चलाई और उसे घायल कर दिया। उसके बाद उन्होंने यह जानते हुए भी कि, वह घायल डकैत हथियार से लेस है और ऐसा करना उनके जीवन के लिए खतरनाक हो सकता है, आगे बढ़कर उस घायल डकैत को काबू में किया। इसी बीच असम पुलिस के एसआई बद्री प्रसाद बरुवाती, जो बहादुरीपूर्वक दूसरे डकैत का पीछा कर रहे थे, के पैर में डकैत द्वारा चलाई गई एक गोली लग गई। जैसे ही घायल होकर वे जमीन पर गिरे, तभी वह डकैत उन्हें नजदीक से मारने के इरादे से उनकी ओर बढ़ने लगा। एसआई बद्री प्रसाद बरुवानी के जीवन को गंभीर खतरे में देख कर, क्योंकि वह डकैत उन्हें गोली मारने वाला ही था, निरीक्षक नीरज कुमार सिंह ने बिजली सी फुर्ती दिखाते हुए सावधानीपूर्वक निशाना साधा और अपनी जान पर मंडराते खतरे के बीच उस डकैत को मार गिराया और अपने घिरे हुए सहयोगी की जान बचाई।

हालांकि, इस संघर्ष के दौरान निरीक्षक नीरज कुमार सिंह भी चोटिल हो गए थे, लेकिन संपूर्ण अभियान के दौरान वे अविचलित रहे, जिसके कारण 3 और कुख्यात डकैतों को पकड़ा जा सका। इस अभियान के परिणामस्वरूप मुजीबुर रहमान नामक एक डकैत मारा गया और 4 अन्य कुख्यात डकैतों को गिरफ्तार किया जा सका, जिसमें से कासिम अली और मैनुल हक नामक दो डकैत गोलियां लगने से घायल हो गए थे। सैन्य टुकड़ी ने मुठभेड़ स्थल से एक 7.65 एमएम की पिस्तौल (इटली निर्मित), 7.65 एमएम की एक मैगजीन, एक देशी पिस्तौल, एक जिंदा गोलाबारूद, एक मोबाइल हैंड सेट और तीन मोटर साइकिलें बरामद कीं।

यह अभियान नजदीक से लड़ी गई लड़ाई का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें निरीक्षक नीरज कुमार सिंह ने एक खूंखार सशस्त्र डकैत का सफाया करने में अनुकरणीय शौर्य का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर सर्वप्रथम डकैतों का पीछा किया और उनमें से एक को काबू में किया और जब एसआई बट्टी प्रसाद बारूवाती की जान गंभीर खतरे में थी, तो उन्होंने त्वरित कार्रवाई करते हुए खूंखार डकैत को मार गिराया।

इस मुठभेड़ में श्री नीरज कुमार, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.03.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 80-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. श्री बंशी लाल रेगर,
सहायक कमांडेंट
02. बिलाल अहमद गनई,
कांस्टेबल
03. अमित चटराज,
कांस्टेबल
04. सन्नी कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 27.02.2015 को लगभग 1940 बजे एसओजी त्राल को गांव-मोमिनाबाद, जिला-पुलवामा (जम्मू एवं कश्मीर) में एक घर में कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी के विषय में सूचना प्राप्त हुई। यह सूचना ए/185 बटालियन, सीआरपीएफ और 42 आरआर के साथ साझा की गई। तदनुसार सैन्य टुकड़ी की ब्रीफिंग के पश्चात् तत्काल एक संयुक्त अभियान की शुरुआत की गई। ब्रीफिंग के दौरान सुरक्षा बलों के विभिन्न घटकों को घेराबंदी के लिए विशिष्ट क्षेत्र सौंपे गए और एक मिश्रित हमला दल तैयार किया गया। तत्पश्चात् सैनिकों ने तेजी से कार्रवाई की और वे कीमती समय गंवाए बगैर लक्षित घर को घेरने के लिए रवाना हो गए।

उस गांव का भूभाग बेहद खतरनाक था, जिसके एक ओर घनी आबादी वाले मकानों की भरमार थी और दूसरी ओर असमतल पहाड़ी भूभाग था, जो सुरक्षा बलों के ऊपर गुरिल्ला हमले और प्रासंगिक क्षति की संभावना, दोनों जोखिम पैदा कर रहा था। जब वहां घेराबंदी की जा रही थी, तभी उस घर के भीतर छिपे हुए आतंकवादियों ने एक हथगोला फेंका और उस क्षेत्र से भागने के प्रयास में गेट के निकट तैनात हमला दल को निशाना बनाते हुए भारी गोलीबारी शुरू कर दी। वह हथगोला उक्त कार्मिकों से बमुश्किल 10 फीट की दूरी पर फटा था, लेकिन आसन्न विस्फोट के विरुद्ध उनकी सतर्क प्रतिक्रिया और युक्तिपूर्ण पोजीशन ने उन्हें सुरक्षित रखा। हमला दल ने, जिसमें श्री बंशी लाल रेगर, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल बिलाल अहमद गनई, कांस्टेबल अमित चटराज और कांस्टेबल सन्नी कुमार शामिल

थे, उसी समय चारदीवारी के पीछे आइ लेते हुए तत्काल गोलीबारी का जोरदार जवाब दिया। सैनिकों की जोरदार जवाबी कार्रवाई से वहां से भागने के प्रयास में विफल रहने के बाद आतंकवादी भाग कर घर के भीतर चले गए और उन्होंने स्थानीय भाषा में राष्ट्र-विरोधी नारे लगाते हुए पुनः गेट की ओर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी।

उसी क्षण श्री बंशी लाल रेगर सामने आकर कांस्टेबल बिलाल अहमद गनई, कांस्टेबल अमित चटराज और कांस्टेबल सन्नी कुमार के साथ कुछ दूर आगे बढ़े और चारदीवारी पर युक्तिपूर्वक पोजीशन लेते हुए उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर साहस के साथ गोलीबारी की। दोनों ओर से यह भीषण गोलीबारी लगभग आधे घंटे तक चली जिसके बाद उस घर के भीतर से गोलीबारी रुक गई। इस भीषण गोलीबारी की लड़ाई के दौरान श्री बंशी लाल रेगर, कांस्टेबल बिलाल अहमद गनई, कांस्टेबल अमित चटराज और कांस्टेबल सन्नी कुमार ने अपनी निजी जिंदगी और सुरक्षा के प्रति बिल्कुल बेफक्री का प्रदर्शन किया, उग्रवादियों के आक्रमण का बहादुरीपूर्वक सामना किया और उन्हें वहां से भागने अथवा सुरक्षा बलों को हताहत करने का कोई मौका नहीं दिया। जैसे ही उस घर के भीतर गोलीबारी रूकी, सुरक्षा बलों ने घर के भीतर धावा बोलने के लिए स्वयं को पुनः संगठित किया। एक हमला दल तैयार किया गया जिसमें उपर्युक्त चारों सैनिक शामिल थे। हमला दल के पास जो कार्य था, उसमें जान को जोखिम था, क्योंकि इसमें उन्हें घर के भीतर किसी हिस्से में छिपे हुए भारी हथियारों से लैस दुश्मन का सामना करना था और किसी भी घुसपैठिए के ऊपर गोलीबारी भी करनी थी। इसके बावजूद श्री बंशी लाल रेगर ने चुनौती को स्वीकार किया और अपने सैनिकों का जोड़ा बनाकर उस घर के गेट के भीतर प्रवेश करने का आदेश दिया और दूसरा सहयोगी तभी प्रवेश करेगा जब पहले सहयोगी ने आइ के पीछे पोजीशन ले ली हो। इसके बाद सामने रहकर नेतृत्व प्रदान करते हुए उन्होंने अपने सहयोगी कांस्टेबल बिलाल अहमद गनई के साथ गेट के भीतर प्रवेश किया और उन्होंने एक पेड़ की आड़ में पोजीशन ले ली। कुछ सेकंड के लिए उस घर के ऊपर नजर रखने के बाद, वे उस घर के नजदीक पोजीशन लेने के लिए आगे बढ़े लेकिन अचानक उनके ऊपर गोलियां बरसाता हुए लक्षित घर के भीतर से जेजी से एक उग्रवादी बाहर की ओर आ गया। श्री बंशीलाल रेगर ने तत्काल छलांग लगाते हुए धक्का देकर कांस्टेबल बिलाल अहमद गनई को जमीन पर गिरा दिया और गोलियां उनके बेहद नजदीक से गुजर गईं, फिर उन दोनों ने गोलियां चला कर उस आतंकवादी को वहीं ढेर कर दिया। इस अफरा-तफरी का लाभ उठाते हुए दूसरा उग्रवादी एक खिड़की से बाहर कूद गया और उस घर के पिछले हिस्से की ओर भागने लगा। लेकिन तब तक कांस्टेबल अमित चटराज और कांस्टेबल सन्नी कुमार उस घर के परिसर में प्रवेश कर चुके थे और जैसे ही उन्होंने उस आतंकवादी को वहां से भागते हुए देखा, वे उसके पीछे भागे। पीछा किए जाने पर उस आतंकवादी ने दोनों कांस्टेबलों के ऊपर निशाना साधते हुए गोलियों की बौछार कर दी। दोनों कांस्टेबल भाग्यशाली थे कि उन्हें गोलियां नहीं लगीं। इसके बाद उन दोनों ने बहादुरी का अनोखा प्रदर्शन करते हुए और भीषण गोलीबारी से भयभीत हुए बगैर पीछा करते हुए उस आतंकवादी के ऊपर गोलीबारी की। उनकी सटीक गोलीबारी से वह आतंकवादी घायल हो गया लेकिन उसने हार नहीं मानी और वह उनके ऊपर गोलियां चलाता रहा। लेकिन कांस्टेबल अमित चटराज और कांस्टेबल सन्नी कुमार नामक बहादुर और साहसी कार्मिकों को उसे ढेर करने में ज्यादा समय नहीं लगा।

दोनों ओर से गोलीबारी बंद होने के बाद, वहां ली गई तलाशी में वहां से हिज्बुल मुजाहिदीन के दो दुर्दांत उग्रवादियों, अर्थात् शबीर अहमद मीर, श्रेणी "क", निवासी-दादरसारा और इदरीस अहमद शाह, निवासी नूरपुरा के शव के साथ-साथ निम्नलिखित हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए गए:-

1. एके 47 राइफल	-	02
2. एके 47 मैगजीन	-	06
3. राउंड्स	-	80

इस मुठभेड़ में सर्वश्री बंशी लाल रेगर, सहायक कमांडेंट, बिलाल अहमद गनई, कांस्टेबल, अमित चटराज, कांस्टेबल और सन्नी कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.02.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 81-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. अनिल कुमार सिंह,
उप कमांडेंट
2. मनोज कुमार बिसोई,
हेड कांस्टेबल
3. सुकेश महतो,
कांस्टेबल
4. प्रमोद कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीआरपीएफ की 26वीं बटालियन को पुलिस स्टेशन-चटरोचटी, जिला-बोकारो (झारखंड) के अंतर्गत झुमरा पहाड़ में एक माओवादी दस्ते की मौजूदगी के विषय में आसूचना संबंधी एक सूचना प्राप्त हुई। उस सूचना के आधार पर 26 बटालियन सीआरपीएफ, 203 कोबरा और राज्य पुलिस की संयुक्त सैन्य टुकड़ियों द्वारा "पराक्रम-1" के कोड नाम से एक अभियान की योजना बनाकर कार्रवाई शुरू की गई। वहां की भौगोलिक स्थलाकृति, पूर्व में हुई घटनाओं, माओवादियों के प्रति सहानुभूति रखने वाले गांवों और उस क्षेत्र में जलाच्छादित स्थलों के गहन विश्लेषण के बाद सात संदिग्ध गांवों, अर्थात् बालथरवा, अमन, दानरा, नवडंडा, जमुआबेरा, सिमराबेरा और धोरी को लक्ष्य बनाया गया। प्रत्येक संदिग्ध गांव के लिए एक-एक निडर एवं बहादुर कमांडर के अधीन पृथक दलों का गठन किया गया। तदनुसार, गांव दानरा की तलाशी का कार्य श्री अनिल कुमार सिंह, उप कमांडेंट और उनके दल को सौंपा गया, जिसमें क्यूएटी बटालियन और राज्य पुलिस के घटक शामिल थे।

योजना के अनुसार, अभियान की शुरुआत दिनांक 07/02/2016 को 1700 बजे की गई और सभी दल पूरी गोपनीयता बरतते हुए घनी झाड़ियों की आड़ में पूर्व निर्धारित लक्ष्य की ओर रवाना हो गए। 1830 बजे तक श्री अनिल कुमार सिंह की कमान के अधीन वाला दल अम्बा नाला नामक स्थान के निकट पहुंच चुका था, जो कि असमतल स्थलाकृति के साथ घनी झाड़ियों की मौजूदगी तथा पानी की उपलब्धता के कारण शिविर लगाने के लिए रणनीतिक दृष्टि से एक उपयुक्त स्थान था। यह स्थान लक्षित गांव दानरा से करीब 2 किमी. की दूरी पर था। चूंकि उस स्थान पर शिविर लगाने के लिए पर्याप्त आड़ एवं अवसर उपलब्ध था, इसलिए श्री अनिल कुमार सिंह ने पहले उस क्षेत्र की तलाशी लेने और उसके बाद गांव दानरा की ओर बढ़ने का निर्णय लिया।

लगभग 1900 बजे जब श्री अनिल कुमार सिंह अपने दल की अगुवाई करते हुए उस क्षेत्र की तलाशी ले रहे थे, तभी उन्होंने वहां एक पहाड़ी की चोटी पर कुछ संदिग्ध गतिविधि देखी। लेकिन रोशनी के कम होने के कारण माओवादी और ग्रामीण के बीच अंतर कर पाना मुश्किल था। एहतियात के तौर पर उन्होंने अपने सैन्य दल को आगे बढ़ने से रूकने और नीचे लेट जाने का संकेत दिया। वहां की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने एचसी/आरओ मनोज कुमार बिसोई, कांस्टेबल/जीडी सुकेश महतो और कांस्टेबल/जीडी प्रमोद कुमार को साथ में लेकर एक छोटे टोही दल का गठन किया और उसकी अगुवाई करते हुए गोपनीय तरीके से उस पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ने लगे। लेकिन बमुश्किल वह टोही दल कुछ ही कदम आगे बढ़ पाया होगा, तभी उनके ऊपर उस चोटी से अचानक प्रचंड गोलीबारी की जाने लगी। ऐसे अचानक हमले का सामना करने के लिए तैयार टोही दल ने तत्काल जवाब दिया और वहां बेहद कम दूरी से भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। जवाबी हमला शुरू करने के लिए माओवादियों को अपनी जगह पर ही उलझाने के लिए श्री अनिल कुमार सिंह ने अपने पीछे मौजूद सैन्य टुकड़ी को भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया, जबकि उन्होंने अपने ऊपर हो रही प्रचंड गोलीबारी को नजरअंदाज करते हुए माओवादियों की मौजूदगी वाले पहाड़ के किनारे आगे बढ़ते हुए अपने टोही दल की अगुवाई की। इससे पहले कि माओवादी कमांडर की दक्ष युक्ति को समझ पाते, उनके छोटे दल ने बेहद नजदीक से माओवादियों के ऊपर गोलियों की बौछार कर दी। इस हमले में कुछ माओवादी गोलियां लगने से घायल हो गए, जिससे उनके बीच अफरा-तफरी फैल गई और वे पीछे हटने लगे।

तथापि, कुछ माओवादी, जो सुरक्षित आड़ों के पीछे बिल्कुल सुरक्षित स्थिति में थे, जमीन पर डटे रहे और उन्होंने बहादुर सैनिकों के ऊपर भारी गोलीबारी की। जैसे ही वहां अंधेरा छाने लगा था और यह जानते हुए कि दुश्मन अंधेरे की आड़ में वहां से भागने की कोशिश करेंगे, चारों बहादुर सैनिक बहादुरी का अनूठा प्रदर्शन करते हुए अपनी आड़ से बाहर आ गए और उन्होंने वहां एक घिरे हुए एक माओवादी के ऊपर निशाना लगा कर गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी सटीक गोलीबारी के परिणामस्वरूप वह माओवादी मारा गया। तब तक

माओवादी यह समझ चुके थे यदि सैन्य टुकड़ी को आगे बढ़ने से नहीं रोका गया तो उन्हें अपने और अधिक साथियों के हताहत होने का नुकसान उठाना पड़ेगा। सैन्य टुकड़ी का मुकाबला करने के लिए माओवादी गोलीबारी की आड़ में भाग कर विभिन्न दिशाओं में फैल गए और उन्होंने कुछ दूरी पर पेड़ों के पीछे पोजीशन ले ली। चूंकि उस समय तक अंधेरा हो चुका था और माओवादियों के पोजीशन का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था, इसलिए श्री ए.के. सिंह ने अपनी सैन्य टुकड़ी को पेड़ों के पीछे आड़ लेने और माओवादियों द्वारा रूक-रूक कर की जा रही गोलीबारी का जवाब देते रहने का आदेश दिया। माओवादियों की ओर से रूक-रूक कर की जा रही गोलीबारी अगले एक घंटे तक जारी रही जिसके बाद उसमें कमी आ गई। माओवादियों द्वारा किसी भी अचानक आक्रमण का जवाब देने के लिए सैन्य टुकड़ी पूरी रात चौकन्नी रही। पौ फटते ही उस क्षेत्र की तलाशी ली गई, जिसके दौरान सैनिकों ने वहां से हरे रंग की वर्दी में एक .315 राइफल के साथ माओवादी का शव बरामद किया, बाद में जिसकी पहचान देवा लाल माझी रियो गांव-असना पानी, पीएस-महुआटांड, बोकारो के रूप में की गई। उस स्थान से भारी मात्रा में आपत्तिजनक सामग्रियों, माओवादी सहित्य और शिविर लगाने की सामग्रियों के साथ एक हथियार के साथ ललिता हंसदा नामक एक घायल महिला माओवादी को भी गिरफ्तार किया गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अनिल कुमार सिंह, उप कमांडेंट, मनोज कुमार बिसोई, हेड कांस्टेबल, सुकेश महतो, कांस्टेबल और प्रमोद कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 07.02.2016 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 82-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राजेश शुक्ला,
कांस्टेबल
02. रणधीर सिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.09.1992 को यह सूचना प्राप्त हुई कि केसीएफ का स्वयंभू लेफ्टिनेंट जनरल, खजान सिंह नामक एक दुर्दांत उग्रवादी, पुत्र वासन सिंह, निवासी-गांव सत्तोवाली ने लोंगियावाली और भोलेवाल क्षेत्र में गांव विल्ला-वाजू में एक फार्म हाउस में पनाह ले रखी है। तदनुसार श्री मुखराम यादव, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन बी/80 और ई/80 में से प्रत्येक की एक-एक प्लॉटून और स्थानीय पुलिस के साथ उस क्षेत्र में लगभग 0500 बजे एक तलाशी अभियान शुरू किया गया। लगभग 1100 बजे जब ये दल उस क्षेत्र के विभिन्न फार्म हाउसों में तलाशी लेते हुए गांव-लोंगियावाली के निवासी मंगल सिंह के फार्म हाउस के निकट पहुंचे, तभी वे पास के ही एक गन्ने के खेत से अचानक की जाने वाली भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए। यूनिट के सुरक्षा कर्मिकों ने भारी गोलीबारी से हतोत्साहित हुए बगैर तत्काल पोजीशन ले ली और जवाबी गोलीबारी की। इस भारी गोलीबारी के बीच, कांस्टेबल/जीडी राजेश शुक्ला ने एक उग्रवादी को गन्ने के एक खेत से दूसरे खेत में भागने का प्रयास करते देखा। अपनी सुरक्षा पर गौर किए बगैर कांस्टेबल राजेश शुक्ला ने सर्वोच्च स्तर के शौर्य का प्रदर्शन किया और वे उस उग्रवादी को भागने से रोकने के लिए भाग कर उसके सामने की ओर लपके। उनके पीछे-पीछे कांस्टेबल रणधीर सिंह भी भागे। जब उस उग्रवादी ने देखा कि कांस्टेबल राजेश शुक्ला उसे सामने से घेरने के लिए तेजी से उसकी तरफ आ रहे हैं, तो उसने उनकी ओर अपनी एके-47 राइफल से गोलियों की बाँछार कर दी। कांस्टेबल राजेश शुक्ला के पेट में चार गोलियां लगीं। गंभीर रूप से घायल होने और गोलियों के घाव से तेज गति से खून रिसने के बावजूद, कांस्टेबल राजेश शुक्ला ने अपना मानसिक संतुलन बरकरार रखा और उन्होंने एक सैंकड में ही उस उग्रवादी के ऊपर भी जवाबी गोलीबारी की जिससे वह घायल होकर गिर गया। जब कांस्टेबल रणधीर सिंह कांस्टेबल राजेश शुक्ला को कवर देने के लिए उनकी ओर भागे, तो उनके ऊपर भी गन्ने के खेत में छिपे हुए दूसरे उग्रवादी द्वारा गोलियां चलाई गईं। गोलियां लगने से हो रही पीड़ा और शरीर से रिस रहे खून की परवाह किए बगैर,

कांस्टेबल राजेश शुक्ला और कांस्टेबल रणधीर सिंह उन उग्रवादियों को घेरने में सफल रहे, जो तब गन्ने के खेतों से रेंगते हुए गांव-सत्तोवाली में श्रीमती महिंदर कौर के घर में घुस गए। कांस्टेबल राजेश शुक्ला और कांस्टेबल रणधीर सिंह ने उनका पीछा करना नहीं छोड़ा और उनका पीछा करते हुए उस घर तक पहुंच गए। इसी बीच शेष बल कार्मिक भी वहां पहुंच गए और उन्होंने उस घर की घेराबंदी कर दी। उग्रवादियों ने घर के भीतर एक कमरे में पोजीशन ले ली जहां उन्होंने पहले से ही एक बंकर बना रखा था। घर की छत में एक सुराख करके कमरे के भीतर हथगोले फेंके गए और जब हथगोले फटने लगे तो एक उग्रवादी ने कमरे के दरवाजे से बाहर निकलने का प्रयास किया और वह गोलीबारी में मारा गया। जब घर के भीतर से गोलीबारी का जवाब आना बंद हो गया, तो वहां की तलाशी ली गई। वहां से एक उग्रवादी का शव बरामद हुआ। उस कमरे से 40 जिंदा राउंड के साथ एक एके-47 राइफल, एक स्टिक बम और ढेर सारी कारतूसों के खोखे बरामद किए गए। मारे गए उग्रवादी की पहचान केसीएफ संगठन के लेफ्टिनेंट जनरल खजान सिंह, पुत्र वासन सिंह, निवासी-गांव सत्तोवाली के रूप में की गई, जो सुरक्षा बल कार्मिकों सहित उस क्षेत्र में बहुत से व्यक्तियों की हत्या के लिए जिम्मेवार था।

कांस्टेबल राजेश शुक्ला और कांस्टेबल रणधीर सिंह ने उग्रवादियों के सफाये के लिए अपनी जान की परवाह किए बगैर अत्यधिक साहसी तरीके से शौर्य, असाधारण सूझबूझ, बहादुरी, दृढ़ता और निस्वार्थ कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया। यदि उनके द्वारा बहादुरीपूर्वक प्रयास नहीं किया जाता, तो निश्चित रूप से वे वांछित एवं जघन्य उग्रवादी वहां से फरार होने में सफल हो जाते।

मारे गए उग्रवादी के शव को शव परीक्षण हेतु भेजा गया और बरामद किए गए हथियार/गोलाबारुद को पुलिस स्टेशन-घुमन में जमा करवाया गया, जहां आईपीसी की धारा 307/34 और आयुध अधिनियम की धारा 25-54/59 के तहत मामला दर्ज किया गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राजेश शुक्ला, कांस्टेबल और रणधीर सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.09.1992 से दिया जाएगा।

अ. राय

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 83-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विनय कुमार,
सहायक कमांडेंट
02. अशोक कुमार जाट, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल
03. सुधीर कुमार,
कांस्टेबल
04. रंजीत कुमार तिवारी,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 25.10.2015 को लगभग 20:20 बजे कंपनी कमांडर श्री विनय कुमार, सहायक कमांडेंट को एक नाला के निकट भारी संख्या में माओवादियों के इकट्ठा होने और उनके द्वारा नव-निर्मित मराड़गुड़ा-गोलापल्ली सड़क को खोदे जाने की सूचना मिली।

श्री विनय कुमार, सहायक कमांडेंट के कमान के अधीन एफ/217 के तीन दलों का गठन किया गया। वहां डटे हुए दुश्मनों द्वारा घात के संभावित खतरे तथा कठिन स्थलाकृति का उग्रतापूर्वक सामना करते हुए सैन्य टुकड़ियां रात के अंधेरे को चीरते हुए गोपनीय तरीके से नाले की ओर बढ़ने लगीं जो घनी झाड़ियों और बड़े पेड़ों से घिरा हुआ था। लक्षित क्षेत्र के निकट पहुंचते हुए सैनिकों ने नाले के निकट कुछ संदिग्ध आवाजें सुनीं और गतिविधियां देखीं। इन घटनाक्रमों के आधार पर कार्रवाई करते हुए सैन्य टुकड़ियां वहां दुश्मनों की संभावित मौजूदगी और उनके हमले की आशंका के कारण सावधान हो गईं।

चूंकि माओवादी जिन स्थानों पर थे, वह स्पष्ट नहीं था, इसलिए कुछ लोगों को आगे के क्षेत्र की छानबीन करने और उनका पता लगाने के लिए भेजा गया। कांस्टेबल/जीडी रंजीत तिवारी और कांस्टेबल/जीडी अशोक कुमार जाट उत्कृष्ट बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए नाला पार कर के उस क्षेत्र को क्लीयर करने और माओवादियों का पता लगाने के लिए निडरतापूर्वक आगे बढ़ गए, जबकि दल के शेष कार्मिकों ने नाले के निकट पोजीशन ले ली। जब ये दोनों बहादुर सैनिक निडरतापूर्वक नाला पार कर रहे थे, तभी झाड़ियों और पेड़ों के पीछे तैनात माओवादियों ने उनके ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। यह माओवादियों द्वारा लगाई गई सुनियोजित एवं भीषण घात थी। ऐसी भयानक स्थिति में, जब चारों ओर से गोलियों के रूप में मौत मंडरा रही थी, दोनों बहादुर सैनिकों के लिए गोलियों से बचने की कोई आइ नहीं थी। ऐसी संकट की स्थिति में अपने साहस और धैर्य को बनाए रखते हुए उन्होंने अपनी पूरी क्षमता से बहादुरीपूर्वक इसका जवाब दिया। लगातार जवाबी गोलीबारी करते हुए और गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की युक्ति को अपनाते हुए वे दानों वापस अपनी टुकड़ी में पहुंच गए।

माओवादियों की भीषण घात को तोड़ने के लिए नाला को पार करके एक साहसिक जवाबी हमले की योजना बनाई गई। योजना के अनुसार कांस्टेबल/जीडी अशोक कुमार जाट और कांस्टेबल/जीडी सुधीर कुमार के साथ एसआई/जीडी गुरमेज सिंह को बाएं किनारे से माओवादियों को उलझाने का कार्य सौंपा गया, जबकि विनय कुमार, एसी की कमान के अधीन कांस्टेबल/जीडी रंजीत कुमार तिवारी एवं अन्य कार्मिकों को सामने से माओवादियों के ऊपर हमला करना था। लेकिन संभावनाओं के विपरीत, बाएं किनारे को कवर करने के लिए आगे बढ़ रहे दल के ऊपर माओवादियों द्वारा भारी गोलीबारी की जाने लगी। माओवादियों की भारी गोलीबारी के कारण बायीं ओर से आगे बढ़ रहा छोटा दल मारक जोन में फंस गया और उनके पास आइ की गुंजाइश बेहद कम थी। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए बाएं किनारे से बढ़ रहे दल ने उपलब्ध न्यूनतम कवर के बीच पोजीशन ले ली और वे मजबूती से जमीन पर डटे रहे। गोलियों की भारी बौछार के बीच मारक जोन के भीतर मौजूद सैनिकों ने अति सुरक्षित स्थिति में मौजूद दुश्मनों के ऊपर जोरदार जवाबी धावा बोल दिया।

इस भीषण मुठभेड़ के दौरान एक गोली ने कांस्टेबल/जीडी अशोक कुमार का सीना भेद दिया और उनके शरीर से खून रिसने लगा। लेकिन तेजी से रिस रहे खून की परवाह किए बगैर, कांस्टेबल/जीडी अशोक कुमार बेहोश होने तक माओवादियों के ऊपर गोलीबारी करते रहे। इसी बीच कांस्टेबल/जीडी सुधीर कुमार भी, जो माओवादियों से निडरतापूर्वक मुकाबला कर रहे थे, छर्छा लगने से घायल हो गए। घातक रूप से घायल होने के बाद भी, कांस्टेबल/जीडी सुधीर कुमार ने मजबूती से जमीन पर डटे रहते हुए माओवादियों को वहां से दूर रखा, जिन्होंने उस समय तक सैन्य टुकड़ी को घेरना शुरू कर दिया था। करो या मरो की ऐसी स्थिति में, जहां कि संख्या बल में अधिक होने और अपनी रणनीतिक युक्ति वाली पोजीशन में होने के कारण माओवादी, सैनिकों पर कहर बरपा रहे थे, उस समय ठोस, साहसी एवं 'जो भी होगा देखा जाएगा' वाला निर्णय लेने की आवश्यकता थी। इस वास्तविकता को समझते हुए श्री विनय कुमार, एसी और कांस्टेबल/जीडी रंजीत कुमार तिवारी ने अपनी जान की परवाह नहीं की और उन्होंने फंसे हुए सैनिकों की ओर बढ़ते हुए किनारे से माओवादियों के ऊपर जोरदार हमला किया। दल के नायक श्री विनय कुमार, एसी ने सामने रह कर अपने दल का नेतृत्व किया और कांस्टेबल/जीडी रंजीत कुमार को माओवादियों के ऊपर यूबीजीएल से हमला करने का निर्देश दिया। गोलियों की बौछार के बीच कांस्टेबल/जीडी रंजीत कुमार ने कीमती समय गंवाए बगैर माओवादी ठिकानों पर सटीक रूप से ग्रेनेड दागे। यूबीजीएल से की गई सटीक गोलीबारी ने माओवादियों को घायल कर दिया जिससे उनका हौसला और मनोबल टूट गया। जब सैनिकों ने सूझ-बूझ से गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की युक्ति का प्रयोग करते हुए और अनुकरणीय बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ना शुरू किया, तब माओवादी अंधेरे में घने जंगल के भीतर भागने लगे। असाधारण साहस, युक्तिगत कौशल और जोरदार जवाबी हमले वाली कार्यवाही करके सैनिक माओवादियों की घात को तोड़ने में कामयाब हुए और उससे वे उस सड़क को नुकसान होने से बचाने में सफल हुए। यह श्री विनय कुमार, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी रंजीत कुमार तिवारी, कांस्टेबल/जीडी अशोक कुमार जाट और कांस्टेबल/जीडी सुधीर कुमार के बहादुरीपूर्ण कृत्य का ही परिणाम था, जिसमें उन्होंने माओवादियों के ऊपर समन्वित एवं जोरदार हमला किया और उसी के कारण वे अच्छी तरह से बनाए गए और पहले से ही ग्रहण किए गए अपने स्थानों से भागने पर मजबूर हो गए। दोनों घायल सैनिकों को लड़ाई के मैदान से बाहर निकाला गया लेकिन कांस्टेबल/जीडी अशोक कुमार जाट की जान चली गई और उन्होंने कर्तव्य की वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। मुठभेड़ के बाद उस स्थान से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारुद एवं अन्य उपकरण बरामद किए गए।

की गई बरामदगी:-

1. भरमार बंदूक	01
2. देशी मोटर	01
3. तार के साथ इलेक्ट्रॉनिक डेटोनेटर	01
4. तांबे के तार	20 मीटर
5. 7.62x51 एम.एम. के दागे गए खोखे	02
6. .303 के खाली दागे गए खोखे	01
7. धनुष	03

इस मुठभेड़ में सर्वश्री विनय कुमार, सहायक कमांडेंट, स्व. अशोक कुमार जाट, कांस्टेबल, सुधीर कुमार, कांस्टेबल और रंजीत कुमार तिवारी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.10.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 84-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सशस्त्र सीमा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री संजीत कुमार,
कांस्टेबल

(मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10.10.2015 को पकरीखुट्टा, कटहलडीह क्षेत्र के आस-पास घूम रहे 20-25 माओवादियों के एक समूह की मौजूदगी के विषय में पुलिस अधीक्षक, गोड्डा (झारखंड) से एक सूचना प्राप्त होने पर, पुलिस स्टेशन-सुंदरपहाड़ी, जिला गोड्डा के झारखंड पुलिस के 07 कर्मियों के साथ 18 बटालियन एसएसबी दुमका के 40 कर्मियों को शामिल करके तैयार किया गया एक गश्ती दल कंपनी मुख्यालय डमरू से गांव पकरीकुड्डा, डांगपारा और कटहलडीह के क्षेत्रों में अपना आधिपत्य कायम रखने के लिए गश्त के लिए रवाना हो गया।

गांव कटहलडीह पहुंचने पर, उन्होंने देखा कि तीन ग्रामीण, सैनिकों को देख कर भागने लगे। उनकी संदिग्ध गतिविधियों को देख कर, निरीक्षक (जीडी) श्यामल पॉल, कंपनी कमांडर, 'ए' कंपनी डमरू, एसएसबी और एसआई सत्येंद्र प्रसाद, एसएचओ, पुलिस स्टेशन सुंदरपहाड़ी ने सैनिकों को सचेत करते हुए उन्हें पोजीशन लेने का आदेश दिया। जैसे ही सैन्य टुकड़ी गांव की ओर आगे बढ़ी, तभी कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने, जिनके नक्सली होने का संदेह था, गश्ती दल के ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी और सैनिकों ने भी तत्काल जवाबी गोलीबारी की। कांस्टेबल (जीडी) संजीत कुमार ने पहली ही गोली की आवाज सुनने के बाद तत्काल ही सूझ-बूझ के साथ पोजीशन ले ली और उन्होंने फौरन आगे बढ़ कर अपनी 5.56 एमएम की इन्सास राइफल से नियंत्रित गोलीबारी करते हुए नक्सलियों को जवाब दिया। नक्सलियों की ओर से की जा रही भारी गोलीबारी के बावजूद उन्होंने अपनी जान की परवाह नहीं की और आगे बढ़ते हुए गोलीबारी करना जारी रखा। कांस्टेबल (जीडी) की ओर से इस बहादुरीपूर्ण कार्रवाई ने नक्सलियों के बीच भय पैदा किया, जिससे वे मजबूर हो कर छिपने के लिए इधर-उधर भागने लगे, जिसके कारण बल के अन्य कार्मिक तत्काल पोजीशन लेने और नक्सलियों के हमले के विरुद्ध कार्रवाई करने में सक्षम हो पाए। दोनों ओर से भीषण गोलीबारी के बाद, जो कि लगभग दो घंटे (0945 बजे से 1130 बजे तक) तक चली, सैनिकों ने नक्सलियों को घटना स्थल से भागने पर मजबूर कर दिया। नक्सलियों के साथ गोलीबारी में कांस्टेबल (जीडी), संजीत कुमार को बुलेट प्रूफ जैकेट के ठीक ऊपर छाती के बायीं ओर एक गोली लग गई। उसके बाद वे वहां से हिल नहीं पाए लेकिन उन्होंने नक्सलियों के सामने मजबूत प्रतिरोध खड़ा कर दिया जिससे वे बल को आगे हताहत नहीं कर सके।

इस प्रकार कांस्टेबल (जीडी) संजीत कुमार ने उत्साह एवं समर्पण भाव से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अनुकरणीय साहस, बहादुरी एवं वीरतापूर्ण कार्य का प्रदर्शन किया और वे अंतिम सांस तक अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित रहे और देश की सेवा में अपना सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

की गई बरामदगियां:-

1. एसएलआर-01 और मैगजीन	-	01
2. मैगजीन	-	04
3. 7.62 एमएम बीएल गोलाबारूद	-	69
4. 5.56 एमएम इन्सास मैगजीन	-	01
5. 5.56 एमएम इन्सास राउंड खाली खोखे	-	08
6. मोटरोला वाकी टॉकी	-	01
7. नोकिया मोबाइल	-	01
8. विडियोकोन की टैबलेट	-	01
9. 200 रु/- नकद		

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री संजीत कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.10.2015 से दिया जाएगा।

अ. राय
विशेष कार्य अधिकारी

कारपोरेट कार्य मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 13 अप्रैल 2017

संकल्प

सं. 11015/1/2013-रा.भा.नीति—श्री विजय गोयल, सांसद (राज्य सभा) द्वारा संघ राज्य मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने के फलस्वरूप कारपोरेट कार्य मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के गठन के संबंध में दिनांक 17 फरवरी, 2015 को जारी समसंख्यक संकल्प में आंशिक संशोधन करते हुए श्री ओम प्रकाश माथुर, संसद सदस्य (राज्य सभा) को उनके स्थान पर हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में नामित किया जाता है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति समिति के सभी सदस्यों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों, राष्ट्रपति सचिवालय, उप राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, लोक/राज्य सभा सचिवालय, नीति आयोग, संसदीय राजभाषा समिति तथा भारत सरकार के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक, महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली और सभी राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनों को भेजे।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को जनसाधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

ए.अशोली चलाई
संयुक्त सचिव

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग
(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद)

नई दिल्ली-110001, दिनांक 23 मार्च 2017

सं. 1/3/2013-पीडी—सामान्य सूचना हेतु अधिसूचित किया जाता है कि सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम (1860 का XXI) के प्रयोजनार्थ वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की शासी निकाय का तीन वर्ष की अवधि के लिए दिनांक 06 जनवरी 2017 से 05 जनवरी 2020 तक के लिए पुनर्गठन किया गया है तथा इसमें निम्नांकित सम्मिलित होंगे :—

क्रम संख्या	नाम, पदनाम एवं पता	शासी निकाय में पद
01	महानिदेशक (डा. गिरीश साहनी) वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) अनुसंधान भवन 2, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110001.	अध्यक्ष (पदेन)
02	सचिव (व्यय) (श्री अशोक लवासा) वित्त मंत्रालय नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली -110001.	सदस्य-वित्त (पदेन)

03	डॉ. (श्रीमती) मधु दीक्षित निदेशक सीएसआईआर - केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) सेक्टर - 10, जानकीपुरम एक्सटेंशन, सीतापुर रोड लखनऊ -226031.	सदस्य
04	डॉ.राकेश के. मिश्रा निदेशक सीएसआईआर - कोशिकीय एवं आणविक जीवविज्ञान केन्द्र उप्पल रोड, हैदराबाद -500007.	सदस्य
05	श्री दिलीप शांघवी प्रबंध निदेशक सन फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्रियल लिमिटेड सन हाउस, सीटीएस संख्या 201- बी/1, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, गोरेगांव, मुंबई -400 063.	सदस्य
06	श्री दिनेश के सर्राफ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक आयल एंड नेचुरल गैस कारपोरेशन लिमिटेड (ओनजीसी) 5, नेल्सन मंडेला मार्ग, बसंत कुंज, नई दिल्ली - 110 070.	सदस्य
07	प्रो. एम. आर. सत्यनारायन राव प्रोफेसर, क्रोमेटिन बायोलॉजी लेबोरेटरी मॉलिक्यूलर बायोलॉजी एंड जेनेटिक्स यूनिट (एमबीजीयू) जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च, जक्कुर, बेंगलुरु -560 064.	सदस्य
08	प्रो. श्रीकुमार बनर्जी होमी भाभा नेशनल इंस्टिट्यूट भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर (बीएआरके-बार्क) (कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय काश्मीर, श्रीनगर, जेएंडके) अणुशक्तिनगर, मुंबई -400 094.	सदस्य
09	डॉ. अरुण कुमार ग्रोवर उपकुलपति पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़-160014.	सदस्य
10	सचिव (प्रो. आशुतोष शर्मा) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) टेक्नोलॉजी भवन, न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली -110016.	सदस्य
11	सचिव (डा. एस. क्रिस्टोफर) रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग (डीडीआरडी) एवं अध्यक्ष, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) रक्षा मंत्रालय नई दिल्ली -110001.	सदस्य

के. आर. वैधीस्वरन
संयुक्त सचिव (प्रशासन)

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 13 अप्रैल 2017

सं. 8-65/2017-पीपी-1।—समय-समय पर यथासंशोधित भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग की दिनांक 26-11-1993 की अधिसूचना संख्या 8-97/91-पीपी-1 के आंशिक संशोधन में सामान्य सूचना के लिए एतद्वारा यह अधिसूचित किया जाता है कि निम्नलिखित प्रविष्टियों को उन अधिकारियों, जो अन्य देशों को निर्यात किए जाने वाले पौधों और पौध सामग्री के संबंध में निरीक्षण करने धूमन, अथवा संक्रमणमुक्त करने तथा पादप स्वच्छता प्रमाण पत्र प्रदान करने के लिए प्राधिकृत हैं, को पदनाम द्वारा विविधरित करते हुए प्रासंगिक शीर्षों के अंतर्गत जोड़कर अथवा प्रतिस्थापन द्वारा शामिल किया जाएगा ।

I. केन्द्र सरकार

(lix) प्रभारी अधिकारी

पौध संगरोध केंद्र,

पोर्टब्लेयर (अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह)

[कोड सं. 'सी'(पीपीक्यूएस)1(59)]

(lx) प्रभारी अधिकारी

पौध संगरोध केंद्र,

गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

[कोड सं. 'सी'(पीपीक्यूएस)1(60)]

अश्विनी कुमार

संयुक्त सचिव

नोट: मूल अधिसूचना कृषि एवं सहकारिता विभाग के दिनांक 26.11.1993 की अधिसूचना 8-97/91-पीपी 1, उसके बाद दिनांक 25.11.97 की अधिसूचना सं. 8-97/91-पीपी-1, दिनांक 30.09.1999 की अधिसूचना सं. 8-70/98-पीपी 1, दिनांक 06.11.2016 की अधिसूचना सं.8-86/2000 पीपी 1, दिनांक 06.05.2002 की अधिसूचना सं. 8-86/2000 पीपी 1, दिनांक 30.05.2002 की अधिसूचना सं. 8-86/2000 पीपी 1, दिनांक 7.6.2004 की अधिसूचना सं. 8-33/2003 पीपी 1, दिनांक 11.05.05 की अधिसूचना सं. 8-217/2004-पीपी 1 (पीटी), दिनांक 20.06.2005 की अधिसूचना सं. 8-217/2004-पीपी 1 (पीटी), 18.12.2005 की अधिसूचना सं. 8.217/2014-पीटी 1 (पीडी) की अधिसूचना सं. 8-217/2004 1 (पीटी), दिनांक 26 दिसंबर, 2011 की अधिसूचना सं. 8-214/2004 1 (पीटी), दिनांक 30 जनवरी, 2013 की अधिसूचना सं. 8-217/2004- पीपी 1 (पीटी), दिनांक 6 जुलाई, 2015 की अधिसूचना सं. 8-217/2004-पीपी 1 (पीटी), दिनांक 21 जून, 2016 की अधिसूचना सं. 8-217/2994 पीपी 1 (पीटी), और दिनांक 12 जनवरी, 2017 सं. 8-217/2004 पीपी 1 (पीटी) के अधीन संशोधित किया गया।

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 13th April 2017

No. 46-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Andhra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. S. Sreedhar Raja,
Assistant Commandant
02. U.Lakshmana,
Senior Commando
03. M. Surya Teja,
Junior Commando
04. J. Rambabu,
Junior Commando
05. B. Naga Karthik,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On credible information from SP/OSD, Visakhapatnam Rural that 15-20 armed cadre of CPI (Maoists) were moving in area of Edulabanda, Gorrelagondi & Palasamudram Villages under Mampa PS limits, Koyyuru Mandal, Visakhapatnam district planning to indulge in violence, three (03) Greyhounds assault units were deployed to search and apprehend the Maoists.

After the briefing, Assault unit (comprising above personnel and other) of Greyhounds were dropped in the outskirts of Jangalatota Village on 03.05.2016. They trekked through inhospitable terrain in the night amidst thick jungle, ridden with land mines and infested with armed militia. On 04.05.2016 at 1800 hrs, the unit under Sri S. Sreedhar Raja, Assistant Commandant identified the hideout of Maoist to the Northeast of Palasamudram Village of Mampa PS limits. While the unit personnel were observing the area for confirmation, the maoist sentry identified the police movement and opened fire on party with an intention to kill the police personnel. Sri. S Sreedhar Raja guided the team members to take cover from fire and outflank the Maoist camp. The Maoists disregarded the calls of police to surrender and continued to fire against the police party with automatic weapons like AK-47, SLR, INSAS, etc. Braving the bullets and IEDs, the above police personnel spearheaded their team with exemplary commitment and advanced forward to apprehend the Maoists. The police personnel thrust forward through dense foliage, from low ground to steep heights and chased the Maoists through a deep Nala while the other unit members formed in to cut-off teams. The fire opened in self-defense by the police personnel, resulted in death of 02 male and 01 female hard core Maoists and led to recovery of AK-47 Rifle- 01, SLR weapons-02, Pistol-01, Magazines- 04, 186 Rounds of various ammunitions, Directional IEDs, Day Binocular - 01, etc. The deceased were identified as 1) Azad @ Gopal ACM (adhoc DCM), 2) Anand ACM and 3) Kamala ACM.

This act of extreme bravery, presence of mind under extremely hostile situation and employing effective tactics in tough terrain led to one of the biggest setbacks dealt to the notorious AOBSCZC Maoists.

In this encounter, S/Shri S. Sreedhar Raja, Assistant Commandant, U. Lakshmana, Senior Commando, M. Surya Teja, Junior Commando, J. Rambabu, Junior Commando and B. Naga Karthik, Sub Inspector, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/05/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 47-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. K. Ananda Reddy,
Dy. Superintendent of Police

02. M. Naveen Kumar,
Junior Commando
03. K. Udaya Kumar,
Junior Commando
04. G Maheswara Rao,
Junior Commando

Statement of service for which the decoration has been awarded

SP East Godavari District and Sri K. Ananda Reddy, DSP, SIB received reliable information on assembling, of about 20 Sabari Area Committee Maoists in the forest near Mallampeta village under Chintoor PS, East Godavari district to commit offences. The Greyhounds Assault unit lead by Sri Raiu, DAC and Sri G. Maheshwara Rao, JC was detailed to search and apprehend the Maoists on 27.12.2015. The terrain in the operational area at a distance of 19 KMs from the nearest AOP is very hard, covered with thick thorny bushes, steep heights, deep gorges & Nalas and remained as impregnable den for Maoist cadres with overwhelming support of many sympathizers.

Greyhounds party observed the group of around 20 Maoists in olive-green uniform armed with deadly weapons at a distance half kilometer from their location on 28.12.2015 at 1400 hrs. The unit in-charge G. Raju, DAC and K. Anand Reddy, Dy. S.P, SIB with a determination to either arrest or neutralize them, advanced tactically by dividing the unit into 3 teams and asked the Maoists to surrender. The Maoists observed the Police and opened indiscriminate fire with automatic weapons like AK-47, INSAS, LMG, etc..

Sri. K. Ananda Reddy, Dy. SP led the main firing group and he was joined by M. Naveen Kumar, JC, K.V. Udaya Kumar, JC and G. Maheswara Rao, JC. Apart from self-defense, they showed great courage, exemplary commitment and led their team with effective retaliation- fire. The exchange of fire continued for up to 10 minutes. The Maoists could not withstand the retaliation from the police party and escaped into dense forest. The timely retaliation and brave act of above police party saved the lives of other Commandos. After seizing the fire, the police team searched the area and found the dead body of Kalma Chukka Nagesh, Secretary, Sabari Area Committee and one pistol with ammunition was recovered. The deceased was extremely notorious, involved in 30 cases of violence, including the murder of at least 15 innocent people and tried to attack security personnel on multiple occasions.

The police personnel courageously braved the volley of bullets of Maoists in spite of initially being pinned down by their burst fire. These police personnel retaliated with exemplary tactical movement and fire, resulting in the death of (01) dreaded Maoist and also saved the lives of other Commandos of the unit.

In this encounter, S/Shri K. Ananda Reddy, Dy. Superintendent of Police, M. Naveen Kumar, Junior Commando, K. Udaya Kumar, Junior Commando and G. Maheswara Rao, Junior Commando, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/12/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 48-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Kondrathi Sreenivasa Rao,
ARPC
02. Thotapalli Surya Prakash,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Sri K. Srinivasa Rao, ARPC and Sri T. Suryaprakash, CT Guntur district are members of the police party. Sri. K. Sreenivasa Rao played important role in collection of information. T. Surya Prakash, CT lead the party to the place of stay of Maoist party.

On receipt of information of Nallamala Forest Committee Cadre, planned combing Operation in Pelutla forest of Yerragondlapalem PS limits, Prakasam district. When the party reached Murari Kuruva, on 19.06.2014, In charge of officer noticed some Armed dalam members wear Olive Green Dress. Then officer immediately divided party into 3 groups for action. While reaching the enemy, the enemy also noticed the Police party and opened fire. The In-charge officer warned them to surrender, but they did not care and continued firing indiscriminately with automatic weapons. The above police personnel retaliated without caring for their lives, used all field tactic movements. In the incident, one Male Maoist, who was firing on the Police party was killed. When other Maoists started firing, on the police party then the above police personnel very daringly entered the open area risking their lives and fired on the Maoists. After completion of firing they found 3 dead bodies in the area and also recovered 1- AK 47 Rifle, 1- 7.62 SLR, 1- .303 Rifle, 1- 30 mm Carbine in Cr.No. 61/2014 of Yerragondapalem PS of Prakasam District.

By the daring action of both the police personnel Maoist party is neutralized in the area. The Police party saved from the indiscriminate firing of the Maoists by the risk taking and daring successfully operation of these police personnel.

In this encounter, S/Shri Kondrathi Sreenivasa Rao, ARPC and Thotapalli Surya Prakash, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/06/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 49-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Andhra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri P.S.G. Pavan Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 17.06.2015 specific inputs were received about a meeting being planned by CPI Maoists in the Gobarpada forest area for targeting the security forces and vital Govt. installations. An anti- Maoist/search operation was planned to counter the Maoists involving district special parties .The units were briefed at 1300 hrs same day regarding the target and objective of operation besides the contingency plan. Consequently the troops successfully negotiating through the tough terrain and heavy downpour, reached the target location which is situated deep inside the jungle. The operational parties sustained themselves for three nights in the jungles.

In the morning of 20.06.2015, District Special party (CAP 11) consisting of 24 commandos and led by PSG Pavan Kumar, Constable moved closer to the target area amidst heavy downpour and low visibility. At around 0800 hours, there was a sudden outburst of fire upon the Police parties that prompted immediate evasive action. The firing was indiscriminate and relentless threatening heavy damage to Police parties. At this juncture, PSG Pavan Kumar, Constable displaying exemplary courage and selflessness, crawled his way out of the killing zone and fired back at the Maoists. His brave action not only motivated others to follow suit but also successfully broke the stranglehold of the Maoists. He was ably supported by other members of the team and they were able to thwart the enemy attack during the prolonged gun battle that lasted for more than twenty minutes. Unable to withstand the intense counter action by the Police parties, Maoists fled away from the exchange of fire scene. The audacious action of PSG Pavan Kumar, Constable and the team resulted in successfully neutralizing the enemy threat without suffering any damage which otherwise appeared imminent at the time of attack.

The post-incident search resulted in recovery of a dead body of an unidentified male Maoist in uniform (later identified as Suryam, Gumma Area Committee, MKB Division, AOB SZC), along with one .303 weapon and grenade. Further search of the area, yielded 10 Kitbags, 4 hand grenades, 2 Motorola Walkie-Talkies. Apart from the arms and ammunition, huge quantities of medicine, water cans, uniforms, magazine pouch etc., were also recovered. The recoveries established the presence of Maoist leaders of Gumma Area Committee, MVKB Division, AOB SZC. The parties were then directed to exit in smaller groups to avoid any attack while on retreat.

PSG Pavan Kumar, Constable along with others showed highest levels of commitment and bravery in countering the relentless fire from the Maoists. He exhibited sharp tactical skills and exemplary team spirit in dangerous circumstances. His actions inspired the team not only to withstand the enemy onslaught but also to convert the adverse situation into the one of glory, without conceding any casualty.

In this encounter, Shri P.S.G. Pavan Kumar, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/06/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 50-Pres/2017-The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ratul Nunisa, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05/06/2014, acting on a tip off regarding movement of armed militants, Late Nityananda Goswami, APS, the then Supdt. of Police, Hamren along with 18 others arranged to launch a raid and search operation in a hilly and jungle village named Rumphum area. The Police team was divided into three groups - first two groups conducted search and raid operation while last group consisting Shri Nityananda Goswami himself and his protection team of 5 (five) personnel including Ratul Nunisa stationed themselves near the alighting point. An encounter took place between a large group of heavily armed militant and the search parties which were around three kilometer away from the party of Shri Goswami and encounter continued for about two hours. After that another encounter took place between the militants and the police party led by Shri. Goswami. After sometime Shri Goswami and his team retreated. Because of low mobility of Shri Goswami due to his age (59 years), it was very difficult for him to make tactical movements fast and also to retreat. The other team members did not take this fact into consideration and they retreated very fast with disregard to the age and ability of their protectee. Ratul Nunisa, Constable could have also followed them. But he chose otherwise. Despite great threat due to continuous firing by the militants from the back side, Ratul Nunisa chose to position himself between the militants and his protectee. When Shri Goswami came under heavy firing by the militants, it was Ratul Nunisa only who, inspite of knowing the great threat to his personal safety because of immobility on the part of his protectee, fought bravely with the militants and tried to save Shri Goswami. He remained undeterred, displaying grit and raw courage with utter disregard to his personal safety during the entire period of fierce gun battle that took place thereafter. He alone could prevent the entire group of militant for around half an hour time from advancing towards Shri Goswami. After continued firing by him all alone for around half an hour to save Shri Goswami, his ammunitions were exhausted and his rifle was hit by bullets of militants making it unserviceable. He had the option of taking a safe exit from the place much earlier with total disregard to the safety of his protectee. But he did not retreat leaving behind his protectee in the middle of the blazing guns of the militants. Having no option left to save Shri Goswami, he gave a body cover like a shield to protect Shri Goswami from being hit by bullets. In his brave attempt to protect Shri Goswami from the fire of the militant, he made the supreme sacrifice. Amongst all the other five personnel who accompanied Shri Goswami, he was the only one who showed exemplary courage and dutifulness and tried to save his protectee till his last bullet and breathe.

In this encounter, Late Shri Ratul Nunisa, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/06/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 51-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Sunil Kumar, IPS,
Superintendent of Police

02. Birdhan Doley,
Sub-Inspector
03. Pinku Das,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27/09/2014 a secret information was received by Shri Sunil Kumar, IPS, Supdt. of Police, Kokrajhar about movement of 30-40 heavily armed NDFB cadres under the command of SS C-in-C B. Bidai in Ripu Reserve forest areas under Kachugaon Police Station. The main intention of the cadres was to attack security forces and create terror among people. Shri Sunil Kumar, IPS, Supdt. of Police, Kokrajhar further developed this input and found that the NDFB cadres will cross Hel river to enter in Gossaigaon area with a motive to attack police/security forces. On this, Police and Army launched joint operation under the overall command of Shri Sunil Kumar, IPS, Supdt. of Police, Kokrajhar and took a long overnight walk on broken grounds along that Hel river in difficult terrain and inclement weather. On 28-09-2014 at about 8 AM, a group of heavily armed NDFB cadres was noticed by Shri Sunil Kumar, ABSI Birdhan Doley and PSO ABC Pinku Das. On seeing the Police, the NDFB terrorists started indiscriminate firing with their automatic sophisticated weapons towards Police with an intention to kill Superintendent of Police, Shri Sunil Kumar and other security personnel. Shri Sunil Kumar took position immediately and started firing exposing himself to the risk of terrorist firing. His fearless and prompt reaction galvanized other police and army personnel and they also started firing towards terrorist. Shri Sunil Kumar and ABSI Birdhan Doley as well as ABC Pinku Das displaying conspicuous courage and unmindful of their own safety quickly readjusted their positions amidst heavy fire and closed in on the extremists and prevented them to escape. This resulted into fierce encounter which lasted for about an hour. Some terrorist tried to escape under the cover of vegetation but Shri Sunil Kumar and his team chased the fleeing militants. After stoppage of firing from the terrorist side, the whole area was thoroughly searched. During search the four bullet ridden bodies of NDFB(S) terrorist alongwith one AK-56 rifle, two 7.65 mm pistol, one 9 mm pistol, three hand grenades, 26 live rounds of ammunitions, 04 mobile sets and many incriminating documents were recovered. Later on the NDFB(S) terrorists were identified as (1) Naisrang Goyary @ Bikkhang (22 years) S/o Chabiram Goyary, Vill- Thaisoguri, PS- Kochugaon, District- Kokrajhar (2) Mahan Basumatary (20 yrs), S/o Kabiram Basumatary, vill- Padmabil, PS- Serfanguri, Dist-Kokrajhar, (3) Dansrang Basumatary (20 years), S/o – Ranit Basumatary, vill- Padmabil. PS- Sefanguri, Dist- Kokrajhar and (4) Loharu Brahma (20 yrs), S/o Dandeswar Brahma, vill- Kapurgaon, PS- Serfanguri, Dist.-Kokrajhar.

In this encounter, S/Shri Sunil Kumar, IPS, Superintendent of Police, Birdhan Doley, Sub-Inspector and Pinku Das, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/09/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 52-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|---------------------------------------|----------------|
| 01. | Omprakash Sen,
Platoon Commander | |
| 02. | Sitaram Kunjam,
Constable | (Posthumously) |
| 03. | Payku Poyami,
Constable | (Posthumously) |
| 04. | Motiram Telam,
Assistant Constable | (Posthumously) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on specific intelligence inputs received from the office of IG SIB, PHQ, Raipur and IG Bastar Range Jagdalpur about the presence of the large number of naxal cadres alongwith some prominent naxal leader Chandranna, Kamlu

& Hemla Masa in the village Jappemarka under PS Mirtur, district Bijapur. On 16.05.2015 at around 03.35 hrs, a joint party (comprising of 42 men STF TF-16 led by Shri Om Prakash Sen, PC, 47 men of TF-13 led by HC Santosh Baghel, 60 men of DEF led by SI Santosh Gawde and Shri Pradeep Bisen - total 149 personnel) under the over all command of Shri K.L. Dhruwa, S.P. Bijapur left from Protected Center Bijapur.

As per the planning after dominating the area of villages Jewram, Bardela, Tugali Potenar and Hallur, they rested in villages Hallur and Paamra for night. The operation party left the place of rest in the early hours of 17.05.2015 at around 08:00 hrs while the police party was advancing towards crossing near hill area of village Jappemarka, CPI (Maoist) cadres attacked the police party. The naxalites opened indiscriminate fire on the party with the intention to kill the police personnel and loot their weapons. Although the naxals mounted a surprise attack on the police party. In retaliation, PC Om Prakash Sen, Constable Sitaram Kunjam, Asstt. Constable Payaku Poyam and Motiram alongwith their team started firing in self defense and naxals were asked to surrender but they continued to fire on the police parties. During the exchange of fire Constable Sitaram Kunjam, Constable Payku Poyam and Constable Motiram sustained bullet injuries. Inspite of their injuries all the three Constables along with PC Om Prakash Sen and other police personnel bravely fought with the naxalites and forced to retreat. The naxals fled away in the jungle by taking advantage of thick forest and undulating ground. After the exchange of fire, thorough search of incident site was conducted. During the search, dead body of two male unknown naxal along with 02 nos. Magazines of AK-47 (one damaged), 27 nos. live cartridge, 04 nos. miss round, 01 Bayonet, 09 nos. UBGL grenade with pouch, 02 nos. Mobile, one 12 bore gun and one 12 Bore gun with 31 nos. live rounds, one direction of bomb, one radio, one calculator, one pouch, cash Rs. 1,69,000/-, naxalite literature and other naxal related items were recovered.

During this action, Shri Om Prakash Sen, PC provided exemplary leadership to his troops at the hour of crisis. When his party was attacked by naxals, he exhibited great presence of mind and superb operational sense. Shri Om Prakash Sen, PC fought without caring for his life. He motivated his men to defend each other, under his able guidance and leadership, the police personnel kept moving forward to counter the naxal attack, knowing fully well that every step could have been fatal. The exemplary courage, lion hearted effort and gallant action without caring their life, in service of the Nation Shri Om Prakash Sen, PC Late Constable Sitaram Kunjam, Late Asstt. Constable Payku Poyami and Asstt. Constable Motiram Telam and has brought laurels to the Chhattisgarh Police.

In this encounter, S/Shri Omprakash Sen, Platoon Commander, Late Sitaram Kunjam, Constable, Late Payku Poyami, Constable and Late Motiram Telam, Assistant Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/05/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 53-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|----------------------------------|----------------|
| 01. | Pankaj Suryawanshi,
Constable | (Posthumously) |
| 02. | Ramesh Kumar Nag,
Constable | |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30th May 2014, under the guidance of Superintendent of Police of Narayanpur district anti-naxalite operation was launched in the Chhote Tondebeda Aader forest area. The operational team was constituted of both DEF and CAF personnel and was led by Sub Inspector Prasant Nag. Around 40 to 45 uniformed armed naxalites who were in a pre planned ambush for the police party opened indiscriminate firing on the Police personnel with an intention to kill the men and loot their weapon.

The Police personnel disclosed their identify and warned the naxalites to surrender themselves. Inspite of repeated warning, the naxalites continued to indiscriminately fire on Police personnel. The Police party commander instructed his men to make tactful movement to cordon the naxalites and also to open fire in self defense. The Police party bravely fought with the naxalites and forced them to retreat back. During the exchange of fire, Constables Pankaj Surywanshi and Ramesh Kumar

Nag sustained bullet injuries. But both the constable exhibited an exemplary act of courage and fought with the armed naxalites and defended their team members and also forced the naxalites to retreat back. Nearly after 45 minutes, the naxalites fled into the nearby forest area taking advantage of dense foliage and difficult terrain condition. The injured constable were evacuated to the nearest hospital for treatment. The Spot was searched after the exchange of fire and 05 empty cases of 7.62 SLR round fired by naxalites were recovered. It was evident from the spot that the naxalites were forced to retreat from the spot carrying their injured party members along with them. Later, Constable Pankaj Suryawanshi succumbed to his injuries and made supreme sacrifice in the service of the nation.

The determination and exceptional courage exhibited by the Police personnel in general and late constable Pankaj Suryawanshi and injured constable Ramesh Kumar Nag would always serve as an inspiration for the Police Force in their service towards the nation.

The conspicuous gallant act and bravery exhibited by Late Pankaj Suryawanshi and Constable Ramesh Kumar Nag has not only saved the lives of many other Police personnel involved in this operation but also inflicted a heavy blow to the naxalites involved in anti-national activities in that area.

In this encounter, S/Shri Late Pankaj Suryawanshi, Constable and Ramesh Kumar Nag, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/05/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 54-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Chanakya Nag,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Keeping in view of PLGA week Observed by naxals and increased naxal activities in the general areas under PS Gangloor, including Savnaar, Kurcholi, Munga etc., one joint team of DEF and STF was sent for patrolling and search on 07/12/2014 under command Inspector Chanakya Nag of DEF Bijapur.

On 08/12/2014, while the party was moving from Kurcholi to Munga at about 17:00 hrs naxals who were sitting in a pre-planned ambush started indiscriminate heavy fire on force. Police personnel immediately took position and asked naxal to surrender but they intensified the fire to kill and loot weapons. Sensing the grave danger to his men, Inspector Chanakya Nag took the bold and courageous step to lead a ferocious counter attack. Putting his life in danger, he moved forward firing on naxal position. Adopting fire and move tactics, he bravely led his troops ignoring the heavy naxal fire. Some men also moved forward with him and they counter attacked the naxal from flanks. Surprised by the tactical movement and gallant action of troops, naxal fled leaving behind dead bodies of two hardcore colleagues, two weapons and other items. The leadership, tactical acumen, courageous gallant action of Inspector Chanakya Nag not only saved the lives of his men but also led to a spectacular achievement.

Recovery:

01 No. SLR rifle, 01 No. Bharmar rifle, 02 Nos. Magazine, 33 Nos. SLR live rounds, 01 No. Pressure IED, 01 No. Hand Grenade, 08 Nos. Detonator, 06 Nos. A.K-47 Empty case, 34 Nos. SLR Empty case, 02 Nos pittu, 01 No. DVD Player, Cordex Wire, naxal literature, etc was recovered.

In this encounter, Shri Chanakya Nag, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/12/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 55-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Delhi Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

01. Shiv Kumar,
Inspector
02. Chander Vir Singh,
Assistant Sub Inspector
03. Ravi Dutt,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19th August, 2014, a specific information was received that Firoz @ Fauzi s/o Irshad r/o Dabur Ka Talaab, Bengali Peer, Loni, Ghaziabad, UP who was wanted in the sensational murder of police constable of Delhi Police Shivraj Tomar on 14th July, 2014, would come to meet his associate on Sonia Vihar Pusta.

Accordingly, a trap was laid at the vantage points for his apprehension. At around 5 AM, Firoz @ Fauzi was spotted on Pushta Road on a Yamaha RX100 motorcycle having registration number UP-16-A-0730. Police team tried to flag him down and asked to surrender to the police. Finding himself surrounded by the police team, Firoz @ Fauzi whipped out his pistol and fired twice at the police team. One bullet hit Insp. Shiv Kumar on his bullet proof jacket while another hit the Gypsy. The police team also retaliated in self defense and to desist the criminal. The accused sustained bullet injuries and was removed to GTB hospital where he was declared brought dead. One .32 pistol with two live cartridges were recovered from the spot. Five more live cartridges were recovered by doctor from his pocket when he was taken to hospital. This operation led to an end of criminal activities of the deceased gangster who was involved in 23 sensational cases of murder, attempt to murder, kidnapping for ransom, robbery, extortion etc. in U.P. and Delhi. A case FIR No. 381 dated 19.08.2014 u/s 186/353/307 IPC and 25/27 Arms Act of this effect was registered at PS Sonia Vihar, Delhi.

In this encounter, S/Shri Shiv Kumar, Inspector, Chander Vir Singh, Assistant Sub Inspector and Ravi Dutt, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 56-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Nazir Ahmad Kuchay,
Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27/01/2015, a specific information was developed/received by police Awantipora regarding the presence of Abid Hussain Khan @ Hamza, HM operational chief South Kashmir along with his close associate, in the house of Jalal-u-din R/o Handoor Tral. The operation was planned and cordon was established around the said house by the joint parties of police, 42, RR and 185, Bn CRPF under the supervision of SP Awantipora and Col. 42 RR. As the joint party was engaged in discussion with residents for motivating militants to surrender, one of the militant rushed out from the house and fired indiscriminately upon the party due to which Col. M.N. Roy 42RR, Sep. Rawat Nelesh and Const. Venash Kumar sustained bullet injuries. The whole party and the residents should have suffered huge loss at this juncture, besides militant should also have escaped as the whole party was stunned by the sudden attack of militant, however, Col. 42RR, SP, SI Nazir Ahmad and the party showed courage and combated the militant in face to face gun battle wherein the militant got killed. After killing the militant, SP and SI Nazir Ahmad engaged the surviving militant in firing, while as four jawans gave shoulder to the injured Col. 42 RR and took him to the safer place where from he was taken to the nearby hospital. The other two injured jawans were bleeding profusely in the house premises and the first priority before the joint party was to evacuate them lest they may

die because of blood loss. A small party consisting of 17 police personnel including Nazir ahmad Kuchay, SI under the command of SP decided to enter the house premises for evacuation of the injured jawans. The party entered the house premises while engaging the other surviving militant in cross fire. Six jawans gave shoulder to the injured personnel while others engaged the militant above their head in cross fire. On seeing the evacuation of the injured jawans, the militant abruptly rushed out from the house like a fidayeen and fired upon the police party engaged in evacuation of the injured. The whole party should have suffered a heavy loss at this particular moment. However, HC Sanjeewan Singh who was part of the evacuation party acted with utmost bravery and on one hand provided shield to the police party and on the other hand confronted the militant bravely without caring for his own life. The militant lobed a grenade towards the police party, however HC Sanjeewan Singh, in a fraction of second kicked the grenade away from the Police party with his foot which exploded instantly at a few yards distance. At that stage, the militant and HC Sanjeewan Singh, were face to face at few yards distance firing at each other and during the process, the militant got killed while as HC Sanjeewan Singh, got critically injured. Both Col M.N. Roy of 42RR and HC Sanjeewan Singh later on succumbed to their injuries at Army hospital. The killed militants were identified as Aabid Hussain Khan @ Hamza S/o Ralal-u-Din Khan R/o Hundura Tral and Sheeraz Ahmad Dar S/O Gh. Hassan Dar R/o Ovrigund Tral both of HM outfit.

Recovery :—

- | | | | |
|----|--------------|---|----------------|
| 1. | AK 47 rifles | - | 02 Nos. |
| 2. | AK Mags | - | 04 Nos. |
| 3. | Grenade - | | 01 No. |
| 4. | AK Rounds | - | 60 Nos. (live) |
| 5. | Pouch | - | 02 Nos. |

In this encounter, Shri Nazir Ahmad Kuchay, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 57-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | |
|-----|---|
| 01. | Javaid Iqbal,
Superintendent of Police |
| 02. | Manzoor Ahmad,
Sub Inspector |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 01/09/2014, at 1700 hours, DIG Anantnag received a specific information about presence of three militants of JeM outfit at Village Hanjan Bala, planning to carry out a terrorist act. Accordingly, the information was shared with SP Pulwama/44 RR , 182/ 183 Bn CRPF and joint cordon was laid. A Police party under the command of DIG Anantnag, assisted by SP Pulwama, ASP Pulwama/DYSP OPS Pulwama, without wasting time, cordoned off the target area in the said village . After laying the cordon, search of militants was started. In the mean time, militants started indiscriminate firing from the house of Wall Mohd Nengroo S/O Ali Mohd Nengroo upon the search party with the intension to escape from the cordon. DIG Anantnag and ASP Pulwama responding bravely by retaliating the fire and gave no opportunity to the militants for escape. A challenging task was to execute the evacuation of three civilians including a lady , trapped in 1st floor of the target house. The evacuation of these civilians by ASP Pulwama among others under the overall supervision of DIG Anantnag without caring for their lives during such crucial situation was commendable. As it was getting dark, measures including lighting/laying of Concertina wire were taken for area domination around the target house in order to foil every attempt of militants to escape from the scene. The DIG SKR checked the cordon a number of times and issued repeated instructions

throughout the night. Moreover, militants were asked to surrender through the PA(Public Address) System. They instead started indiscriminate firing upon the approaching parties and no opportunity was given to the SF's to come closer during night. DIG Anantnag assisted by ASP Pulwama and SI Manzoor Ahmad including others maintained alertness throughout the Night.

The next morning, militants were again asked to surrender, which they ignored and started indiscriminate firing upon the troops with the intension to kill them and escape from the cordon Eventually, in a fierce gunfight, which continued for another five hours, resulted in the elimination of militants in the lawns of said target house who were later identified as Mohd. Altaf Rather @ Kamran S/O Mohd. Abdullah Rather R/o Chak Badri Nath Pulwama, Farooq Ahmed Laway S/O Ghulam Ahmed Laway R/o Hardo Dalwan Budgam and Showkat Ahmed Dar @ Mirchi Seth S/o Ghulam Qadir Dar R/o Aglar Kandi Pulwama. A huge cache of Arms/Ammunition was recovered from the site of encounter. In this regard Case FIR No. 67/2014 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act stands registered in Police Station Rajpora. The slain militant Mohd Altaf Rather @ Kamran Div. Cmdr. for South Kashmir of JeM outfit was active since last 4 years and was involved in number of criminal cases. He had carried out a number of sensational attacks against the security Forces/civilians/govt. establishments in the valley particularly in south Kashmir. Moreover, the said militant was instrumental in motivating youths for joining the militant cadres. He was also instrumental in threatening Panchayat members to resign from their posts. Another slain militant Farooq Ahmad Laway S/o Gh. Ahmad laway R/o Dalwan Budgam was also involved in snatching 03 SLR Rifles along with ammunition after injuring one Constable from shrine Guard at Pakherpora. Case FIR No. 24/2014 U/S 307, 392 RPC, 7/27 I.A. Act stands registered in PS Charar-i-Sharief to this effect. The death of all the three militants is a huge setback to militant cadres particularly JeM outfit in south Kashmir and great relief for security forces/civilians in Kashmir province particularly in south Kashmir range :—

Recovery:-

1.	Rifle AK-47	-	01 No.
2.	Mag AK	-	01 No.
3.	Hand grenade Chinese		01 No.
4.	Mag Chinese pistol-		01 No.
5.	Rds pistol	-	03 Nos.
6.	Rifle SLR	-	01 No.
7.	Mag SLR	-	01 No.
8.	Pistol Chinese	-	01 No.
9.	UBGL grenade	-	01 No. (damaged)
10.	Rds SLR	-	50 Nos. (including 2 damaged)

In this encounter, S/Shri Javaid Iqbal, Superintendent of Police and Manzoor Ahmad, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/09/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 58-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri		
01.	Tanweer Ahmed Jeelani, Dy. Superintendent of Police	(1 st Bar to PMG)
02.	Ram Lal, Head Constable	(PMG)
03.	Manzoor Ahmad Malik, SGCT	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13/11/2014 a specific information regarding presence of LeT terrorists in village Chanpora Chinigam Kulgam was received by Kulgam Police. Accordingly, Police party under the supervision of SP Kulgam and SOG Parties headed by ASP Kulgam Sh. Shabir Nawab-KPS/Dy.SP (OPS) Hatipora Sh. Tanweer Ahmed Jeelani immediately cordoned off the village. While the cordon was being laid, the armed terrorists rushed towards Mohalla Chanpora Chinigam while firing indiscriminately upon the approaching parties with aim of escaping from the village and inflicting casualties upon the security forces. ASP (Ops) Kulgam, Dy.SP (Ops) Hatipora, HC Ram Lal and Sgct Manzoor Ahmad narrowly escaped death and bravely retaliated the fire to prevent militant from escape, who were compelled to take shelter in a densely populated Mohalla Chanpora. In the first instant, the trapped civilians were evacuated from the target area. In the meantime, other SOG Parties led by Dy. SP(OPS) Kulgam Sh. Zaheer Abass and Dy. SP(OPS) Manzgam Shri Nawaz Ahmad reached the spot alongwith 1st RR, 18th/90 BNs of CRPF also joined and the operation was led under the command/supervision of DIG SKR Anantnag and SP Kulgam. The hiding terrorists were asked to surrender, which they declined by resorting to heavy guns fire and tried to create an escape route. Exchange of fire continued till 14.11.2014 morning at regular intervals. The fierce gun battle culminated in the elimination of two hardcore terrorists identified as Mohammad Abass Malla @ Abu Khatab R/o Nowpora Frisal and Manzoor Ahmed Malik @ Musa, Painter R/o Chinigam Frisal and recovery of huge Arms and ammunition from the encounter site. In this regard, case FIR No. 106/2014 U/S 307 PRC, 7/27 A. Act stands registered in PS Yaripora. Slain terrorist Mohammad Abass Malla @ Abu Khatab had been active in South Kashmir since 06.08.2013. He had played a key role in revival of LeT in South Kashmir and motivated youth to join terrorism with the help of local OGWs. Other eliminated terrorist namely Manzoor Ahmed Malik @ Musa was active since last half year and had also assisted Mohammad Abass in all antinational activities. They planned attacks on Security Forces, Migrant Pandit Colony Qazigund and Contesting Candidates to inflict casualties and to disrupt election process in South Kashmir. Moreover, the slain terrorists had undertook various subversive actions including killing of a Police Constable/Follower at Hassanpora Bagh Qaimoh, attack on Lady SPO and attack on Police Party at Nowpora Frisal. The elimination of these terrorists resulted in a tremendous set back to the LeT outfit and their plans to sabotage Assembly Election-2014 as well as attacks on Panchayat members/Politicians/SF/Police Personnel/ Kashmiri Pandits/ Contesting Candidates. The threat was neutralized to a large extent due to their elimination.

Recoveries made :—

1.	INSAS rifle	-	01 No.
2.	AK 56 rifle	-	02 Nos.
3.	Magazine AK 56	-	02 Nos.
4.	Magazine INSAS	-	02 Nos.
5.	Live rounds AK 56	-	11 Nos.
6.	Damaged round AK 56	-	09 Nos.

In this encounter, S/Shri Tanweer Ahmed Jeelani, Dy. Superintendent of Police, Ram Lal, Head Constable and Manzoor Ahmad Malik, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/11/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 59-Pres/2017—The The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri		
01.	Sajad Hussain, Addl. Superintendent of Police	(PMG)
02.	Mumtaz Ali, Dy. Superintendent of Police	(1 st Bar to PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 25th April, 2014 on the basis of a specific information regarding presence of three armed militants in Qazipathri, Khan Mohalla village Karewa Manloo, Police/44 RR and 14th Bn CRPF cordoned off the area under a proper strategic plan to nab/eliminate the militants. To identify the house in which terrorists were hiding and to dominate the area from all sides, four assault groups were constituted under the command of SP Shopian, ASP Shopian, Dy.SP Ops Imamsahab Shopian and SHO Shopian. One group led by SP Shopian took position on one side of the cordoned area, Shri Sajad Hussain, ASP along with his men took position from the other side Shri Mumtaz Ali Dy.SP Ops Imamsahab took position in front of the target house and Insp. Javeed Ahmad, SHO Shopian took position towards the dense orchards side. After identifying the house, militants were asked to surrender, who ignored the offer and fired indiscriminately upon search party. However, the party retaliated in self defense triggering a gun battle. The ensuing operation lasted for more than 20 hours. During this long gun battle, militants hurled many grenades towards the security forces and resorted to indiscriminate firing in which two army men namely "Major Mukund Wardarajan" and Sepoy "Vikram" belonging to 44 RR were martyred while trying to enter the encounter site. However DySP Mumtaz Ali while leading his group from the front and without caring for his life, continued to retaliate to prevent the militants from escaping. Exchange of fire from both sides continued during intervening night of 25th and 26th April and militants tried every possible means by throwing grenades and firing' indiscriminately to flee from the spot by taking advantage of darkness. However, Shri Sajad Hussain, Addl. SP and Shri Mumtaz Ali, Dy. SP with their presence of mind and courage did not allow militants to escape. During this long gun battle, three militants were killed. Sajad Hussain Addl. SP Shopian, Mumtaz Ali Dy.SP operation Imamsahab, Javeed Ahmad, SHO Shopian and Sgct. Prithvi Raj exhibited exemplary courage & patience. Killed militants were latter on identified as Asif Ahmad Wani @ Muzamil S/o Ab. Razak R/o Drubgam Pulwama, (2) Abdul Haq Malik S/o Gh. Hassan Malik R/o Arwani Bijbehara and (3) Shabir Ahmad Gorsli S/o Farooq Gorsli R/o Ringward Kellar, Shopian of HM outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site.

In this connection, a case FIR No. 82/2014 U/S 307 RPC, 7/27 A.Act stands registered in PS Shopian and investigation set into motion. Slain militant Asif Alunad Wani was active in District Pulwama/Shopian from last more than 4 years and was working as District Commander for Pulwama. He was involved in various terrorist activities and involved in FIR 06/2010 U/S 307, RPC, 7/27 A. Act PS Rajpora.(Encounter on 12-01-2010), FIR 14/2010 U/S 302 RPC, 7/27 A. Act PS Rajpora (Killing of sarpanchs son at Qalampora on 24-1-10), FIR 63/2010 U/S 121 RPC, 20 ULA Act PS Rajpora (fire incident at Qasba yar) and 210/2012 U/S 302, 307 RPC, 7/27 A Act, PS Pulwama. Abdul Haq Malik was active since October 2013 in District Shopian and was a close associate of Asif Ahmad Wani. The said militant was instrumental in threatening elected Panchayat Members of District Shopian to stay away from politics. He was in close contact with Syed Salaudin and Aamir Khan R/o Lever Pahalgam who are presently supervising the HM cadre from Pakistan. He was involved in various terrorist activities (FIRs 1 85/2010 U/S 7/25 A. Act, 13/2 ULA Act PS Bijbehara and 57/2013 U/S 13/1,16,18,20,40 ULA Act.). Shabir Ahmad Ghorsi S/o Farooq Ahmad Gorsli R/o Ringward Kellar was active since July 2013. He was also involved in a murder case and had been awarded life imprisonment and had fled from the court while on a routine hearing in court Shopian to join militant ranks. He was also instrumental in threatening Panchs/Sarpanchs and local people of Shopian District to refrain from casting votes during the recently concluded Parliamentary Elections & was also involved in case FIR No. 102/2013 U/S 223,224 RPC, 30 Police Act PS Shopian. Moreover, all the three killed militants were also involved in the attack on polling party at Nagbal Shopian on. 20 of April in which one polling officer was killed and five others including two CRPF personnel were injured. In this connection, case FIR number 25/2014 U/S 302, 307, 120-B RPC:7/27 A. Act stands registered in police station Zainapora. With their elimination general public has received a great sigh of relief and is a huge set back to the militant cadres.

Recoveries made :—

1.	AK 47	-	01 No.
2.	INSAS	-	01 No.
3.	AK Mag.	-	03 Nos.
4.	INSAS Mag.	-	03 Nos.
5.	AK Rds	-	40 Nos.
6.	Pistol	-	01 No.

In this encounter, S/Shri Sajad Hussain, Addl. Superintendent of Police and Mumtaz Ali, Dy. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/04/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 60-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Imtiaz Ahmed,
Dy. Superintendent of Police
02. Tariq Ahmed Wani,
Dy. Superintendent of Police
03. Pranav Mahajan,
Dy. Superintendent of Police
04. Feroz Ahmad Itoo,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15/01/2015, a specific information was received/developed by Police, regarding presence of five armed militants in a Dhok located in forest area of Gadder Keller Shopian. Accordingly, Police Srinagar/Shopian with the assistance of 44 RR and 14th Bn CRPF cordoned off the entire area under proper strategic plan and two assault groups, one headed by ASP Shopian comprising of Sh. Tariq Ahmed, Dy. SP, Insp Feroz Ahmad and other and another led by SP PC Srinagar including Sh. Imtiaz Ahmed, Dy. SP, Sh. Pranav Mahajan Dy.SP were formed. Both the groups started search operations in the dense Forest area from two different sides and troops of 44RR/14 Bn. CRPF sealed off/plugged all possible escape routes. Meanwhile, the "Dhok", surrounded by big rocks and covered with bushes and trees in which militants were hiding was located. The hiding militants were asked to surrender, instead they fired indiscriminately upon the search Party. However search party headed by ASP Shopian, with extra ordinary courage and operational skills, engaged the militants by retaliating the fire effectively. During the gun battle, militants tried their best to break the cordon and to escape from the scene by hurling grenades and indiscriminately firing, but the above team, showed commitment and did not provide militants any chance to dominate. Indiscriminate firing from militants did not deter the operational parties from the call of their duty and by excellent courage and dedication above police personnel continuously/effectively retaliated the fire till all the five terrorists, later identified as Abu Toyab R/o Pakistan, Shakeel Ahmad Wani @ Master S/o Ghulam Mohd Wani R/o Pakkerpura, Charier I shrief Budgum, Tahir Ahmad Shah S/o Abdul Ganie Shah R/o Aglar Kandi Pulwama (trio of JEM outfit) Perwaiz Ahmad Wagey S/o Gh Mohd Wagey R/o Batmaran ,Kellar Shopian of HM outfit, Ishfaq Ahmad Malik@ Dagga S/o Gulzar Ahmad Malik R/o Eidgah Mohalla Arwani got killed. A huge cache of arms/ammunition was recovered from the site of encounter and case FIR No. 05/2015 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act stands registered in PS Kellar in this regard.

The elimination of these terrorists became possible only due to leadership qualities, excellent operational command coupled with exemplary bravery of above police personnel.

Recovery :

- | | | | |
|----|-----------|---|---------|
| 1. | AK 47 | - | 03 Nos. |
| 2. | SLR | - | 01 No. |
| 3. | AK Mag- | | 03 Nos. |
| 4. | SLR Mag | - | 01 No. |
| 5. | AK Rds. - | | 30 Nos. |
| 6. | SLR Rds | - | 10 Nos. |
| 7. | Pistol | - | 01 No. |

In this encounter, S/Shri Imtiaz Ahmed, Dy. Superintendent of Police, Tariq Ahmed Wani, Dy. Superintendent of Police, Pranav Mahajan, Dy. Superintendent of Police and Feroz Ahmad Itoo, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 61-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Zaheer Abbas,
Dy. Superintendent of Police
02. Selender Singh,
Head Constable
03. Manoj Kumar,
SGCT

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 25/5/2015, on a specific information regarding presence of a militant, Kulgam Police under the supervision of SSP Kulgam along with troops of 1st RR/18th Battalion CRPF laid cordon of Village Kanjikullah of Yaripora Kulgam. The target area, covered with thick/densely planted orchards, was providing a favourable shield to the hiding terrorist. In the meantime, on noticing the movement of troops, holed-up terrorist started indiscriminate firing upon them in order to escape from the cordoned area. In this Initial/sudden attack of hiding terrorist, one Army personnel sustained serious injuries. Acting swiftly, ASP Kulgam and Shri Zaheer Abbas, Dy SP (OPS) Kulgam along with HC Selender Singh and SgCt Manoj Kumar, exhibited extra ordinary courage and retaliated the fire in self defence with full volume. The assault party identified the movement of terrorist deep inside the densely planted orchard. The above police personnel, under a strategic plan started advancing towards the target. Sensing twine around his neck, the terrorist, instead of surrendering started indiscriminate firing followed by grenade lobbing. However, the above police personnel, by dint of their extra ordinary vigil did not provide him any chance to cause any further damage or to break the cordon. The police personnel, succeeded in zeroing the target & engaged the terrorist in a close gun battle which lasted for a long time and finally ended with the elimination of the terrorist later identified as Ayatullah Bhat @ Khumani @ Abu Maaz @ Yousuf S/o Hafizuallh Bhat R/o Chinigam Frisal, District Commander of LeT outfit. A huge cache of arms/ ammunition was recovered from the site of encounter and case FIR No. 43/2015 U/S 307 RPC, 7/27 Arms Act was registered in PS Yaripora.

The gallant action of the police party has added yet another laurel to the crown of the prestigious organization and is proving to be a major cause of motivation amongst the rank and file of Kulgam Police to further strive to fight the menace of terrorism and also to keep the district, as well as the entire region terrorism free. Their extra ordinary gallant action resulted into the accomplishment of the mission after a long hot pursuit of the terrorists. Another peculiar feature of the operation was that Kulgam Police accomplished the mission exclusively on its own intelligence.

Recovery:-

- | | | | |
|----|--------------------|---|---------|
| 1. | AK 47 rifle | - | 01 No. |
| 2. | AK 47 Mag. | - | 03 Nos. |
| 3. | AK 47 rounds | - | 20 Nos. |
| 4. | Chinese pistol | - | 01 No. |
| 5. | Chinese pistol Mag | - | 01 No. |

In this encounter, S/Shri Zaheer Abbas, Dy. Superintendent of Police, Selender Singh, Head Constable and Manoj Kumar, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/05/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 62-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|----------------------------|------------------------------|
| 01. | Dilraj Singh,
Inspector | (1 st Bar to PMG) |
|-----|----------------------------|------------------------------|

- | | | |
|-----|-----------------------------------|-------|
| 02. | Manzoor Ahmad,
Head Constable | (PMG) |
| 03. | Khurshed Ahmad Khan,
Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22/06/2014 at about 1530 hrs, Police Sopore received specific intelligence about presence of terrorists in Mohalla Baba-Raza Krankshivan Colony Sopore. Acting on the intelligence, Police Sopore, in co-ordination with troops of 22-RR, 52-RR and 179 Bn CRPF immediately cordoned off the entire area at about 1545 hrs. The area in general being plain and developed with a network of big and narrow lanes restricts vehicular movement and provides an adequate cover. Therefore, the Police party and the troops of 22-RR immediately laid inner cordon sealing all lanes, by-lanes and simultaneously troops of 52-RR laid an outer cordon to prevent militants from escaping. The first apprehension for security forces was the safe evacuation of civilians trapped inside the cordon. The house to house search began by Police Sopore at around 1610 hrs and the searched houses were immediately occupied by the troops of 22-RR to zero the target. In this way, all the civilians trapped inside cordoned houses were safely evacuated. On reaching near Band saw of one Mohd Shaban Panchu S/o Ab. Aziz R/o Baba-raza Krankshivan colony Sopore, the searching party was fired upon by militants which was retaliated with full volume. The fire was coming from a single storey structure having three rooms situated in the compound of said Band Saw. The target location had about seven to eight Saw Mills in its vicinity and while studying the composition of target house it was found that the compound of target location was piled-up with tones of dry wood, saw dust and wood shavings and any unintentional fire may cause immense collateral damage. Sensing the gravity of aggressive situation, troops engaged in the fire fight were asked to hold their nerves and exhibit utmost caution in dealing with the situation. The holed up militants were intermittently firing upon the troops & taking time till darkness. At about 1930 hrs, the advance party which included Inspr. Dilraj Singh, HC Manzoor Ahmad, Ct. Khurshid Ahmad and troops of 22-RR sealed the target area by concertina wire & lit it up with Halogens lights to prevent militant from escaping. At about 1340 hours, the cordon was tightened and it was further decided to storm the target from all sides. While advance party was moving swiftly through main entrance of Band Saw sealing two narrow lanes situated on either side of Band Saw Mill, the holed up militants fired indiscriminately on them and jumped over from the rear side of boundary wall and ran through left narrow lane to flee from the area.

The above Police personnel exhibiting outstanding courage and presence of mind chased one of the militants and took him by surprise at the other corner of lane opening at main road. The said militant kept on firing indiscriminately to inflict casualties, but was neutralised on spot by the party without any cover. The other militant coming after him through lane quickly put down his hand grenade & offered to surrender. The above named officers/official immediately took him into custody. The militant neutralized in the instant operation was identified as @ Muhammad Bhai R/o Pak of LeT outfit. The apprehended militant was identified as Mohd Waseem Bhat @ Shabir Beigh S/O Gh.Mohd Bhat R/O Tarzoo Sopore of HM outfit .A huge cache of Arms ammunition was recovered from the site of encounter. In this regard, Case FIR No. 86/2014 U/S 307-RPC, 7/27 I.A Act stands registered with Police Station Tarzoo. In the entire operation the above police personnel exhibited exemplary bravery and incomparable presence of mind which led to the successful culmination of the operation.

The slain terrorist @Muhammad of LeT terrorist outfit was operating in & around the area of Sopore since long and was motivating local youth to work for the outfit. He was making efforts to rebuild influence & network of LeT outfit in Sopore. Recently, an LeT module was busted and as many as six members were apprehended. During interrogation, it had surfaced that these members of the module had been assigned with various tasks by said @ Muhammad Bhai including couriering weapons, money, identification of targets vis-à-vis security installations, arranging the communication devices and providing transport facilities for the terrorists. It also revealed that they were trying to disrupt the law & order situation in Sopore and to create fear psychosis among the people, so that the Assembly Elections 2014 are disrupted and boycott call enforced. His elimination is a great achievement and will have long term bearing on the overall security scenario of Sopore in particular and the valley in general. The apprehended terrorist of HM outfit namely Mohd Waseem Bhat @ Shabir Beigh S/O Gh.Mohd Bhat R/o Tarzoo Sopore being local was also actively involved in militant related violence including lobbing of grenades on security force pickets, attack on panchs/sarpanchs, cop killings etc. He was active in the areas of Tarzoo, Amberpora, Chankhan, Krankshivan colony, Wagub and Hygam. His arrest is also a major achievement for Police resulting in the prevalence of peaceful atmosphere in Kashmir in general and in Sopore in particular.

Recovery :—

- | | | | |
|----|--------------|---|---------|
| 1. | AK 47 rifle | - | 01 No. |
| 2. | AK Magazine | - | 02 Nos. |
| 3. | AK rounds | - | 20 Nos. |
| 4. | Hand grenade | - | 01 No. |

In this encounter, S/Shri Dilraj Singh, Inspector, Manzoor Ahmad, Head Constable and Khurshed Ahmad Khan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/06/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 63-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Shakeel Ahmad Mir,
SGCT
02. Farooq Ahmad Bhat,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13/01/2015 at about 23:00 hours, Sopore Police received specific input about the presence of one unknown Pakistani LeT terrorist in Mohalla Sofi-Hamam Sopore. Acting on this intelligence, Sopore Police in co-ordination with troops of 52 RR and 177Bn CRPF immediately cordoned off the entire target area at about 23:00 hrs. The area in general being congested and densely built-up with huge network of narrow lanes and by lanes was providing a natural cover to the hiding terrorists. In view of topography of the area and pitch dark conditions, after due deliberations with SSP Sopore, officers of CRPF and Army, DIG North Kashmir Range Baramulla decided to suspend the search operations till first light next morning as going ahead with the operation at inappropriate time could have led to avoidable damage to the force personnel. As such cordon was further strengthened. It was planned that the advance Police party and troops of 52/RR will cautiously lead towards the target next day in the morning. Different parties were constituted for laying inner cordon and sealing all lanes and by-lanes. The troops of 177 Bn CRPF were deputed to lay outer cordon to provide strong and concrete barrier and prevent militant escape. In the wee hours of next morning (14/01/2015) house to house search operation was started by Police and CRPF and the searched houses were immediately occupied by the troops of Police Sopore and 52-RR to isolate the target. Since the area was highly congested, DIG NKR-Baramulla remained personally involved in safe evacuation of civilians from the houses being searched as the task was extremely sensitive and called for utmost care and alertness. The process of safe evacuation took almost three hours and was completed in a hassle free manner. During the process the particular house where the terrorist was hiding was identified and in 1st instance the terrorist was asked to surrender using loud speakers, but there was no response. When the search party tried to approach the target house, it came under heavy fire from the hiding militant. The Parties showed forbearance/patience and did not retaliate as there was every apprehension of civilian killings if the fire was retaliated at that movement, as the house owner and his family were inside the house. In order to evacuate the civilians from the target house, DIG NKR under a well planned strategy evacuated (all the family members) safely under his personal supervision.

At this point, the main task of neutralizing the terrorist was taken in hand. An advance party was constituted consisting of Sgt Shakeel Ahmad, Constable Farooq Ahmad with a party of 52 RR which sealed the house. DIG NKR-Baramulla himself occupied the adjacent house to track the exact location of the terrorist and give covering fire to the advance party. The officer alongwith his two escort personnel provided the covering fire to the advance party which was engaged in locating the terrorist and neutralizing him. The members of the advance party kept the terrorist engaged till Sgt Shakeel Ahmad, Constable Farooq Ahmad entered into the target house. Besides this, DIG NKR Baramulla reached at the main entry of the target house in order to neutralize the terrorist. At this point of time, the terrorist hurled a grenade which did not explode. He tried to fire another grenade through UBGL, but DIG North Kashmir Range Baramulla kept him engaged till Sgt Shakeel Ahmad, Constable Farooq Ahmad entered into the target house and did not provide him further chance to fire or lob grenades which would have caused serious damages to the Police party. The above named officers/official of advance party exhibited outstanding courage, presence of mind under highly effective and able leadership of DIG NKR-Baramulla and as a result neutralized the terrorist under extremely hostile conditions inside the house without any damage to the Security forces or to any person and property. The killed militant was identified as Sufiyan @ Arfat Rio Pak affiliated with LeT outfit. AK 47 rifle with 3 magazines, 8 rounds, 1 UBGL, 2 UBGL grenades and 1 HE 36 grenade were recovered from his possession. In this connection case FIR 12/2015 U/S 307, RPC, 7/27 I A Act stands registered in P/S Tarzoo, Sopore.

In this encounter, S/Shri Shakeel Ahmad Mir, SGCT and Farooq Ahmad Bhat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 64-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Nazir Ahmad Kuchay,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 06/05/2014, SDPO Awantipora along with SHO PS Awantipora and SI Nazir Ahmad were on a night patrol in Dadsara area and at about 2200 hours received an information from SPO regarding movement of militants in the outskirts of the village Dadsara. Accordingly ambush was laid in the area with the assistance of 03 RR, 130 Bn CRPF, SOG and others. The ambush party noticed movement of suspect individuals, who were asked to show their identity. Instead, they fired indiscriminately upon the party which was retaliated effectively. The exchange of fire continued for half an hour. Since there was possibility of collateral damage in view of complete darkness, all possible precautions were taken to avoid this risk. It was difficult to ascertain whether militants are alive, dead or have escaped in the darkness. However, SI Nazir Ahmad along with police party volunteered to proceed ahead and crawled towards the area wherefrom militants had fired, in jeopardy of their own lives. On noticing the approaching movement of police, the militants abruptly fired and Police party retaliated in a face to face battle and one militant got injured. The police party made strenuous efforts to track down the militants during entire night, however, could not trace them. In the early dawn, blood was spotted at the scene of encounter and the amount of blood indicated that one or two militants might have got critically injured and subsequently died due to loss of blood. 01 AK 47 rifle along with ammunition was recovered on the spot. All the police establishments and security force units were alerted to make efforts to trace the dead body of the slain militant. The police party generated further information regarding the dead body of a militant in village Panzoo, later identified as Syed Mavia R/o PAK. Case FIR No.51/2014 U/S 307 RPC, 7/27 I.A. Act stands registered in police station Awantipora in this regard.

The slain militant was involved in number of subversive activities in the area including killing of Mohammad Anwar Sheikh S/o Sadiq Sheikh R/o Amlar Tral (lumberdar) on 21/04/2014 for which case FIR No. 39/2014 U/S 302 RPC 7/27 A.Act stand's registered in P/S Awantipora. His presence in the area was a great threat to panches/surpanches.

In this encounter, Shri Nazir Ahmad Kuchay, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/05/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 65-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|--|------------------------------|
| 01. | Irshad Hussain Rather,
Dy. Superintendent of Police | (1 st Bar to PMG) |
| 02. | Irshad Ahmad Reshi,
Inspector | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26th October 2013 specific information regarding presence of militants in village Hushangpora was received by Shopian Police. Accordingly Police party headed by Sh. Irshad Husain Rather, Dy SP Ops Imamsahib with the assistance of

contingents of 62 Bn RR & 4 Bn CRPF cordoned off the area and started house to house search. During the course of search, militants fired indiscriminately upon search party. In order to make the operation successful, two teams were framed under the Command of Shri Irshad Hussain Rather Dy. SP(Ops) Imamsahib and Inspr. Irshad Ahmad Reshi (SHO P/S Shopian). The first group led by Dy.SP (Ops) Imamsahib took Morcha on one side of the cordoned area and Inspr Irshad Ahmad along with his group took position from the dense plantation side. After strengthening the cordon, the militants were asked to surrender, who while rejecting the offer, fired indiscriminately upon the operational group and tried to escape. Coming under fire of the terrorists, Dy.SP(Ops) Imamsahib and Inspr. Irshad Ahmad Reshi had a narrow escape. At this stage Dy. SP(Ops), Imamsahib and Inspr Irshad Ahmad Reshi without caring for their lives retaliated the fire in self defence and during the ensuing gunfight one dreaded militant later identified as Mohd Abass Reshi @ Abid S/o Bashir Ahmad Reshi R/o Alishahpora was eliminated. In this regard, Case FIR No. 78/2013 U/S 307 RPC, 7/27 I.A Act was registered in PS Zainapora.

The above police officers not only supervised and led the troops/Police parties efficiently and intelligently but also took initiative in elimination of above mentioned LeT Commander. They displayed courage to prevent civilian casualty during the operation by presence of mind and good policing. The terrorists had tried their best to cause damage to the forces, however the troops without losing their concentration & in good application of mind fought bravely and foiled their nefarious designs. Both the Officers were instrumental in elimination of above mentioned dreaded Commander of LeT outfit.

Recoveries made :-

1.	Rifle AK 47	-	01 No.
2.	Magazine AK-47	-	03 Nos.
3.	Rounds AK-47	-	40 Nos.
4.	Hand grenade.	-	01 Nos.
5.	Pistol	-	01 No.

In this encounter, S/Shri Irshad Hussain Rather, Dy. Superintendent of Police and Irshad Ahmad Reshi, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/10/2013.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 66-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Stanzin Ostal,
Sub Inspector
02. Fayaz Ahmad,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 16/01/2015 at about 0730-hrs, Sopore Police received reliable intelligence about the presence of a Pakistani LeT terrorist at Choora Sopore in the house of Sarpanch Farooq Ahmad Bhat S/o Abdul Jabbar Bhat. The terrorist was planning to carry out terrorist activities in the area particularly in town Sopore. Acting on this specific intelligence lead, Police Sopore along with 52/RR, 177 Bn CRPF immediately swung into action and cordoned off the entire area plugging in all possible escaping routes. The advance party was led by SI Stanzin Otsal included HC Fayaz Ahmad and other officers/officials and SPOs under the overall supervision of SSP Police District Sopore, who divided the team into two segments to execute the operation. The foremost task for the troops was safety of civilians from the surrounding houses and for this purpose a well planned strategy was evolved under the supervision of SSP PD Sopore. The operational component in general, and the above police personnel in particular, exhibited extraordinary sense of duty in a hostile situation and without caring for their lives prioritized the safe evacuation of civilians especially children & womenfolk from the target area. The input was definite that

the terrorist is hiding in the house of Sarpanch, situated in Orchard fields, surrounded by densely planted Apple trees having residential houses from its South. There was a narrow water channel flowing adjacent to the target house and it was possible that the terrorist could use the channel for his escape. In this eventuality, it would have been impossible to trap him in the dark as he could have taken the shelter in the densely built village located at some distance and it would have been difficult for the troops to trace him out during night hours. Keeping the possibilities in mind, a plan was devised and some personnel were deployed in water channel and the party headed by SI Stanzin Otsal and HC Fayaz Ahmad was directed to cover-up till all possible escape routes are sealed adequately. As per the plan, the advance party including the above police personnel entered in the compound and sealed the main entrance and strengthened the barrier for final assault. The party climbed the Apple trees near the target house, reached the slab and occupied the rooftop. The advance party had kept the terrorist unaware till the above Police personnel surprised the terrorist and entered swiftly into the room where the terrorist was hiding. Police party overpowered the militant though he tried his best to get hold of his AK- 47 rifle and fire upon the Police party, but the above police personnel kept their nerves and denied him a single chance for mischief and ultimately the team succeeded in taking position of the arms/ammunition and handcuffed him without suffering any collateral damage. The said LeT terrorist had access to sophisticated weapons and enough ammunition which could have led to serious damage to the police party, had he got a chance to lay hands on his illegal weaponry. The instant operation was surgical and well planned by all means. As the terrorist was hiding in ground floor and there was enough opportunity for him either to escape or engage the troops in gun battle, but police team and others put all their specialized preparations in use and managed to arrest him. The apprehended terrorist disclosed his identity as Zubair Ahmad Mughal S/o Abdul Rashid Mughal R/o Gulsahn Iqbal Karachi Pakistan, a top commander of LeT outfit. A case FIR No. 14/2015 U/S 7/25 A. Act, 14 F.Act, 13, 19 20 UL Act was registered in Police Station Tarzoo in this regard.

Recovery:

- | | | | |
|----|--------------|---|---------|
| 1. | AK 47 rifles | - | 01 No. |
| 2. | AK Mags | - | 03 Nos. |
| 3. | AK rounds | - | 90 Nos. |
| 4. | Pouch | - | 01 No. |

In this encounter, S/Shri Stanzin Otsal, Sub Inspector and Fayaz Ahmad, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 67-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Syed Sajad Hussain,
Dy. Superintendent of Police
02. Shamus-Ud-Din Lone,
SGCT

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 17/01/2015, at about 2125 hours, based on a specific intelligence regarding presence of terrorists in Saidpora Sopore, joint components of Police Sopore/Srinagar along with 22- RR/ 177 Bn CRPF swung into action and cordoned off the entire area. In view of the circumstances, the operation was suspended till first light of next day morning and cordon was strengthened further. Troops of 22 RR and Police parties were placed in inner cordon while as 177 Bn CRPF was tasked for outer cordon and sealing of all the entry/exit points approaching towards the particular place. In the next day, in wee hours, house to house search was conducted by Police Sopore/Srinagar and searched houses were occupied by the troops of 22 RR and Police. The house to house search began at around 0730-hrs and all the officers/men were directed that no civilian especially elderly, womenfolk & children are harmed in any case. The advance party was divided into two segments, one was advanced towards the main entrance of the target & another was moving in the rear side of the target house. While reaching

in the close proximity of the target house owned by Abdul Gaffar Dar S/o Mohammad Bashir Dar R/o Dar Mohalla Siadpora, the advance party was fired upon by terrorists indiscriminately. As soon as the terrorists opened fire, noise of hue & cry was heard from the adjacent houses. The fire was not retaliated in the first instance & the advance party headed by Sh. Wasim Qadri SP (PC) Srinagar, Sajad Hussain Dy SP (PC) Srinagar and Sgct. Shamas-ud-din and few other police personnel/SPOs were directed to hold the fire till civilians from the nearby houses are safely evacuated. A backup party comprising of Police and 22 RR was also placed at a distance in nearby by-lanes behind the advance party to provide backup /reinforcement. Sensing the gravity of situation, the cordon around target house was further strengthened. Since the situation was unfavorable and aggressive, the efforts & professionalism of highest order shown by the above named police personnel of advance component in such hostile situation which resulted in evacuation of at least 60- people from the nearby houses was hard to believe. The terrorists were not allowing civilians to come out of their houses, infact they fired upon the houses to prevent the people to come out. At this juncture, a well planned strategy was evolved by officers/officials keeping the terrorists engaged on one side and on the another side advance party led by the above named officers/officials approached the adjacent houses in RAKSHAK vehicles for evacuation of the trapped civilians. In six such attempts, all the civilians from the adjacent houses were evacuated safely which included 17 women and 13 children. After evacuation of civilians from the adjacent houses plan for final assault was formulated and a component of advance party deployed at the rear side of house was ordered to shift towards front side and rear side was strategically left open so that terrorist try to escape would be apprehended by the troops at a distance. The terrorists were directed to surrender to which they did not respond. So in order to force the terrorist to come out of the house, a segment comprising of above said officers/official moved ahead towards the target house under cover and resorted to firing upon the target house. In the very crucial circumstances, the above officers/official came out in the open and rushed towards side window challenging the hold-up terrorists. One terrorist sensing the volume & velocity of fire, tried to escape from the rear side while another one kept the troops engaged in fire fight. On observing this, the above officers/official took the terrorists by surprise in the main compound of target house and killed one terrorist on the spot in the retaliatory fire. Another terrorist was still in the house and challenging the advance party. At this point of time, remarkable presence of mind was exhibited by the above officers, who covered themselves behind a walnut tree and waited for the final assault. Observing this, the hold-up terrorist came out from the house and hurled two grenades followed by shower of bullets towards the advance party with the intention to kill. The advance party came out without caring for their lives and fired upon the terrorist in self defence and eliminated him on spot. The selfless devotion towards duty and matchless courage exhibited by the operational team in general, and above officers/official in particular, led to elimination of two hardcore terrorists of JeM outfit without any collateral damage. A huge cache of arms/ammunition was recovered from the encounter site, Case FIR No. 7/2015 U/S 307 RPC, 7/27 I.A Act was accordingly registered in P/S Sopore in this regard.

Recovery:-

1.	AK 47 Rifles	-	02 Nos.
2.	AK Mags	-	06 Nos.
3.	Radio Sets	-	02 Nos.
4.	AK Rounds	-	140 Nos.
5.	UBGL grenades	-	02 Nos.
6.	Compass	-	01 No.
7.	Matrix Sheet	-	06 Nos.

In this encounter, S/Shri Syed Sajad Hussain, Dy. Superintendent of Police and Shamus-Ud-Din Lone, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 68-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Iftkhar Ahmed,
Dy. Superintendent of Police

02. Suresh Singh,
SGCT
03. Gurjeet Singh,
SGCT

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 25th of May 2014, Kulgam police received a specific information regarding presence of a group of terrorists in village Nowpora-Frisal, planning to carry out some subversive action in the area. Immediately, a joint strategy was chalked out and with the assistance of 1st RR, 18 / 90 Bns CRPF, an operation was launched under the command of DIG of Police SKR Anantnag and effective supervision of ASP/ Dy SP (OPS) Kulgam. Immediately a cordon was laid around the entire hamlet and the hiding terrorists were asked to come out and lay down their Arms/ Ammunition. However, the adamant group of terrorists retaliated with heavy volume of fire from their illegal automatic weapons to inflict casualties on the operational parties, thereby, trying to create an escape route for themselves. Exchange of fire continued throughout the day at regular intervals. The ensuing gun battle lasted for about 5 to 6 hours and culminated with the elimination of two hard core terrorists identified as (1) Zubair Bhat S/o Nant Ahmed Bhat R/o Nowpora and (2) Ishfaq Bhat S/o Gh. Mohideen Bhat R/o Chakoo Shopian of LeT outfit and huge cache of Arms/ ammunition from the site of encounter was recovered. In this regard, case FIR No. 40/2014 U/S 307 RPC, 7/27 A Act has been registered in PS-Yaripora.

The gallant action of above police personnel among others has added yet another laurel to the crown of our prestigious organization and has proved to be a major cause of motivation amongst the rank and file of Police to further strive to fight the menace of terrorism. With the elimination of these terrorists, general public has also heaved sigh of relief.

The professionalism coupled with outstanding courage exhibited by above police team was remarkable. Their command/control and operational skills in executing an effective operation in such circumstances was commendable which resulted into the accomplishment of the mission after a long hot pursuit of the terrorists. Another peculiar feature of the operation was that Police accomplished the mission exclusively on its own intelligence. The conduct of this successful operation, without causing any kind of collateral damage in a rather unpredictable and risk prone environment, remained its hallmark.

Recoveries made :-

- | | | | |
|----|--------------------|---|-------------------|
| 1. | AK 56 rifle | - | 01 No. |
| 2. | AK 47 rifle | - | 01No. (damaged) |
| 3. | Magazine AK 47 | - | 04 Nos. |
| 4. | Live rounds AK- 47 | - | 67 Nos. |
| 5, | Pistol Chinese | - | 02 Nos. (damaged) |

In this encounter, S/Shri Iftkhar Ahmed, Dy. Superintendent of Police, Suresh Singh, SGCT and Gurjeet Singh, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/05/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 69-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|--------------------------------------|------------------------------|
| 01. | Riyaz Ahmad Ganaie,
Sub Inspector | (PMG) |
| 02. | Gh. Ahmad Malik,
Head Constable | (1 st Bar to PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27/02/2015 a specific input was received by Dy. SP (PC) Tral that a group of militants are hiding in Village Rathsunna Tral. The input was developed further to make it actionable and accordingly 03 teams, one under supervision/control, of Dy. SP(PC) Tral, second headed by SI, SHO P/S Tral and third under the command and control of two SIs including Reyaz Ahmad and were constituted to launch an operation in the aforementioned densely populated area. At around 07 PM the target area, comprising of a Cluster of 05 houses was cordoned off from all sides. After laying the initial cordon, assistance from 42RR, 185 Bn CRPF and PC Sangam was also sought. Meanwhile, SSP Awantipora also joined the operation alongwith his QRT. The cordon was tightened from all the sides with the help of all the forces involved and it was decided to suspend the operation till first light next morning. In the meantime, militants, on noticing presence of security forces in the area, jumped out of the house, firing indiscriminately. Dy. SP (PC) Tral alongwith police party retaliated the fire which forced the militants to retreat, and their attempt to break the cordon and escape from the spot was foiled. Instantly Dy. SP (PC)Tral alongwith SI Reyaz Ahmad and HC Gh. Ahmad without caring for their lives, tactfully/ professionally, with extraordinary courage & bravery managed to evacuate the trapped inmates from the target area. In the meantime, it was learnt that one bed-ridden elderly person has got trapped in the ground floor of target house. Thereafter, it was decided that party headed by Dy SP PC, Tral will enter the house while as police party headed by one SI will engage the militants in fire fight. Dy. SP PC Tral, exhibiting great operational capability and courage, under cover of fire provided by police team, entered the house tactfully alongwith a small party. The police party gave shoulder to the bed-ridden person and rushed towards the main gate of the premises of the house after engaging militants overhead in firefight. In the meantime, Public Address System was arranged and militants were asked to surrender, which they declined and instead came out in open, firing indiscriminately in all directions. At that stage, police party displayed great courage and without caring for their lives retaliated effectively from close range which resulted in elimination of one of the militants. The other militant took position behind a wall with an intention to inflict maximum casualty to operational forces but HC Gh. Ahmad alongwith other police personnel, very skillfully and tactfully went close to the hiding militant, who panicked and came out in open and fired indiscriminately but due to the alertness and professional skills of the police party, the said militant was also eliminated on spot. The Slain militants were identified as Shabir Ahmad Mir @Suhail s/o Abdul Rehman Mir R/o Dadsara and Idrees Hussain Shah S/o Shareef-ud-din Shah R/o Noorpora. A huge cache of arms/ ammunition was recovered from the encounter site and case FIR No.27/2015 U/S 7/27 I. A.Act, 307 RPC stands registered in police station Tral in this regard.

Recovery:

- | | | | |
|----|----------------|---|---------|
| 1. | Rifle AK 47 | - | 02 Nos. |
| 2. | Magazine AK-47 | - | 06 Nos. |
| 3. | Rounds | - | 80 Nos. |

In this encounter, S/Shri Riyaz Ahmad Ganaie, Sub Inspector and Gh. Ahmad Malik, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/02/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 70-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|---|----------------|
| 01. | Bachan Deo Kujur,
Dy. Superintendent of Police | |
| 02. | Dukhiya Murmu,
Constable | (Posthumously) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 18th Jan, 2015 at about 1400 hrs. Addl.S.P. (Ops.), East Singhbhum, Jamshedpur received an input from own sources that 5-6 naxals(LWE) are likely to come to witness Tussu fair at Bikrampur behind Bagjata Uranium Mines under Musabani P.S. & also they are planning for some massive disruptive action. After getting information Addl. S.P., Ops. & Dy

SP Musabani, Bachandeo Kujur immediately formed small unit of 15 personnel in civil including bodyguards and a QAT unit of 193 Bn, CRPF and immediately proceeded for venue.

At about 1745 hrs. u/c Addl. S.P., Ops. & Dy SP, Bachandeo Kujur, & police party reached the target area immediately. The police party under leadership of Addl. S.P., Ops. moved tactically towards the Tussu fair hiding their weapons and identity. Informers of Addl. S.P., Ops. pointed towards the Maoists carrying firearms who were almost double in number than the input. Despite more no. of naxals, Addl. S.P., Ops. with brilliant and mindful execution placed the forces at strategic points. Suddenly naxals started indiscriminate firing to kill the police forces. The forces took defensive position and retaliated and also started putting pressure on the naxals to surrender. During exchange of fire, one naxal who was firing from very closely, Addl. S.P., Ops. directed CT Dukhiya Murmu, (bodyguard of Addl. S.P., Ops.), and Ct./GD Rajesh Kr. Viswakarma of 193 Bn. CRPF to pounce upon to catch the said naxal. LWE still continued firing towards the police party, as a result one bullet hit in the head of CT Dukhiya Murmu and also injured Addl. S.P., Ops. near thigh. Dy SP, Bachandeo Kujur immediately carried injured CT Dukhiya Murmu to the nearest PHC hospital at Musabani.

Addl. S.P., Ops along with Ct./GD Rajesh Kr. Viswakarma without caring risk of life, chased the naxals who were firing pointing towards the police force. Addl. S.P., Ops, and Ct/GD Rajesh Kr. Viswakarma continued control firing and simultaneously by crawling reached near the naxals who were firing taking hide under the cover of large masses and darkness. In retaliation, firing continued also from police side keeping in view the safety of villagers who were thousands in number. During search one naxal was found bleeding profusely and one country made .315 mm pistol and 05 live cartridges (.315 mm) were also recovered beside the injured naxal. Injured naxal was immediately brought to PHC, Musabani where doctors declared him brought dead. Dead naxal was later identified as Kunwar Murmu @ Jhoru of village-Dalmakocha, PS-Musabani, Distt. Jamshedpur, East Singhbhum. Kunwar Murmu @ Jhoru was an active Dy. commander of Gurabandha LWE Squad and was wanted in Musabani PS case no. 83/10, Dt. 16-10-10, U/s 147/148/149/302 IPC, 27 Arms Act & 17 CLA Act 2. Musabani PS case no. 05/14, Dt. 18-01-14, U/s 147/148/149/302 IPC, 27 Arms Act & 17 (i)(ii) CLA Act.

CT. Dukhiya Murmu was referred to TMH Hospital, Tata Nagar, Jamshedpur by PHC, Musabani for better treatment. After 04 days of intensive treatment he later passed away.

In this regard a case No. 04/15, Dt. 18-1-15, U/s 147/148/149/323/324/326/353/307 IPC, 25(1-b)A/26/27 Arms Act and 17 (i)(ii) CLA Act was registered in PS Musabani.

In this encounter, S/Shri Bachan Deo Kujur, Dy. Superintendent of Police and Late Dukhiya Murmu, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 71-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Subodh Lakra,
Sub Inspector
02. Raja Ram Singh,
Havildar
03. Shem Toppno,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31/08/2014, after getting intelligence about the presence of Bikram Gope @ Barood Gope (PLFI Area commander of Bano and Kolibera Area) with 8-10 members of his dasta in the forest area of Kawajor, a joint operation was planned by SP Simdega and Commandant 94 BN CRPF. As per plan, a team of 18 personnel of A/94 BN CRPF along with 12 personnel including Raja Ram, HC, Shem Topono, CT and Subodh Lakra, SI (O/C Bano Police Station) of Jharkhand police, under command Asst. Comdt. Sunil Kumar Sharma left their respective locations by motorcycles at 1000 hrs. and met at village Birta at 1200 hrs. SI Subodh Lakra, AC Sunil Kumar Sharma and AC Ranjit Mandal re-discussed the plan and

moved further towards the target area. On reaching close to the target area, commanders decided to left all the motorcycles at the outskirt of the Kawajor forest and covered the remaining distance on foot through cross country. The party tried to cover the western side of Kawajor forest through cordoning from the eastern side of the location. At about 1425 Hrs, the scout noticed a tent (hideout) made up of tarpaulin in the forest and informed his immediate commander SI Subodh Lakra and AC Ranjit Mandal. The information was shared with all the commanders and rest of troops were alerted. SI Subodh Lakra, AC Sunil Kumar Sharma and AC Ranjit Mandal sensed the need to cordon the hideout in “U” pattern so as to block all the escape routes. While approaching towards the hideout, security forces were noticed by the PLFI Cadres who opened heavy fire on them. In that sudden deadly fire, SI Subodh Lakra, AC Sunil Kumar Sharma, AC Ranjit Mandal and CT/GD Gulab Singh survived narrowly from the bullets as they were in the front flank of the advancing party. After giving the due warning, commanders, retaining their effective command on their troops, retaliated back in self defence and the security of the government properties. Utilizing high degree of field craft, SI Subodh Lakra, AC Sunil Kumar Sharma and AC Ranjit Mandal commanding their respective parties, tighten the cordon by approaching close to the hideout from the left and the right flank respectively. PLFI Cadres noticed both the parties coming close to them and opened heavy volume of fire aiming on the visible security forces personnel. Since SI Subodh Lakra, AC Ranjit Mandal and CT/GD Gulab Singh were in the front of the right flank of the approaching party towards the hideouts, they came under heavy fire of the PLFI Cadres. Even though they did not stop the advance and without caring of their precious lives kept on advancing and opened effective fire on the PLFI Cadres. The situation was same with SI Subodh Lakra, AC Sunil Kumar Sharma and AC Ranjit Mandal, and CT/GD Gulab Singh have shown total disregard for their personal safety and lives and kept on advancing and chased the PLFI Cadres. As a result three were apprehended alive with their arms and ammunitions. S.I Subodh Lakra, HC Raja Ram, Ct. Shem Toppno supported from second flank. At the end of the encounter a search was conducted in which one PLFI Cadre was found dead who was identified as Panchu Badaik and other one was found severely injured who was identified as Bharat Singh @ Tharthari. After giving the first- aid to him, he was evacuated immediately to Bano hospital. However ,Bharat Singh @ Tharthari was reported dead on 01/09/2014 at RIMS Ranchi. The three apprehended PLFI Cadres identified as Sanjay Surin, Bhuneshwar Yadav and Jeevan Masiah Topno. Hideout was destroyed and the following arms and ammunitions were recovered from the encounter site.

SL.No	NAME OF ARMS/AMMN	Qty.
1.	.303 BOLT ACTION COUNTRY MADE RIFLE WITH MAGAZINE	07 Nos
2.	9 MM PISTOL	01 No.
3.	REVOLVER (SIXER)	01 No.
4.	DESI KATTA 7.62 MM	01 No.
5.	.303 AND .315 LIVE ROUNDS	38 Nos.
6.	9 MM LIVE ROUNDS	06 Nos.
7.	7.62 LIVE ROUNDS	14 Nos.
8.	.303 EMPTY CASE	01 No.
9.	7.62 EMPTY CASE	03 Nos

In the entire operation despite heavy fire from the PLFI Cadres, scuffling with the PLFI Cadres and very probability of peril to their lives, the above Personnel have exhibited an exemplary courage towards carrying out their duties related to command /control and carrying out the orders. The nerve exhibited by them under life threatening circumstances is not only exemplary but also shows highest degree of courage, gallantry, dedications and commitment to duty.

In this encounter, S/Shri Subodh Lakra, Sub Inspector, Raja Ram Singh, Havildar and Shem Toppno, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/08/2014.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 72-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|---|------------------------------|
| 01. | Rumal Sewaiya,
Constable | (PMG) (Posthumously) |
| 02. | Harshpal Singh,
Addl. Superintendent of Police | (2 nd Bar to PMG) |
| 03. | Ramasankar Ram,
Constable | (PMG) |
| 04. | Shah Faisal,
Constable | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of an input that Kalika Munda @ Chandan zonal commander of CPI (Maoist) of Kundan Pahan faction will be meeting a local contractor for collecting levy amount near the forest area of vill Ladhup and Dulmi under P.S. Khunti on 18/08/2015, SSP Ranchi, formed a five member strike squad, accompanied by Harshpal Singh Addl. S.P. (Ops) Ranchi, CT Shah Faisal, CT Ramashankar Ram and Dvr. CT Rumul Sawaiya. To provide assistance to strike squad during contingency a twelve member support team was also formed.

After verifying the authenticity of the input, immaculate planning regarding choice of vehicle, dress code, selection of personnel in strike and support group, communication drills etc., strike squad started for the core area at 1330 hrs. on 18-08-2015 after giving prior intimation to the higher formations. Further during course of movement threat assessment, reconfirmation of input as well as zeroing of point of levy transaction was being continuously done by both SSP Ranchi and Addl. S.P. (Ops). At about 1500 hrs., this operational input was also shared with S.P. Khunti as the probable area fell under Khunti P.S.

After traversing a distance of 25 km approx. from Khunti town, at around 1615 Hrs., as soon as the strike squad reached the probable spot, near village Ladhup, the vigilant look of Dvr. CT Rumul Sawaiya spotted 7-8 armed Maoists in regular attire and in turn he alerted the strike squad immediately. With almost negligible time to react and there was considerable gap between strike and support group, the commanders SSP Ranchi and Harshpal Singh Addl.S.P. (Ops) decided to go for tactical advance.

As per instant strategy, the strike squad vacated the vehicle quickly and started moving towards the target cautiously. The strike squad had hardly traversed 40-50 yards on foot, the Maoists started indiscriminate firing on them. The initial volley of fire by the Maoists proved to be fatal for the valiant Dvr. CT Rumul Sawaiya who was hit on his head.

The valuable loss at a crucial juncture of fire exchange didn't dent the fighting spirit of the undeterred and valiant commanders SSP Ranchi and Harshpal Singh Addl. S.P. (Ops) and their gallant men CT Shah Faisal, Ct Ramashankar Ram and they continued retaliating fearlessly in a befitting manner.

The scenario worsened when SSP Ranchi was hit by bullet on his chest and Ct Shah Faisal also sustained bullet injury during exchange of fire. Despite being one martyred, it was then with great spirit-de-corps, indomitable courage, utmost devotion to the duty, a great self-confidence in capability and bravery of SSP Ranchi, Harshpal Singh Addl.S.P. (Ops), CT Shah Faisal, CT Ramashankar Ram which led to a turn-around in fortunes and the fierce offensive firing of the strike squad completely unnerved the maoists and they started fleeing. Few Maoists were badly hit in this unstoppable onslaught by strike squad and this fact was later corroborated by technical input also.

After 25-30 minutes of intense firing, under the bold and inspirational leadership of SSP Ranchi, started the commendable rescue part which was amazingly done by him alongwith the remaining two members of strike squad. The bruised and exhausted trio, SSP Ranchi, Harshpal Singh Addl. S.P. (Ops) and CT Ramashankar Ram under life threatening circumstances not only put the injured Ct Shah Faisal, martyred Dvr. CT Rumul Sawaiya into the vehicle but also carried the corpse of killed naxal, his AK-47 along with them. Since Dvr. CT Rumul Sawaiya was martyred, Harshpal Singh Addl. S.P. (Ops) himself drove the vehicle and gave the intimation to SP Khunti regarding the incident enroute.

Later it was revealed that the killed outlaw was "Kalika Munda @ Chandan", Zonal Commander CPI (Maoist) of Kundan Pahan faction, a prominent face propagating red terror in at least four districts of Jharkhand i.e. Ranchi, Khunti, Saraikela, W. Singhbhum; wanted in scores of cases of serious nature; responsible for killings of security personnel; an expert in IED blasts and fatal ambushes.

In the aforesaid ops, the strike squad members besides being mentally tough, lionhearted and determined, have also exhibited exceptional intelligence work/planning, rational decision-making, incomparable crisis management skills and exemplary military acumen. It is indeed commendable that the gallant action took place against the back drop of an adverse terrain as the maoists were challenged in their den and they had sufficient arms and ammunitions to blow up the small strike party.

Recovery made:

1. AK-47 - 01 with 01 magazine (10 rds. in mag. & 01 live rd. in chamber).
2. AK- 47 Magazine – 06 Nos.
3. AK- 47 rds- 135 Nos.
4. 9mm Pistol – 01 No.
5. 9mm rds. – 07 Nos.
6. Motorola Walkie – Talkie set – 01 No.
7. 315 bore Pistol (country made) – 01 No.
8. Mobile Phone with SIM – 06 Nos.

In this encounter, S/Shri Late Rupal Sewaiya, Constable, Harshpal Singh, Addl. Superintendent of Police, Ramasankar Ram, Constable and Shah Faisal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/2nd Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/08/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 73-Pres/2017—The President is pleased to award the 7th Bar to Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|-------------------------------------|------------------------------|
| 01. | P. Sanjoy Singh,
Inspector | (7 th Bar to PMG) |
| 02. | L. Bikramjit Singh,
Jemadar | (1 st Bar to PMG) |
| 03. | M. Robindro Singh,
Sub Inspector | (PMG) |
| 04. | A. Shanti Singh,
Havildar | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 06/01/2015 at about 9 AM, Inspector, P. Sanjoy Singh, Officer-in-charge of Commando, Imphal West District, who is not only one of the gallant officers of Imphal West District but also an idealistic officer received a specific input about the presence of Ruhini @ Biren, S/S Home Secretary, United Liberation Front (URF) and Tiken @ Lankhomba, Assistant Central Finance of URF, who are dreaded activists of URF responsible for the bomb explosion that took place at M.G. Avenue, Imphal Bazar and Khoyathong, Thangmeiband in which five non-Manipuris were massacred and causing injuries to others which sent shock waves across the State. The input further states about the presence of some armed cadres of United Revolutionary Front (Lalheiba faction) which is one of the conglomerate groups of KCP in a house at Kwakta Khuman Mayai Leikai of Bishnupur District. On receipt of the information, Inspector P. Sanjoy Singh organized his Commando team of Imphal West District with close coordination with Commando of Bishnupur District. After proper briefing, the force rushed towards Kwakta Khuman Mayai Leikai.

On reaching the location, the force was tactically deployed covering vantage points including bushes and road crossings. During the operation by encirclement, one particular house belonging to one Md. Majibur Rahman (33) years, s/o Late Md. Ibo of Kwakta Khuman Mayai Leikai was cordoned off and Inspector P. Sanjoy Singh with Havildar A. Shanti Singh quietly and tactically sneaked towards the western side of the house and started to search the house.

While carrying out the search with extreme caution, one person opened fire towards the party from inside the toilet keeping the door of the toilet ajar with an intention to kill the police party and made good escape. Inspector P. Sanjoy Singh and Havildar A. Shanti Singh who had hair breadth escape of the bullet of the terrorist, in utter disregard of their personal safety and with belligerent posture and high degree of responsibility, immediately took position and retaliated the firing towards the toilet in such quick succession that the terrorist could not get the chance to disappear. The terrorist was hit by the bullets of Insp. P. Sanjoy and Havildar A. Shanti Singh and succumbed to the injuries and one pistol was recovered from his possession.

Sensing the possibility of the presence of other terrorists inside the house, Inspector P. Sanjoy Singh with Jemadar L. Bikramjit Singh further advanced towards the eastern side of the house tactically with iron nerve and dogged determination to get the terrorists, if found in the house. But suddenly, one terrorist opened fire towards the side of Jemadar L. Bikramjit Singh and SI, M. Robindro Singh on the eastern side of the house and Jemadar L. Bikramjit Singh and SI, M. Robindro Singh without caring for their personal lives and impelled by high degree of responsibility returned the firing towards the terrorist and as such, there was a brief encounter. The terrorist was hit by the bullet and succumbed to the injuries. One pistol was recovered from near the dead body.

This refers to FIR case No. 3(1) 2015 MRG P.S. u/s 307/341 IPC, 20 UA (P) Act & 25 (1-C) Arms Act.

The deceased terrorists have been identified as:-

- (a) Puyam Mongyamba @ Biren @ Sunil @ Ruhini Singh (50) years, s/o (L) P. Indu Singh of Khurai Chingambam Leikai, Imphal East District.
- (b) Keithellakpam Tiken Singh @ Lankhomba (44) years, s/o K. Anganghal Singh of Naoremthong Khullem Leikai, Imphal West District.

The following arms and ammunition were recovered and after the completion of investigation formalities, the dead bodies have been handed over to the relatives of the deceased:-

- (a) 1 (one) hand grenade
- (b) 1 (one) pistol marked as "BO6731" with magazine and 4 (four) live rounds
- (c) 1 (one) pistol marked as "CZ75BCAL 9 LUGER" with magazine and 5 (five) live rounds
- (d) 14 (fourteen) empty cartridges
- (e) 2(two) mobile handsets

In this encounter, S/Shri P. Sanjoy Singh, Inspector, L. Bikramjit Singh, Jemadar, M. Robindro Singh, Sub Inspector and A. Shanti Singh, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These award are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal/7th Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/01/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 74-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- 01. Prem Veer Rana,
Inspector
- 02. Sanjay Kumar Pandey,
Sub Inspector

03. Manish Bist
Sub Inspector
04. Zarrar Husain,
Head Constable
05. Parvesh Kumar,
Head Constable
06. Prabhat Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Sanjay Pandey, Sub Inspector In-charge SWAT, Crime Branch, Saharanpur, received information from SSP, on 05.06.2015 at about 1305 hrs., about the movement of 04 criminals, in I-20 car, towards Saharanpur, to commit some heinous criminal activity, immediately sprung into action and promptly, deliberating strategy, with his team, to arrest criminals, quickly left in government vehicle, on Malhipur road, towards Badgaon.

Shri Sanjay Pandey accompanying SWAT team, when reached near Ambehta Chand, a fast-coming I-20 car was seen coming and as soon as car came in proximity, he pointed car to stop, instead, driver of car, drove it faster, towards Saharanpur, but alert, Shri Sanjay Pandey, immediately informed SSP., swiftly chased I-20 car, which drove fast in village Halgoya, but due to excessive speed, dashed, a house, in narrow lane and 04 crime-clever criminals, taking automatic weapons and bags, in their hands, alighted and ran towards forest, across lane. Shri Sanjay alongwith team, virtually jumped from government vehicle and challenged fleeing criminals to surrender, but crafty criminals, daringly opened abrupt incessant firing to kill police team, yet, undeterred, Shri Sanjay Pandey and his team, without caring for their safety, fearlessly, continued chasing, with controlled reply-firing. As, criminals, running onward Shri Premveer Singh Rana SHO, Rampur Maniharan, on instruction of SSP, arrived with police team. The miscreants finding themselves trapped, continued sharp incessant firing, furiously, from their automatic weapons. SHO, challenged criminals, to surrender, strategically crawled and Shri Sanjay, accompanying his Team with indomitable courage, to capture, criminals alive, and resorting controlled firing, fearlessly, moved ahead, but in intensive fire criminals, by automatic weapons, SWAT Team was hit and Shri Sanjay, Shri Manish Bisht SI, & HC Pravesh escaped unhurt, because of BP jackets, whereas, HC(P) Zarrar Husain and Constable Prabhat Kumar were injured seriously. SHO and Shri Sanjay, in this face to face combat and do or die situation, dauntlessly led the attack, with SI Manish Bisht, HC Pravesh Kumar and injured HC(P) Zarrar Husain and Constable Prabhat Kumar, without caring for their life and limb and displaying conspicuous gallant, courage and devotion to duty and determined to capture the criminals, alive, fearlessly with strategic field-craft, moved ahead, in their firing range and courageously fought back, resorting firing in self defence, resulting 02 criminal fell wounded, at 1530 hrs., whereas, another 02 criminals run away, were chased and arrested, same day.

Both the criminal were later declared dead and identified to be-dreaded, cruel extortionist, robber and murderer Absconding criminal Gang-leader Rahul Khatta, having declared reward of 77,500/- by DsGP of UP, Uttrakhand and Delhi and sharp-shooter Dharmendra@Binte. Sophisticated illicit firearms-SLR, carbines and live and used ammunitions, in huge quantity were recovered.

Recovery:-

- (1) One SLR with magazine, 01 live and 08 empty cartridges of 7.62bore.
- (2) One pistol with magazine, 18 live and 06 empty cartridges of .30 bore
- (3) One carbine with magazine, 08 live and 08 empty cartridges of 9mm bore.
- (4) One pistol with magazine made in USA, 02 live and 08 empty cartridges of .32bore.
- (5) One pistol, 06 live cartridges of .455 bore.
- (6) One carbine country made.
- (7) Four ammunition belt with 107 live cartridges of .315 bore.
- (8) One carbine country made with magazine 38 live cartridges of .32bore.
- (9) Two rifle and 02 empty cartridges of .315bore.
- (10) One magazine .32 bore, loaded with 04 Live cartridges.
- (11) One sharp knife.

In this encounter, S/Shri Prem Veer Rana, Inspector, Sanjay Kumar Pandey, Sub Inspector, Manish Bist, Sub Inspector, Zarrar Husain, Head Constable, Parvesh Kumar, Head Constable and Prabhat Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/06/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 75-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Manish Kumar Mishra,
Dy. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20.01.2010, a day light kidnapping of 11 years old Gaurav Mishra took place from Aliganj area of Lucknow city. The boy was coming back from CMS School of Lucknow city. A demand of 1.50 Crore as ransom money created panic in the State capital. The task of rescuing the kidnapped boy was entrusted by the DGP, Uttar Pradesh to the DIG/SSP, Lucknow and SSP STF who after proper planning and mutual consultation led the respective rescue teams. Available intelligence and analysis of mobile phones data revealed the location of the kidnappers around Lucknow-Hardoi border. Both the officers immediately sprung into action, rushed to the border and strategically positioned themselves, so as to apprehend the Indica Car which had been used in kidnapping.

On 21.1.2010 at around 8 AM the Indica Car was spotted at the Hardoi border, DIG and SSP alerted the accompanying force and made a valiant attempt to stop the car. The miscreants inside the car opened fire and a bullet damaging the right window of the officer's Ambassador car was embedded into the back seat. Both the officers had a narrow escape owing to their alacrity. They however chased the car and instructed the other team led by Addl SP and Dy.SP Manish Mishra to round up the miscreants. Realizing that he was entrapped, the driver of the Indica car turned right on Kuchcha road. The officers left their vehicles and showing extra ordinary courage chased the criminals who were constantly firing from the car. However the rear tyre of the car was busted by the DIG's bullet. The kidnappers then abandoned the car and took position behind the tree and bushes and continued to fire indiscriminately. DIG/SSP, Addl. SPS and Shri Manish Kumar Mishra, Dy. SP without caring for their own lives and exhorted the miscreants to surrender. The police fired at them as a last resort and that too in self defence. One bullet hit Addl. SP injuring his left leg while the others escaped narrowly. The police party used the skills of field craft and tactics in completing the operation successfully, which resulted in rescuing the child. The four culprits died during the exchange of fire and following arms/amm were recovered:-

1. 01 factory made pistol .9 mm, 02 live cartridges and 01 empty shell of .9 MM bore.
2. 02 country made pistols .315 bore, 02 live cartridges and 02 empty shells of .315 bore.
3. 01 country made pistol .12 bore and 01 empty shell of .12 bore.

In this encounter, Shri Manish Kumar Mishra, Dy. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/01/2010.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 76-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Abhijeet Kumar Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

50 Battalion BSF is deployed in a smuggling prone area of Amritsar (Punjab). In the intervening night of 28/29th March, 2015, at about 0050 hrs, Constable Abhijeet Kumar Singh, who was on HHTI duty along the border fencing in the area of responsibility of BOP Rattankhurd, observed suspicious movement of four armed personnel on HHTI moving cautiously from Pakistan side towards border fencing in area between Border Pillar No. 100/3 and 100/4 S. He immediately informed about his observation to HC(G) Prem Chand, who also confirmed suspicious movement of smugglers.

Since there was no time to call other personnel, Constable Abhijeet Kumar Singh despite being alone, without wasting any time, sprang into action and got down from HHTI tower. He appreciated the ground situation and decided to face the challenge alone, using field craft and tactical knowledge. After stealthily crawling, approximately 150 mtrs, he reached near the Pak smugglers who were armed with AK-47 rifle and trying to insert a PVC pipe inside the Border fence. Knowing that Pak smugglers were armed, Constable Abhijeet Kumar Singh without caring for his life bravely challenged them to stop. On his verbal challenge, smugglers in depth fired upon him and one armed smuggler tried to align his AK-47 Rifle towards him to fire. Sensing danger to his life, Constable Abhijeet Kumar Singh gallantly retaliated with fire. Due to the quick reflexes and timely action by Constable Abhijeet Kumar Singh, one of the smugglers got hit by bullet, who was trying to aim the AK-47 rifle and the other smuggler who was trying to insert the pipe also got killed on the spot. Other smugglers managed to escape from the scene taking cover of wheat crops and darkness. After first light, surrounding areas were thoroughly searched during which dead bodies of two Pak smugglers along with 1-AK 47 Rifle, 2 magazines fitted with 31 live rounds (including 1 round loaded in the chamber), 12 kg suspected Heroin inserted in PVC pipe tied in a tubular cloth and 1 mobile Phone (Nokia) with 3 batteries and 1 Pak SIM were recovered from the site.

The elimination of two smugglers and recovery of Heroin along with Arms and Ammunition could be made possible due to courageous, gallant and prompt action by Constable Abhijeet Kumar Singh. His gallant action will have a great impact over the activities of smugglers/Anti-National elements and boost the morale of own troops besides adding to the glory of the force.

In this encounter, Shri Abhijeet Kumar Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/03/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 77-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|-----|--|----------------|
| 01. | Ramesh Chand,
Head Constable | (Posthumously) |
| 02. | Mahavir Singh,
Head Constable | |
| 03. | Sajjan Singh,
Head Constable | |
| 04. | Rajender Kumar,
Assistant Sub Inspector | |

Statement of service for which the decoration has been awarded

171 Battalion BSF is deployed in a hyper sensitive Naxals infested area of District-Kanker (Chhattisgarh). On 12th April 2015 at about 2245 hrs, while leading the foot contingent of 05 personnel near newly established COB Chhote Bethia, HC Ramesh Chand of 171 Bn BSF along with HC Mahaveer Singh and HC Sajjan Singh entered into the kitting zone of the Naxal ambush on the Northern periphery of village Chhote Bethia. HC Ramesh Chand was hit by the very first hail of bullets and fell down on the ground. But not opting to remain helplessly lying there and wait for someone to help him, he crawled a few meters to gain a slightly better tactical position. Then, showing highest level of professionalism and true dedication towards the law of the land, he warned the Naxals to cease firing and surrender but they did not heed to his warning and kept

on bringing down heavy fire from automatic weapons. Sensing immediate danger to his patrol party, he himself counter attacked despite his injuries and also organized counter ambush by tactically employing his small party. The Naxals had the advantage of ground and they were firing from well-chosen positions. HC Mahavir Singh and HC Sajjan Singh although exposed in comparatively open ground stood fast by their leader and effectively denied any maneuverability to the Naxats when they tried to encircle them. During the encounter, the Naxals, who were 6-8 in numbers, triggered claymore mines and lobbed grenades at the party but could not intimidate the brave men to abandon their positions. Meanwhile, HC Ramesh Chand, maintaining his composure, informed his base about the incident and sought reinforcement. The remaining two members of his party, who were out of the killing zone, also took positions and kept firing.

ASI Rajender Kumar, who was in command of a party in bullet proof vehicle placed nearby, immediately responded to the call for reinforcement. On reaching, he found that HC Ramesh Chand, HC Mahavir Singh and HC Sajjan Singh were trapped in the killing area of Naxat ambush. He immediately placed his Bullet Proof vehicle in between Naxats and own party and ordered his party to bring down heavy fire on Naxats. He then, under fire evacuated HC Ramesh Chand and lived true to the traditions of BSF in risking his own life to safeguard his comrade in arms. HC Ramesh Chand was evacuated to PHC Bande, where he was declared as brought dead.

HC Ramesh Chand, HC Mahavir Singh, HC Sajjan Singh and ASI Rajender Kumar showed conspicuous courage, very high level of tactical acumen and boldly seized the initiative from the Naxals, which forced them to flee leaving behind their arms, ammunition and an injured comrade who had succumbed to his injury and was identified as Naxal commander Dasman Salam @JaldevVikas, Chamar Salam.

The rare and exemplary courage of HC Ramesh Chand inspired his comrade to give a befitting reply to the anti national elements. There are intelligence reports that three more Naxats were injured in the counter action out of which two of the injured have succumbed to the injuries.

Recoveries made :

S. No.	Description	Qty.
1.	Dead body of Naxal	1
2.	Improvised RL (bore - 60 mm, length - 31") (Pipe Bomb)	01 No.
3.	Improvised Mor (bore – 50 mm, length -15") (Pipe Bomb)	01 No. 02 (31 mtr and 20 mtr)
4.	Electrical wire (with mate plug)	
5.	Electronic Flash with cells	01 No.
6.	Live rounds of 7.62 X 51 mm (SLR ammunition)	28 rounds
7.	Empty Fired Cases 7.62 X 51 mm (SLR ammunition)	12 Nos.
8.	Empty Fired Cases 7.62 X 39 mm (AK ammunition)	02 Nos.
9.	Empty Fired Cases 5.56 X 45 mm	06 Nos
10.	Ammunition pouch	01 No.
11.	SLR Magazines	02 Nos
15.	Cash	Rs 3,065/-

In this encounter, S/Shri Late Ramesh Chand, Head Constable, Mahavir Singh, Head Constable, Sajjan Singh, Head Constable and Rajender Kumar, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/04/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 78-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Bhale Ram,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

A specific intelligence input about the congregation of maoists near villages Kurumbada and Ghaghra, under PS-Arki, Khunti (Jharkhand) was received by 157 Bn CRPF and accordingly an operation was launched in the area by two platoons each of C/157 and G/157 along with State Police. The troops left the base camp Korwa on 08/01/2016 at around 0800 hours and reached close to their target area by surreptitiously traversing through the thick jungle.

The troops, as planned, then got divided into smaller groups to lay cut-offs at the probable escape routes around the village Kurumbada before launching the search. The task of placing the cut-offs in the forest to the East of the target village was assigned to Inspector Bhale Ram of C/157. For the purpose, Inspector Bhale Ram took along 40 troopers with him and advanced tactically. After placing two cut-offs of 10 men each he advanced towards point No. 3. But as he was guiding his troops to a tactically advantageous location i.e. atop a high ground in the forest, the maoists positioned above opened intense fire at them. The troops had accidentally came across the camping site of maoists. Despite knowing that the odds were highly stocked against the troops because of strategic positioning and greater strength of the maoists, Insp/GD Bhale Ram retained his nerve and opened heavy fire at the maoists. His bold and brave retaliation infused confidence on other troopers of withstanding the sudden and severe onslaught of the maoists and they too opened heavy fire at the maoists. With a handful of troopers at disposal, counter-attacking a securely entrenched enemy was a distant idea but Inspector Bhale Ram, confident of his tactical understanding of the situation, ordered his troops to fire intensely with optimum use of continuous bursts with firing of grenades. As was expected the continuous blasts of grenades and incessant fire petrified the lower rank cadres of maoists and they fled away from the encounter site. But the senior level and other hardcore maoists who were in large numbers and perched on dominating firing positions were confident of their victory. They soon found out that the troops were not in such great numbers as suggested by their fire power and started encircling the troops in order to inflict maximum casualty. Sensing the plan, Inspector Bhale Ram advanced along with his troops to counter the move of maoists but a maoist positioned on a tree and firing incessantly was a big hurdle. Unmindful of the looming dangers, Inspector Bhale Ram moved out of his covers and fired a continuous burst at him. The bullets fired inflicted injuries on the maoist as he was seen falling from the tree.

This opened the much sought route to the troops and they charged ahead and turned the table around by gaining dominating positions and directing heavy fire on the maoists. The plan to encircle the troops was foiled by this move. Inspector Bhale Ram then directed other cut off parties to attack from flanks while he and his party rained bullets on the maoists and injured many of them. As a final blow to the morale of the maoists other cut off parties also attacked from the left and right flanks and the multidirectional attack spread panic among the maoists. Beaten by the valour and tactics of the troops, the maoists started fleeing and escaped into the jungle taking advantage of undulating ground and thick vegetation.

Indomitable courage under adverse situation, utmost devotion, able commandership and professional acumen displayed by Inspector Bhale Ram not only saved precious lives of his troops but also forced a well entrenched enemy to flee for their lives, after sustaining severe injuries, leaving behind a huge war like stores. During search of the area, One INSAS Rifle, one .303 Rifle, one .315 Bore 4 Rifle, 519 rounds of ammunitions, 8 Magazines, 10 empty cases, 7 ammunition pouches, 3 motor cycles, 4 Gas Cylinders (14.2 Kgs) of which two were wrapped with Cordex Wire and made IED), 5 small Gas Cylinders, 27 IEDs, 25 Kgs of Cordex Wire, 1 Laptop, 7 Mobile phones, 1 IED Remote, 66 VCDs and huge amount of maoist literature, uniforms, carry bags, utensils, daily use items etc. were recovered from the encounter site.

In this encounter, Shri Bhale Ram, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/01/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 79-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Niraj Kumar Singh,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20/03/2015 at about 0530 hrs, specific information was received from Army intelligence unit regarding movement of MULTA Dacoits in the area of village Itapara, U/PS Sadar, Distt- Nagaon (Assam). After getting information, CRPF troops of 34 Bn led by Insp/GD Niraj Kumar Singh along with State Police QRT u/c Town SI Badri Prasad Baruwati and Army Intelligence personnel carried out a joint operation at village Itapara, PS Sadar, Distt: Nagaon (Assam).

During operation at about 0645 hrs, when the troops reached near Itapara Lalungaon RCC bridge, they noticed 06 suspects riding on three motor cycles and ordered them to stop for checking. Instead of stopping, the suspects on motorcycles opened indiscriminate fire on the troops and tried to flee after jumping from the vehicles. In retaliation, the troops also fired and chased them. During the chase, Inspector Niraj Kumar Singh and SI Badri Prasad Baruwati of Assam Police ran after two of the dacoits who were wielding weapons and firing at the troops incessantly while fleeing. To stop the fleeing dacoits, Inspector Niraj Kumar Singh, without caring for the bullets being fired at him, fired precisely at one of the dacoits and inflicted injury on him. Thereafter he advanced ahead and overpowered the injured dacoit despite knowing the fact that the dacoit was still armed and his move would have been dangerous to his own life. Meanwhile SI Badri Prasad Baruwati of Assam Police who too was bravely chasing another dacoit was hit at his leg by a bullet fired by the dacoit. As he fell on the ground due to injury, the dacoit moved closer to him with the intention to kill him from a close range. On seeing the life of SI Badri Prasad Baruwati under grave danger as the dacoit was about to shoot him, Inspector Niraj Kumar Singh with lightening reflexes took a careful aim and amidst prevalent threats to his own life shot the dacoit dead thereby saving the life of his beleaguered teammate.

Though Inspector Niraj Kumar Singh had himself suffered some bruises during the scuffle, he remained undeterred throughout the operation which further yielded apprehension of 3 more notorious dacoits. The operation resulted in a killing of a Dacoit namely Majibur Rehman and apprehension of 4 other notorious dacoits, out of which two dacoits namely Kashem Ali & Mainul Hague had sustained bullet injuries. The troops also recovered one 7.65 mm pistol (made in Italy), one 7.65mm Magazine, one Country made pistol, one live ammn., one Mobile Handset and three motorcycles from the encounter site.

The operation is a fine example of close quarter combat wherein Inspector Niraj Kumar Singh displayed exemplary valour in neutralizing a dreaded aimed dacoit. He without caring for his own life firstly chased the dacoits and overpowered one of them and secondly when the life of SI Badri Prasad Baruwati was at grave risk, he reacted promptly and gunned down the dreaded dacoit.

In this encounter, Shri Niraj Kumar Singh, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/03/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 80-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Banshi Lal Regar,
Assistant Commandant
02. Bilal Ahmad Ganaie,
Constable
03. Amit Chattaraj,
Constable
04. Sunny Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27/02/2015, at about 1940 hrs. SOG Tral received information about the presence of some terrorists in a house at village Mominabad, Distt. Pulwama (Jammu and Kashmir). The information was shared with A/185 Bn CRPF and 42 RR. Accordingly a joint operation was immediately launched after briefing the troops. During briefing the different components

of Security Forces were given specific area to cordon and a combined assault team was formed. Thereafter the troops acted swiftly and without losing any precious time rushed to cordon the target house.

The village had treacherous terrain with thickly populated cluster of houses on one side and uneven hilly terrain on the other, posing twin risk of guerilla attack on SFs and probability of collateral damage. While the cordon was being laid, terrorists hiding in the house lobbed a grenade and opened heavy fire aimed at the assault team which was positioned near the gate in a bid to escape from the area. The grenade had exploded barely 10 feet away from the above personnel but their tactical position and vigilant reaction against the impending explosion kept them safe. The assault team which included Shri Banshi Lal Regar, Asst. Comdt., Constable Bilal Ahmad Ganie, Constable Amit Chattaraj and Constable Sunny Kumar immediately retaliated fiercely to the fire while simultaneously taking cover behind the boundary wall. Failing in a bid to escape by the fierce retaliation of the troops, the terrorists rushed back inside the house and started shouting anti-national slogans in local dialect and again opened indiscriminate fire towards the gate.

Shri Banshi Lal Regar at that moment took the lead and together with Constable Bilal Ahmad Ganie, Constable Amit Chattaraj and Constable Sunny Kumar moved to some distance, got tactically positioned on the boundary wall and together they fired courageously without caring for their lives. The fierce gun-fight lasted for around half an hour after which the firing from inside the house stopped. During the fierce gun battle Shri Banshi Lal Regar, Constable Bilal Ahmad Ganie, Constable Amit Chattaraj and Constable Sunny Kumar displayed utter disregard to their personal life and safety, faced the onslaught of the terrorists bravely and did not give them a chance to escape or inflict casualties on Security Forces. As the firing from inside the house stopped, the Security Forces reorganized themselves to launch an assault inside the house. An Assault Party was formed which included the above four brave troopers. The Assault Party had a task which entailed risk of life wherein they had to approach a heavily armed enemy positioned somewhere inside the house and ready to fire bullets at any intruder. Nevertheless, Shri Banshi Lal Regar accepted the challenge and ordered his troops to enter the gate of the house in buddies and the next buddy would enter only when the first buddy had positioned itself behind a cover. Further leading from the front he entered the gate with his buddy Constable Bilal Ahmad Ganie and they took position behind a tree. After putting the house under observation for few seconds, they moved further ahead to get positioned close to house but suddenly a terrorist rushed out the target house raining volley of bullets at them. Shri Banshi Lal Regar immediately jumped and pushed Constable Bilal Ahmad Ganie to ground, as the bullets just whizzed past them, and the two fired and gunned the terrorist down. Taking advantage of the melee, another terrorist jumped out of a window and ran towards the rear of the house. But by then, Constable Amit Chattaraj and Constable Sunny Kumar had entered the premises of the house and as they saw the terrorist fleeing they ran after him. The terrorist, on being chased, fired a fusillade of bullets aimed at the two constables. The constables were lucky enough that the bullets did not hit them. Then the two in a rare display of bravery and without getting bogged down by the fierce fire, fired at the terrorist while keeping the chase on. From their precise fire the terrorist suffered injury but did not give up and kept firing at them. But it did not take long for the brave and courageous persons namely Constable Amit Chattaraj and Constable Sunny Kumar to silence and neutralize him.

After the firefight ended, a search yielded the recovery of dead bodies of two hardcore HM terrorists, viz Shabeer Ahmad Mir, Category "A", r/o Dadsara and Idrees Ahmad Shah, r/o Noorpora, besides the following arms and amn:-

- | | | | |
|----|----------------|---|---------|
| 1. | Rifle AK 47 | - | 02 Nos. |
| 2. | Magazine AK-47 | - | 06 Nos. |
| 3. | Rounds | - | 80 Nos. |

In this encounter, S/Shri Banshi Lal Regar, Assistant Commandant, Bilal Ahmad Ganaie, Constable, Amit Chattaraj, Constable and Sunny Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/02/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 81-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Anil Kumar Singh,
Deputy Commandant

02. Manoj Kumar Bisoyi,
Head Constable
03. Sukesh Mahto,
Constable
04. Pramod Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An intelligence input about presence of a maoist dasta at Jhumra Pahar, under PS Chatrochati, District Bokaro (Jharkhand) was received by 26 Bn CRPF. Based on the information, an operation code-named "Parakram-1" was planned and launched by the joint troops of 26 Bn CRPF, 203 CoBRA and State Police. After a thorough analysis of the terrain, past incidents, villages sympathetic to maoists and presence of water points in the area, seven suspected villages i.e Baltharwa, Aman, Danra, Nawdanda, Jamuabera, Simrabera and Dhorri were targeted. For each of the suspect villages, a separate team was formed under a bold and brave commander. Accordingly, the task to search village Danra was assigned to Sh. Anil Kumar Singh, Deputy Commandant and his team which comprised of Battalion QAT and State Police component.

As per the plan, the operation was launched on 07/02/2016 at 1700 hours and the teams moved to their pre-decided target under the cover of dense vegetation maintaining complete secrecy. By 1830 hours, the team under command Shri Anil Kumar Singh reached near a point called Amba Nala, which was a strategic point for camping due to availability of water and presence of dense vegetation with undulated ground. The place was some 2 kms short of the target village Danra. As the place offered sufficient cover and opportunity for camping, Sh. Anil Kumar Singh decided to first search that area and then move to village Danra.

At around 1900 hrs., as Sh. Anil Kumar Singh was leading his team and searching the area, he noticed some suspicious movement atop a hilltop. But due to fading light it was difficult to distinguish between a maoist and a villager. As a precaution, he signaled his troops to stop the advance and lay low. To clarify the things, he formed a small recce team comprising of HC/RO Manoj Kumar Bisoyi, Ct/GD Sukesh Mahto and Ct/GD Pramod Kumar and surreptitiously led it towards the hilltop. But hardly had the recce team moved some paces ahead, a sudden and intense fire came at them from the top. Ready to face such a surprise attack, the recce team immediately retaliated and a fierce encounter at a close distance ensued. To pin the maoists down for launching a counter-attack, Shri Anil Kumar Singh ordered the troops present at rear to open heavy fire while he led his recce team to the flanks of the Maoists ignoring the fierce fire. Before the maoists could understand the astute tactics of the Commander, his small team rained bullets on them from a close quarter. In the attack some of the maoists sustained bullet injuries which spread panic in their ranks and they began to retreat.

However some of the maoists who were safely entrenched behind secured covers held the ground and fired intensely at the brave troopers. As the darkness had begun to set in and knowing that the enemy would try bravely flee under the cover of darkness, the four dare-devils in a rare show of bravery moved out of their covers and launched a concentrated fire at one of the holed maoists. Their concentrated fire resulted in killing of the maoist. The maoists by then had understood that if the movement of troops was not stopped then they would suffer a lot more casualties. To counter the troops, the maoists under cover of fire fled in different directions and took positions behind trees at a distance. Since it had become dark and the positions of the maoists could not be made out, Shri A K Singh then ordered his troops to take cover behind trees and keep retaliating to the intermittent fire of the maoists. The intermittent fire continued for another one hour after which the fire from maoists side subsided. Throughout the night the troops remained alert to defy any surprise attack from the maoists. At first light, the area was searched during which the troops recovered dead body of a maoist in green uniform, which was later identified as of Deva Lal Majhi R/o Village Asna Pani, PS Mahuatand, Bokaro along with one .315 Rifle. One injured female maoist namely Lalita Hansdah along with a weapon was also apprehended from the spot besides recovery of huge amount of incriminating items, maoist literature and camping items.

In this encounter, S/Shri Anil Kumar Singh, Deputy Commandant, Manoj Kumar Bisoyi, Head Constable, Sukesh Mahto, Constable and Pramod Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 07/02/2016.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 82-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rajesh Shukla,
Constable
02. Randhir Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12/09/1992, an information was received that dreaded terrorist Khajan Singh, S/o Wassan Singh, resident of village Sattowali self styled Lt.Genl. of KCF was taking shelter in a farm house in village Villa-Vaju in area Longianwali and Bholewal. A search operation was launched in the area at about 0500 hrs with one platoon each of B/80 and E/80 under the command of Shri Mukhram Yadav, Asstt. Commandant and the local police. At about 1100 hrs, when these parties, searching various farm houses in the area, reached near the farm house of one Mangal Singh of village Longianwali, they came under heavy fire from one sugarcane field. The personnel of unit undaunted from heavy volume of fire immediately took position and returned fire. Amidst this heavy exchange of fire, Ct/GD Rajesh Shukla noticed one terrorist trying to escape from one sugarcane field to another. Unmindful of his own safety, Ct Rajesh Shukla displayed chivalry of highest order and rushed to cover the terrorist from the front to stop him from escaping. He was followed by Ct Randhir Singh. When the terrorist noticed Ct Rajesh Shukla rushing to cover him from the front, he fired a burst with his AK- 47 rifle. Ct Rajesh Shukla received four bullet injuries in his stomach. Despite being injured seriously with blood gushing out of the wounds, Ct Rajesh Shukla did not loose his composure and within a split of second fired back at the terrorist who was also injured, and fell down. While Ct Randhir Singh rushed to cover Ct Rajesh Shukla, he was also fired upon by another terrorist who was hiding some where in the sugarcane field. Not caring about the agony caused by the bullet injuries and blood which had smeared their bodies, Ct Rajesh Shukla and Ct Randhir Singh succeeded in covering the terrorists, who then entered into the house of one Smt. Mahinder Kaur in village Sattowali by crawling through the sugarcane field. Ct Rajesh Shukla and Ct Randhir Singh did not loose their trail and followed them to the house. In the meantime, remaining force personnel also reached there and put a cordon around the house. The terrorists had taken position in a room inside the house where they had already constructed a bunker. Grenades were then lobbed inside the room by making hole in the roof. The movement grenades started exploding, one terrorist tried to come out from the door of the room and he was killed in the firing. When there was no response to the firing from inside the house, it was then searched. The dead body of one terrorist was found there. One AK-47 rifle with 40 live rounds, one stick bomb and lot of empty cartridges were found from the room. The dead terrorist was recognized as Khajan Singh, S/O Wassan Singh of Village Sattowali, Lt. Genl of KCF group who was responsible for many killings in the area including security force personnel.

Ct Rajesh Shukla and Ct Randhir Singh acted in the most courageous manner, exhibiting chivalry, exceptional presence of mind, bravery, tenacity selfless devotion to duty without caring for their lives for the cause of annihilating the terrorists. But for their gallant efforts, the most wanted and notorious terrorists would have certainly managed to escape.

The dead body of killed terrorist was sent for post-mortem and arms/amm recovered were taken to Police Station Ghuman, where a case was registered U/S 307/34 IPC and 25- 54/59 Arms Act.

In this encounter, S/Shri Rajesh Shukla, Constable and Randhir Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/09/1992.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 83-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Vinay Kumar,
Assistant Commandant

- | | | |
|-----|------------------------------------|----------------|
| 02. | Ashok Kumar Jat,
Constable | (Posthumously) |
| 03. | Sudhir Kumar,
Constable | |
| 04. | Ranjeet Kumar Tiwari,
Constable | |

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 25/10/2015, at around 20:20 hrs, the Company Commander Shri Vinay Kumar, AC received information about the large gathering of maoists near a Nala and engaged in digging of the newly constructed Maraiguda-Gollapalli Road.

Three teams of F/217 were formed under command Shri Vinay Kumar, AC Defiant to potential threat of being ambushed by the established enemy, arduous terrain and ripping the darkness of the night, troops stealthily advanced towards the Nala which was surrounded with thick bushes and big trees. While approaching the target area troops observed some suspicious voices and movements near the Nala. Acting on the developments, troops got alerted for possible enemy presence and attack.

As the positions of maoists were not clear, the look-outs were sent to scan the area ahead and locate them. Displaying peerless bravery, CT/GD Ranjit Tiwari and CT/GD Ashok Kumar Jat took an intrepid forward move to cross the Nala to clear the area and locate the maoists, while the rest of the party took positions near Nala. While the duo brave hearts were fearlessly crossing the Nala, the maoists, positioned behind the bushes/trees, started indiscriminate fire on them. It was a well planned and gruesome ambush of the maoists. In this awful situation where death was flying in the form of bullets all around, the duo brave hearts were left with no cover from bullets. Holding their nerves and ground in critical situation, they retaliated bravely with their full capacity. Following continuous retaliation and adopting fire and move tactics, the duo fell back to join the troops.

To break the gruesome ambush of the maoists, a dared counter attack was then planned by crossing the Nala. As per plan, ASI/GD Gurmej Singh along with CT/GD Ashok Kumar Jat and CT/GD Sudhir Kumar were entrusted the task to engage the maoists from left flank while another team under command Vinay Kumar AC, CT/GD Ranjit Kumar Tiwari and others would launch the counter attack on maoists from front. But contrary to the expectations, the team advancing to cover the left flank was heavily fired upon by the maoists. Due to the heavy fire of the maoists, the small team advancing from the left got caught in the killing zone and was left with minimal cover. Sensing the gravity of the situation, the team at left flank took positions behind minimal cover available and stood the ground firmly. Amidst heavy shower of bullets, the men inside the killing zone launched a ferocious counter attack on the well-fortified enemy.

During the fierce encounter, a stray bullet pierced through the chest of CT/GD Ashok Kumar and the blood began to ooze out of his body. But without caring for the profuse loss of blood, CT/GD Ashok Kumar kept firing at the maoists till he lost his consciousness. Meanwhile, CT/GD Sudhir Kumar who was also fearlessly fighting with the maoists also sustained a splinter injury. Despite of the fatal injury, CT/GD Sudhir Kumar held the ground firmly and kept the maoist at bay who were by the time had started to encircle the troops. In the do or die situation, where the maoists due to their numerical supremacy and tactical positions were raining havoc at the troops, a bold, courageous and let what may come decision was the need of time. Apprehending the fact, Sh. Vinay Kumar, AC and CT/GD Ranjit Kumar Tiwari displayed utter disregard to their lives as they advanced ahead towards the trapped team and blatantly attacked the maoists from flanks. Team leader, Sh Vinay Kumar, AC led his team from the front and directed CT/GD Ranjit Kumar to fire from UBGL on maoists. In the midst of flying bullets, CT/GD Ranjit Kumar without wasting any of the precious time fired precise and accurate grenades at the maoists positions. The accurate fire of UBGL inflicted injuries on the maoists which broke their moral and courage. As the troops made a further advance adopting sensible fire and move tactics while exhibiting conspicuous bravery troops the maoists began to flee deeper in the darkness, By showing extraordinary courage, tactical acumen and ferocious counter offensive action troops succeeded in breaking the ambush of maoists and thereby succeeded in the mission of saving the road from getting damaged. It was the gallant act of Sh. Vinay Kumar, AC, CT/GD Ranjeet Kumar Tiwari, CT/GD Ashok Kumar Jat and CT/GD Sudhir Kumar, who launched a concerted and fierce attack on the maoists forcing them to flee from their well established and pre-occupied positions. Both the injured were evacuated from the battlefield but CT/GD Ashok Kumar Jat succumbed to his injuries and sacrificed his life on the altar of duty. After the encounter huge quantity of Arms/Ammunition and other equipments were recovered from the site.

Recoveries made :-

1	Bharmar Gun	01 No.
2	Country made motor	01 No.
3	Electronic Detonator with wire	01 No
4	Copper wire	20 Mtrs
5	7.62x51 MM fired cases	02 Nos
6.	.303 empty fired case	01 No.
7	Bow	03 Nos.

In this encounter, S/Shri Vinay Kumar, Assistant Commandant, Late Ashok Kumar Jat, Constable, Sudhir Kumar, Constable and Ranjeet Kumar Tiwari, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/10/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

No. 84-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Sashastra Seema Bal:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sanjeet Kumar, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10/10/2015, on receiving an information from SP Godda (Jharkhand) about presence of a group of 20-25 Maoists moving around Pakrikhutta, Kathaldih area, a patrolling party consisting of 40 personnel of 18th Bn SSB Dumka alongwith 07 personnel of Jharkhand Police of PS Sundarpahari, Distt: Godda left Coy Hqr. Damru for area domination at Villages Pakrikudda, Dangapara and Kathaldih areas for patrolling.

On reaching Kathaldih Village, they noticed 03(three) villagers running away after seeing the troops. On their suspicious activity, Insp(GD) Shyamal Paul, Coy Commander 'A' Coy Damru SSB and SI Satyendra Prasad, SHO, PS Sundarpahari alerted the troops and ordered to take their position. As soon as the troops advanced towards the village, some unknown persons suspected to be Naxal opened fired against the patrolling party and troops immediately retaliated by counter firing. Constable (GD) Sanjeet Kumar immediately took position tactically after hearing the first firing sound and immediately moved upward and retaliated Naxals by opening controlled fire from his 5.56 MM INSAS Rifle. Despite heaving fire coming from naxal side, he did not care for his life and continued moving ahead and kept on firing. The brave action on the part of CT (GD) created fear among the Naxal compelling them to run for shelter which in turn enabled other force personnel to immediately take their position and act against the Naxal's attack. After fierce exchange of firing which lasted about two hours (0945 hrs to 1130 Hrs.), the troops forced the naxals flee the site of incidence. In the exchange of fire with Naxals, CT(GD) Sanjeet Kumar sustained a bullet injury above his left chest just above the B.P. Jacket plate. Thereafter he could not move but he had posed 'strong resistance in front of the naxals so that they could not inflict any further causality of the Force.

Thus, CT(GD) Sanjeet Kumar displayed exemplary courage, bravery and gallant action by performing his duties with zeal and dedication and remained committed to his duties till his last breath and made supreme sacrifice in the service of the nation.

Recoveries made :-

1.	SLR rifle	-	01 No.
2.	Magazine	-	04 No.
3.	7.62 MM bal ammunition	-	69 Nos.

4.	5.56 MM INSAS magazine	-	01 No.
5.	5.56 MM INSAS Round empty cases	-	08 Nos.
6.	Motorola Walkie Talkie	-	01 No.
7.	Nokia mobile	-	01 No.
8.	Tablet vidiocn	-	01 No.
9.	Rs. 200/-		

In special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/10/2015.

A. RAI
Officer on Special Duty

MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS

New Delhi, the 13th April 2017

RESOLUTION

No. 11015/1/2013-OL Policy—Consequent upon Shri Vijay Goel, Member of Parliament (Rajya Sabha) sworn as Union State Minister and in partial modification of resolution of even number dated 17th February, 2015 regarding constitution of the Hindi Salahkar Samiti of the Ministry of Corporate Affairs, Shri Om Prakash Mathur, Member of Parliament (Rajya Sabha) has been nominated as Member of Hindi Salahkar Samiti in his place.

ORDER

Ordered that a copy of this resolution be sent to all Members of the Samiti, all the Ministries and Departments of the Government of India, President's Secretariat, Vice-President's Secretariat, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Lok/Rajya Sabha Secretariat, NitiAayog, Parliamentary Committee on Official Language, Comptroller and Auditor General of India, Accountant General, Central Revenues, New Delhi and all State Governments and Union Territory Administrations.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information of the public.

A. ASHOLI CHALAI
Jt. Secy.

DEPARTMENT OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH

(COUNCIL OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH)

New Delhi-110001, the 23rd March 2017

No. 1/3/2013-PD—It is notified for general information that for the purposes of the Societies Registration Act (XXI of 1860), the Governing Body of the Council of Scientific & Industrial Research has been reconstituted for a period of three years with effect from 06th January, 2017 to 05th January, 2020 and shall consist of the following:—

Sl. No.	Name, Designation and Address	Status
01	Director General (Dr. Girish Sahni) Council of Scientific & Industrial Research (CSIR) Anusandhan Bhawan 2, Rafi Marg, New Delhi - 110 001.	Chairman (Ex- officio)
02	Secretary (Expenditure) (Shri Ashok Lavasa) Ministry of Finance North Block, New Delhi - 110 001.	Member- Finance (Ex- officio)
03	Dr. (Mrs.) Madhu Dikshit Director CSIR - Central Drug Research Institute Sector- 10, Jankipuram Extension, Sitapur Road Lucknow - 226 031.	Member

04	Dr. Rakesh K. Mishra Director CSIR - Centre for Cellular and Molecular Biology Uppal Road, Hyderabad - 500 007.	Member
05	Shri Dilip Shanghvi Managing Director Sun Pharmaceutical Industrial Limited SUN HOUSE, CTS No. 201- B/1 Western Express Highway, Goregaon (E), Mumbai - 400 063.	Member
06	Shri Dinesh K. Sarraf Chairman and Managing Director Oil and Natural Gas Corporation Limited 5, Nelson Mandela Marg, Vasant Kunj, New Delhi - 110 070.	Member
07	Prof. M.R. Satyanarayana Rao Professor Chromatin Biology Laboratory Molecular Biology and Genetics Unit (MBGU) Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research (JNCASR), Jakkur Bengaluru - 560 064.	Member
08	Prof. Srikumar Banerjee, Homi Bhabha Chair Professor Bhabha Atomic Research Centre, (BARC) and (Chancellor, Central University of Kashmir, Srinagar, J&K) Anusaktinagar, Mumbai - 400 094.	Member
09	Dr. Arun Kumar Grover Vice Chancellor Punjab University, Chandigarh - 160 014.	Member
10	Secretary (Prof. Ashutosh Sharma) Department of Science and Technology (DST) Technology Bhawan New Mehrauli Road, New Delhi- 100 016.	Member
11	Secretary (Dr. S Christopher) Department of Defence Research and Development (DDR) and Chairman, Defence Research and Development Organisation (DRDO) Ministry of Defence New Delhi – 110 001.	Member

K. R. VAIDHEESWARAN
Jt. Secy. (Administration)

MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE
(DEPARTMENT OF AGRICULTURE, COOPERATION & FARMERS WELFARE)

New Delhi, the 13th April 2017

No.8-65/2017-PP.II—In partial modification of Government of India, Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, Department of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare Notification No.8-97/91-PP.I dated 26.11.1993, as amended from time to time, it is hereby notified for general information that the following entries shall be included by way of addition or replacement under the relevant heads specifying officers, by designation, who are authorized to inspect, fumigate or

disinfect and grant phytosanitary certificates in respect of plants and plant materials intended for export to other countries, which require such certificates:

I. Central Government

- (lix) The Officer-in-Charge,
Plant Quarantine Station,
Port Blair (Andaman & Nicobar Islands)
[Code No. 'C' (PPQS) 1 (59)]
- (lx) The Officer-in-Charge,
Plant Quarantine Station,
Guntur (Andhra Pradesh)
[Code No. 'C' (PPQS) 1 (60)]

Note: The original notification was issued by Department of Agriculture & Cooperation vide notification no. 8-97/91-PP.I dated 26.11.1993 and subsequently modified vide notification no. 8-97/91-PP.I dated 25.11.97, notification no. 8-70/98-PP.I dated 30.09.1999, notification no. 8-86/2000-PP.I dated 06.11.2001, notification no. 8-86/2000-PP.I dated 06.05.2002, notification no. 8-86/2000-PP.I dated 30.05.2002, notification no. 8-33/2003-PP.I dated 7.6.2004, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 11.05.05, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 20.06.05, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 8.12.05, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 9.1.06, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 26th December, 2011, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 30th January, 2013, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 6th July, 2015, notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 21st June, 2016 and notification no. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 12th January, 2017.

ASHWANI KUMAR
Jt. Secy.

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय, एन.आई.टी. फरीदाबाद में अपलोड
एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा ई-प्रकाशित, 2017
UPLOADED BY DIRECTORATE OF PRINTING AT GOVERNMENT OF INDIA PRESS, N.I.T.
FARIDABAD AND E-PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2017

www.dop.nic.in